कौरवी

लोक कला संस्कृति



संस्कृति निदेशालय

कौरवी

लोक कला संस्कृति

लेखक
श्री सुरेन्द्र कौशिक

सस्कृति निदेशालय उत्तर प्रदेश
1999

सम्पादक **उमा वर्मा**
निदेशक सस्कृति निदेशालय उत्तर प्रदेश

सहसम्पादक श्रीमती अनुराधा गोयल
डा० वीना विद्यार्थी

आवरण जम्बू द्वीप (जैन तीर्थ)
हस्तिनापुर

मुद्रक
प्रिन्टआर्ट आफसेट
33 कैन्ट रोड लखनऊ
दूरभाष 219026

आमुख

किसी भी देश के प्रत्येक क्षेत्र की कुछ अपनी भौगोलिक सरचना होती है जिससे वहा के निवासियो की रहन–सहन जीविका और सामाजिक व्यवस्था प्रभावित होती है और इन्ही सन्दर्भो के ब्रीच फिर उस समाज की निजी सस्कृति आखे खोलती है। सस्कृति ही मानवता की पहचान होती है जो उसे अन्य प्राणियो से अलग विशिष्टता प्रदान करती है।

सस्कृति का साम्राज्य बडा विस्तृत है इसके अन्तर्गत किसी इलाके की जीवन शैली धार्मिक आस्थाए तीज–त्योहार उत्सव मेले लोक–कलाए लोक–नृत्य लोकगीत–सगीत आदि सभी प्रकरण समाहित होते है। यही लोक सस्कार उसकी धरती की सासे है जिससे कि वहा के वासी निवासी सुख सन्तोष के साथ जीते है तथा औरो मे अलग से पहचान लिए जाते है।

*उत्तर प्रदेश सस्कृति निदेशालय द्वारा निर्धारित योजना के आधार पर इस पूरे प्रदेश के विभिन्न सास्कृतिक क्षेत्रो जैसे अवध बुन्देलखण्ड ब्रज कौरवी रुहेलखण्ड गढवाल कुमाऊ भोजपुरी का लोक सस्कृति सम्बन्धी सम्पूर्ण सर्वेक्षण कराया गया। इसी निर्धारित स्कीम के अन्तर्गत कौरवी क्षेत्र के नामित विशेषज्ञ श्री सुरेन्द्र कौशिक जी (निदेशक मुक्ताकाश सस्था सुभाष नगर मेरठ) ने कौरवी सस्कृति का सर्वागीण सर्वेक्षण किया और उनकी वही सर्वेक्षण रिपोर्ट सस्कृति विभाग द्वारा प्रकाशित **कौरवी लोक कला सस्कृति’** नामक ग्रन्थ के रूप मे अब आपके सामने है।*

कौरवी सस्कृति का क्षेत्र कुरु प्रदेश महाभारत काल मे तो सभ्यता का सिरमौर था जिसकी राजधानी हस्तिनापुर थी। कौरव–पाण्डवो का यह नगर एक प्रसिद्ध जैन तीर्थ भी रहा है। कौरवी क्षेत्र मे ही सप्तपुरियो मे से एक हरिद्वार (मायावती) भी है मुजफ्फरनगर का शुक्रताल सहारनपुर का शाकम्भरी देवी मन्दिर गाजियाबाद का गढमुक्तेश्वर बुलन्दशहर का कर्णवास बिजनौर का कण्व आश्रम विदुरकुटी आदि हमारी गौरवशाली सस्कृति के साक्षी है। शाहपीर का मकबरा और सरधना (मेरठ) का बेगम समरू का गिरजाघर दर्शनीय स्थल है। सन 1857 मे स्वतत्रता सग्राम का सूत्रपात मेरठ छावनी से प्रारभ हुआ था जहा मगल पाण्डे स्मारक है।

हरिद्वार का कुभपर्व गढमुक्तेश्वर का कार्तिक स्नान और मेरठ की नौचन्दी पर्यटको एव श्रद्धालुओ के आकर्षक विषय रहे है। लोकमत्र के लिए खयाल ढोला स्वाग और साझी यहा की प्रमुख विधाए है। आपसी मेलजोल के साथ सम्पन्न होने वाले अनेक पर्व मेले गीत सगीत तथा उद्योग यहा की सास्कृतिक विशेषता के परिचायक है।

मेरा मानना है कि इस कौरवी–अचल का लोक जीवन जानने मे तथा कौरवी लोक सस्कृति के सरक्षण की दिशा मे यह कौरवी लोक सस्कृति’ ग्रन्थ अपनी अच्छी उपयोगिता प्रस्तुत करेगा।

उमा वर्मा
निदेशक
सस्कृति निदेशालय उ०प्र०

अनुक्रमणिका

मेरठ

मयराष्ट्र जनपद के प्रमुख नगर मेरठ का प्राचीन नाम मयदन्त – का – खेडा था। लगभग 1980 ईसा पूर्व मे यह मय दानव की राजधानी थी। इसी मय की पुत्री मन्दोदरी रावण की पत्नी थी। मन्दोदरी आखेट मे ही नही अपितु रण विद्या मे भी पारगत थी। उस समय इस क्षेत्र की सभ्यता अति विकसित रही है जिसे मय–सभ्यता का नाम दिया जा सकता है। इस सभ्यता का जनक मय वास्तु कला का महान विशेषज्ञ एव कुशल शिल्पी था। जनश्रुति के अनुसार जहॉ आज भैसाली का मैदान है वहॉ मय के समय मे सती सरोवर था जिसमे मन्दोदरी स्नान करके पश्चिमी तट पर स्थित विलवेश्वर महादेव के मन्दिर मे पूजा करने जाया करती थी।

मेरठ जनपद मे प्राचीन काल का सूरज कुड कुरू प्रदेश का एकमात्र सरस्वती मन्दिर तथा शाहपीर साहिब का मकबरा स्थित है। सन 1857 का स्वतत्रता सग्राम औघडनाथ मन्दिर से ही प्रारम्भ हुआ था। शहीद स्मारक एव मगल पाडे स्मारक वर्तमान काल मे निर्मित किये गये है।

जनपद के अन्तर्गत अन्य स्थानो मे कौरव पाडवो की राजधानी तथा जैन सम्प्रदाय के 23वे तीर्थकर का मदिर जम्बुद्वीप हस्तिनापुर मे है। श्रृगी ऋषि का आश्रम परीक्षितगढ है। रावण के भाई खर और दूषण का बसाया हुआ खरखोदा कौरव पाण्डवो की धनुर्विद्या का परीक्षा स्थल पूठ है। दुर्योधन ने पाण्डवो को नष्ट करने के लिए बरनावा' मे ही लाक्षागृह बनवाया था। भगवान परशुराम जी द्वारा निर्मित पुरा' मे शिव मदिर है जहॉ लाखो की सख्या मे कॉवडिये बम बम भोले का घोष करते हुए पुरा महादेव पर जल चढाते है। महर्षि बाल्मीकि का आश्रम जहॉ रामायण लिखी गई बालानी' और ऋषि विश्वामित्र और परशुराम की तपोभूमि गगौल भी इसी जनपद के अन्तर्गत आते हैं। समरू सहाब की बेगम द्वारा निर्मित सुन्दर गिरजाघर 'सरधना' मे स्थित है।

गाजियाबाद

वजीर गाजिउदीन ने सन 1740 मे गाजियाबाद बसाया था। इसका प्राचीन नाम गाजिउदीन नगर था। अग्रेजी राज्य काल मे रेलवे लाइन पडने के बाद इसका सक्षिप्त नाम गाजियाबाद प्रसिद्ध हो गया। पहले गाजियाबाद मेरठ जनपद का ही हिस्सा रहा है। प्रशासनिक दृष्टि से 14 नवम्बर 1976 को मेरठ एव गाजियाबाद दो अलग–अलग जनपद बना दिये गये। गाजियाबाद और हापुड तहसील तथा बुलन्दशहर जनपद का कुछ भाग मिलाकर गाजियाबाद जनपद का निर्माण हुआ है। गाजियाबाद जहॉ एक ओर औद्योगिक नगर है वहॉ दूसरी ओर सास्कृतिक विरासत मे भी घनी है। यहॉ दूधेश्वर नाम का प्राचीन मदिर है। 1857 के सग्राम मे यहॉ भारतीयो ने 2 लडाइयॉ जीती थी।

यहॉ भारत प्रसिद्ध तीर्थ स्थान गढमुक्तेश्वर विद्यमान है। यमुना के इस पार शाहदरा से 6 मील दूर उत्तर की ओर लोनी गॉव है। सस्कृत के लवण शब्द का ही अपभ्रश लोनी है। कहते है यह नमक के क्षेत्र का मध्य भाग है। इस स्थान का सम्बन्ध पृथ्वीराज से जोडा जाता है। कुछ विद्वानो का मत है कि इसे शाहबुद्दीन गौरी ने स्थापित किया था। पृथ्वी राज के किले के खण्डहर अभी भी यहॉ विद्यमान है। यहॉ राजा सबरन द्वारा निर्मित किले के ध्वसावशेष भी है। कुछ लोग इसे लवणासुर का किला भी कहते है।

ग्राम दतियाना' मे एक प्राचीन मदिर है जहॉ प्राचीन काल के चित्र अभी भी विद्यमान है। 'सीकरी मे शीतला देवी का मदिर स्थापित है। गुर्जरो की राजधानी दादरी मे प्राचीन किले जेल कचहरी तहखाने तालाब आदि के खडहर आज भी विद्यमान हैं। कहते है यहॉ का विसरख' रावण के पिता विश्रवा मुनि का आश्रम रहा है। रावण का जन्म यही हुआ था। कौरव पाण्डवो की धनुर्विद्या की परीक्षा यहॉ गगा तट पर निर्मित तीर्थ स्थान पूठ मे हुई थी। मोदी नगर मे वर्तमान युग मे निर्मित विशाल एव आकर्षक मदिर स्थापित है।

मुजफ्फरनगर

मुजफ्फरनगर पहले सरवर की जायदाद के नाम से जाना जाता था। मुगल सम्राट शाहजहॉ ने 1633 ई० मे यह जागीर और 'खाने जहॉ' की पदवी सैय्यद मुजफ्फर खॉ की सेवा मे प्रसन्न होकर दी थी। सैय्यद मुजफ्फर खॉ और उनके बेटे सैय्यद मन्सूर खॉ ने एक कस्बे की नीव डाली और उसका नाम मुजफ्फरनगर रखा। यह जनपद तो अग्रेजो के शासन काल मे ही बना है।

यहॉ प्रसिद्ध तीर्थ स्थल 'शुक्रताल' है जहॉ राजा परीक्षित को श्री शुकदेव जी ने श्रीमद्भागवद की कथा सुनाई थी। 'कैराना' तथा कॉधला' को पाण्डवो के बडे भाई कर्ण ने स्थापित किया था। शास्त्रीय सगीत की शैली किराना घराना' का विकास कैराना से ही हुआ है ऐसा विश्वास किया जाता है। वर्तमान थाना भवन' का प्राचीन काल मे देवी थान नाम रहा है।

शेरो' (शाहपुर ब्लाक) मे शोरो शाह का मजार है और खेडा मस्तान' मे मस्तान शाह का मजार है। 'जडौदा' मे मरहठो द्वारा निर्मित प्राचीन किले के खण्डहर आज भी देखे जा सकते है। बघरा' मे अकबर बादशाह के पुत्र सलीम का हकीम रहा करता था। मलीरा' मुगल कालीन 52 दरी के पुल के लिए आज भी विख्यात है।

तहसील कैराना मे शामली का नाम पहले मुहम्मदपुर था। जहॉगीर ने अपने राज्यकाल मे अपने हकीम मुकरब अली खॉ को तोहफे के रूप मे दे दिया था। हकीम

सहाब के एक अनुयायी श्याम नामक सेठ ने यहॉ बाजार बनवाया जो आज भी मण्डी के नाम से प्रसिद्ध है। कालान्तर मे इन्ही श्याम के नाम पर श्यामली जो बाद मे शामली के नाम से प्रसिद्ध हुआ। यह भी कहा जाता है कि श्यामली नामक वेश्या के नाम पर 'शामली नाम पडा है।

बुलन्दशहर

बुलन्दशहर मे गगा और यमुना पावन नदियॉ कल कल करती प्रवाहित होती है। आज से 40 50 वर्ष पूर्व एक विशाल सरोवर था। ऐसा कहा जाता है कि इसी सरोवर के किनारे महाभारत काल मे पाण्डवो के बडे भाई युधिष्ठिर का यक्ष से सवाद हुआ था। यक्ष ने प्रसन्न होकर अपने ही शाप द्वारा पाषाण बने युधिष्ठिर के चारो भ्राताओ को शाप से मुक्त कर दिया था। पहले स्त्रियॉ यहॉ विवाह के मोहर जल मे सिलाने आती थी। निकट ही मुगल कालीन शाही जौहरी बाजार का स्थल भी कहा जाता है। कुछ साल पहले वर्षा के समय यहॉ लोगो को कुछ मणियॉ भी प्राप्त हुई थी। वर्तमान समय मे इस स्थान पर रोडवेज का बस अडडा है।

कहा जाता है कि बुलन्दशहर को तोमर वशीय परमाल ने बसाया था और इसका नाम बनछटी रखा था। बनछटी का अर्थ एक ऐसा स्थान जो वन को काटकर प्राप्त किया गया हो। वर्तमान नगर के पश्चिम दिशा की ओर स्थित एक बडा टीला आज भी इस बस्ती का सूचक है। कालान्तर मे इसका नाम अहिवरन पड गया। सम्भवत यह नाग जाति का गढ माना जाता था। डोर राणाओ के शासन काल मे इसे ऊँचा नगर कहने लगे। बाद मे मुस्लिम राज्य काल मे इसी का फारसी रूपान्तर बुलन्दशहर पड गया।

यहॉ की तहसील अनूपशहर मे अहार ग्राम है। कहते है यहॉ जनमेजय ने नाग यज्ञ किया था। अहि+हर अर्थात् सर्पो का विनाश या हरण किया था जिससे इसका नाम अहरा' पड गया। सिकन्दर लोदी ने 450 वर्ष पूर्व 'शिकार गाह' का निर्माण किया था। अहार' मे ही श्रीकृष्ण भगवान ने रुकमणि का अपहरण किया था जिसके कारण वर्तमान शिकारपुर नाम पडा है। दनकौर मे गुरू द्रोणाचार्य का मन्दिर उनकी तपोभूमि की याद दिलाता है।

'कर्णवास महाभारत काल के राजा कर्ण की दान स्थली है जहॉ कर्ण प्रतिदिन सवा मन सोना दान करते थे ऐसी किवदन्ती है। रीतिकाल के जाने–माने हिन्दी कवि सेनापति की जन्म स्थली का गौरव यहॉ के अनूपशहर को है। जावल ऋषि का आश्रम 'जेवर नगर के खादर की शोभा बढा रहा है।

बिजनौर

गगा तथा मालिनी नदी के सगम पर स्थित रावली के निकट कण्व आश्रम' के अवशेष बिजनौर मे आज भी 'कालिदास कृत अभिज्ञान–शाकुतलम की याद दिलाते है। दुष्यन्त और शकुन्तला का प्रणय–विवाह और उनकी महान सन्तान भरत जिनके नाम पर इस देश का नाम भारत पडा है का जन्म इसी स्थान से सबधित कहे जाते हैं। चान्दपुर के निकट बास्टा ग्राम मे 'सीता बनी' मे लका से लौटने के बाद सीता जी का शुद्धिकरण किया गया था। किवदती है कि मन्दिर स्थल पर ही धरती फटी थी जिसमे सीता जी समा गई थी।

महाभारत काल मे भारत के उत्तरी पश्चिम प्रदेश मे वीर शासक बेन ने गगा नदी के बॉये किनारे पर 'बेन नगर' की नींव डाली जो शनै शनै बिजनौर नाम से परिवर्तित हो गया। अनेक परिवर्तनो के बाद सन 1837 मे यह जनपद बिजनौर के नाम से जाना जाने लगा।

महाभारत काल के मूर्धन्य विद्वान विदुर का पवित्र आश्रम 'विदुर कुटी ग्राम दारा नगर गज जहानाबाद मे नवाब अजाम अली का मजार पाडवो की सैनिक छावनी सेन्दार जाफरा के निकट मयूर ध्वज दुर्ग जिसे भगवान कृष्ण के समकालीन दानी सम्राट मयूर ध्वज ने बनाया था। 18वी शताब्दी का नजीबुदौला का किला बिजनौर जनपद मे ही है।

इसके अतिरिक्त इसी जनपद की माटी पर बास्टा ग्राम मे अकबर के दो नवरत्न अब्दुल फजल तथा फैजी का जन्म स्थान है। मडावर मे मुशी शाहमत अली का महल है। कहते हैं मुशी जी इग्लैण्ड की महारानी विक्टोरिया के उर्दू तथा फारसी के शिक्षक रहे है गुरु दक्षिणा मे उन्हे यह महल मिला था। शेर कोट के ऐतिहासिक मन्दिर आदि के ध्वशावशेष जनपद बिजनौर के गौरवशाली इतिहास के साक्षी हैं।

सहारनपुर

अपनी काष्ठकला के लिए विश्व प्रसिद्ध गगा जमुना के दोआबे पर बसे जनपद सहारनपुर का इतिहास अत्यन्त प्राचीन है। यद्यपि सहारनपुर को अपना वर्तमान नाम मुगल सम्राट अकबर के शासनकाल मे मिला परन्तु ईसा से 2000 वर्ष पूर्व से जनपद का सुसम्बद्ध इतिहास मिलता है।

सहारनपुर की वर्तमान स्थिति से उसके अतीत का अनुमान नही लगाया जा सकता। उत्तर वैदिक काल मे गगा जमुना के मध्य का यह क्षेत्र उशी नगर कहलाता था। इस प्रदेश पर कुरूवश का राज्य स्थापित हो जाने पर यह प्रदेश कुरू प्रदेश का भाग हो गया जो क्रमश कुरू जागल और ब्रह्मर्षि प्रदेश कहलाने लगा।

गुप्त राज्य के पश्चात से हर्ष के उदय तक सहारनपुर मध्य प्रदेश के उत्तरी भाग मे स्थित था। हर्ष के समय मे यह शत्रुघ्न जनपद के अन्तर्गत था। किवदन्ती है कि यहा एक सूफी सन्त शाह हारून आकर बसे और उन्ही के नाम पर इस जनपद का नाम सहारनपुर पडा। परन्तु इस किवदन्ती की पुष्टि किन्ही ऐतिहासिक साक्ष्यो से नही होती है।

वस्तुत अकबर के शासनकाल मे सहारनपुर की जागीर साह रणबीर सिह को दी गयी और उन्होने ही सहारनपुर शहर बसाया। अकबर ने इसे अपनी सरकार का मुख्यालय भी बनाया और तभी से यह जनपद सहारनपुर के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

सहारनपुर मे बाबा लाल दास जी का बाडे का शिव मदिर एव भूतेश्वर का प्राचीन मदिर देखने योग्य है। कैलाशपुर मे मौ० नईम खा सहाब के महल और बादशाही बाग मे शाहजहा द्वारा निर्मित महलो के खण्डहार आज भी देखने लायक हैं। गगोह राजगग द्वारा बसाया हुआ है जहा शाह अब्दुल नद्दूस का मजार भी है।

शिवालिक पर्वत की तलहटी मे शाकुम्भरी देवी का एव प्राचीन शिव मदिर है। कहते हैं कि एक बार जब अकाल पड गया था तो देवी ने आकाश से साग–सब्जियाँ बरसायी थी और राक्षसो का वध किया था। जैतपुर के निकट सम्राट अशोक के शिला लेख भी ऐतिहासिक धरोहर है। बेहट का प्राचीन नाम बरहुट (बरगद) था जो सम्राट अशोक के समय मे बसाया गया था।

आभानेनपुर की झील अपनी रमणीयता के लिये प्रसिद्ध है तो मोहण्ड के बीहड जगलो मे लोग शिकार खेलने जाते हैं। देवबन्द मे दारूल अलूम विश्वविद्यालय है जहाँ विदेशो से मुसलमान उर्दू फारसी पढने आते हैं। सोना अर्जुनपुर मे बाबा सिद्ध जी की समाधि और कुण्ड है। वायु विकार के रोगी कुण्ड के पानी से इलाज के लिए दूर–दूर से आते हैं।

हरिद्वार

भारतीय उपमहाद्वीप की सबसे लम्बी और लगातार बहने वाली नदी गगा के दाहिने किनारे पर बसा हुआ तीर्थनगर हरिद्वार अपनी मायापुर और कनखल बस्तियो की प्राचीनता और पुरातात्विक पहचान के कारण गेरूए रग की सस्कृति – सभ्यता वाला नगर माना जाता रहा है। इस सभ्यता का कालक्रम ईसा पूर्व 1200 से 1700 बरसो के बीच माना जाता है।

गगा के उद्गम स्थल गोमुख – गगोत्री से करीब तीन सौ किलोमीटर नीचे समतल मे गगा की धारा के किनारे बसा आज का हरिद्वार या हरद्वार जहाँ एक ओर उत्तराखड के चार पवित्र धामो के लिए प्रवेशद्वार है वही पुराणो मे चर्चित गगा द्वार के नाम से प्रख्यात यह नगर देवनदी गगा के लिए पहले – पहल समतल भूमि प्रदान करता है। शिवालिक पर्वतमाला के छोर पर बिल्व पर्वत और नील पर्वत के मध्य लम्बाई मे बसा यह छोटा सा खूबसूरत नगर अपनी प्राकृतिक सुषमा मनोहारी गगातटो वहा होने वाली पूजा–आरतियो के सुन्दर नयनाभिराम दृश्यो शिवालिक का वन और पहाडो वाली प्राकृतिक विरासतो मदिरो आश्रमो और अखाडो के कारण न जाने कब से यायावरो घुमक्कडो तीर्थयात्रियो और गगा भक्तो को अपनी ओर आकर्षित करता रहा है। आज तो यह नगर जिला मुख्यालय का दर्जा प्राप्त एक ऐसा नगर बन गया है जो प्रगति और विकास की यात्रा मे देश के अन्य नगरो के साथ–साथ कदम से कदम मिलाकर चलने को तत्पर है।

लेकिन जहाँ पुरातत्वविदो ने पौने चार हजार बरस पहले भी मानव बस्ती होने के चिन्ह खोज लिए हैं उस हरिद्वार की प्रसिद्धि का एक महत्वपूर्ण कारण यहाँ हर छठे और बारहवे बरस लगने वाले अर्द्धकुम्भ और कुम्भ के मेले भी हैं जिनके कारण इस शहर को अब कुम्भनगर भी कहा जाने लगा है। ये विराट पर्व अपनी व्यापकता के कारण जहा विश्व के सबसे बडे ऐसे अवसर होते हैं जहाँ लोग जुटते हैं और धर्म–अध्यात्म की चर्चा के साथ–साथ सामूहिक गगा–स्नान का पुण्य लूटते हैं। अनादि काल से चले आ रहे इन महामेलो के कारण भी हरिद्वार को भारतीय जनमानस मे एक विशेष स्थान मिला हुआ है।

हरिद्वार के इतिहास मे उल्लेखो से भी पहले से भारतीय पुराकथाओ पुराणो और विशिष्ट धार्मिक साहित्य मे इस नगर का काफी कुछ उल्लेख मिलना इस नगर को पुरातन दिव्यता से भी आलोकित करता है। हरिद्वार का नाम इसके कपिलाश्रम के कारण पहले–पहल तब आता है जब सूर्यवशी राजा सगर के अश्वमेध यज्ञ और अवसर पर छोडे गए यज्ञाश्व को कपिल मुनि के आश्रम मे बाधे जाने का उल्लेख मिलता है। भगवान श्री रामचन्द्र के

पूर्वज और इक्ष्वाकु के राजा सगर ने अश्वमेध यज्ञ के बाद जब यज्ञाश्व को दिग्विजय के लिए छोडा तो उसके साथ अपने साठ हजार पुत्र भी यज्ञाश्व की सुरक्षा के लिए भेजे। उधर महाराज सगर के अश्ववेध से घबराए देवराज इन्द्र ने यज्ञाश्व को चुराकर उसे हरिद्वार क्षेत्र मे स्थित कपिल मुनि के आश्रम मे बॉध दिया। जब सगर पुत्रो को यज्ञाश्व की चोरी की भनक मिली तो उन्होने उसकी तलाश आरभ की। ढूँढते हुए जब सगरपुत्र कपिलाश्रम पहुँचे तो वहॉ घोडा बॅधा देखकर उन्होने मुनि को बुरा–भला कहना शुरू कर दिया। सारी घटना से अनभिज्ञ मुनि ने जब ऑखे खोली तो उन्हे सगर पुत्रो की विवेकहीनता अखर गई और उन्होने उन सबको शापाग्नि से भस्म कर दिया।

कालान्तर मे सगर के वशज महाराज भगीरथ ने बडी तपस्या करके गगा को धरती पर लाने का भारी उपकम किया तब गगा अपने उद्गम गोमुख से निकलकर ढाई हजार किलोमीटर का सफर पूरा करती हुई गगा सागर तक पहुँची। रास्ते मे हरिद्वार मे गगा ने अपने स्पर्श से सगरपुत्रो को सद्गति देकर मोक्ष प्रदान किया। तब से आज तक हरिद्वार मे गगाजल मे अपने मृत परिजनो के अस्थि–अवशेष प्रवाहित करने की परम्परा आस्तिक हिन्दू समाज मे चली आ रही है।

रामायण काल मे श्री राम रावण को मारने के बाद ब्रह्म हत्या के पाप का प्रक्षालन करने के लिए अपने भाई लक्ष्मण और अन्य परिजनो के साथ हरिद्वार आए थे। उन्होने यहॉ गगास्नान करने के बाद आगे उत्तराखड के देवप्रयाग मे तपस्या की थी।

हरिद्वार की उपनगरी कनखल तो भारतीय पुराकथाओ के अनुसार प्रजापति दक्ष की राजधानी रही है। दक्षपुत्री सती ने पिता की इच्छा के विपरीत भगवान शिव से प्रेम विवाह कर लिया था। इसलिए दक्ष अपनी पुत्री और जामाता दोनो से ही नाराज रहा करते थे। एक बार जब दक्ष ने अपने यहा विराट यज्ञ का आयोजन किया तो उसमे भगवान शिव को उन्होने जानबूझकर न्यौता नही दिया। उधर जब सती को इस यज्ञ की जानकारी मिली तो सती ने शिव से यज्ञ मे चलने को कहा। शिव के मना करने पर सती ने जिद पकड ती। तब अनमने भाव से भगवान शिव ने उन्हे नन्दीगण के साथ भेज दिया। पर बिना न्यौता मिले शिव को स्वय वहॉ जाना बिलकुल नही रुचा। उधर कनखल मे पहुँचने पर सती ने देखा कि देवादिदेव महादेव के लिए उनके पिता ने न तो स्थान रखा है और न ही यज्ञभाग ही सुरक्षित रखा है। यह बात सती को अखर गई। सती को देखकर दक्ष ने शिव को बुरा–भला भी कहना शुरू कर दिया। इस अपमान से व्याकुल सती ने योगाग्नि से अपना शरीर जला लिया और प्राणोत्सर्ग कर दिया। बाद मे शिवगण वीरभद्र शिव ने सारा दक्ष यज्ञ विध्वस किया और दक्ष का सिर काटकर यज्ञकुण्ड मे फेक दिया। सारा समाचार मिलने पर जब वहा शिव आए तो उन्होने अपनी सास की प्रार्थना पर दक्ष के धड

पर बकरे का सिर लगाकर उसे तो जीवन दे दिया पर वे स्वय सती का अधजला शव देखकर अत्यन्त उद्विग्न हो गए। उन्होने शव को कन्धे पर डाला और दिशाओ मे भ्रमण करने लगे। शिव के क्रोध से दसो–दिशाओ को बचाने के उद्देश्य से महाविष्णु ने अपने सुदर्शन चक्र से सती के शव के टुकडे–टुकडे करके यहा–वहा बिखेर दिए। हरिद्वार मे सती के शव का ह्रदय और नाभिस्थल जहाॅ गिरा वह स्थान आज भी शहर के बीचो बीच मायादेवी मदिर के रूप मे प्रतिष्ठित है। उधर पुनर्जीवित प्रजापति दक्ष ने यज्ञस्थल पर शिवलिग की स्थापना करके अपनी भूल का प्रायश्चित किया। वह स्थान आज भी कनखल मे दक्षेश्वर महादेव के नाम से विख्यात है।

महाभारत काल की भी अनेक कथाएँ हरिद्वार से सबद्ध रही हैं। वीरवर भीष्म के दादा और महाराज शातनु के पिता महाराजा प्रतीप एक बार हरिद्वार मे गगातट पर बैठे ध्यानमग्न हो गए तो स्वय गगा ने रूपसी युवती का वेश धरकर उनकी दाॅयी गोदी मे बैठकर उनसे प्रणय याचना की। प्रतीप ने तब मुस्कराकर कहा कि दाॅयी गोदी तो पुत्रो और पुत्र वधुओ के बैठने की होती है अत मै तुम्हारा प्रणय निवेदन स्वीकार करने मे असमर्थ हूँ। तुम चाहो तो मेरी पुत्रवधू बन सकती हो । बाद मे कहते है कि गगा ने शातनु से विवाह करके भीष्म जैसे विश्वविख्यात पुत्र को जन्म दिया।

कौरव पाण्डवो के गुरू द्रोणाचार्य की माता घृताची महर्षि भारद्वाज को और नागराज कौरव्य की बेटी परमरूपा उलूपी वीरवर अर्जुन को यही हरिद्वार मे मिली थी। दूसरे शब्दो मे कहा जाए द्रोणाचार्य और अर्जुनपुत्र इरावत की ननिहाल यही हरिद्वार रहा है। परम वीर भीमसेन के घोडे की ठोकर से बना भीमगोडा कुण्ड हरिद्वार को भीम से भी जोडता है। यह उल्लेख मिलते हैं कि मैत्रेय ऋषि को विदुर ने 'महाभारत' हरिद्वार मे ही सुनाया था और यही देवर्षि नारद से उसे सप्तर्षियो ने सुना था। हरिद्वार का ब्रह्मकुण्ड महाराजा श्वेत की तपस्थली के रूप मे भी प्रसिद्ध है। यहाॅ के कुशावर्त घाट पर स्वय भगवान दत्तात्रय ने भी तपस्या की थी। हरिद्वार की उपनगरी कनखल मे सनत्कुमारो को सिद्धावस्था प्राप्त हुई थी। महाभारत के महायुद्ध के बाद बचे हुए प्रमुख योद्धा अपने पापो का प्रक्षालन करने के लिए हरिद्वार हो आए थे। यही धृतराष्ट्र गाधरी और विदुर ने योगाग्नि द्वारा अपने को शरीर बधन से मुक्त किया था।

उल्लेख मिलता है कि ईसा से एक हजार वर्ष पूर्व प्रथम जैन तीर्थकर भगवान आदिनाथ ने मायापुरी क्षेत्र मे जाकर तपस्या की थी। ईसा पूर्व 600 वर्ष के लगभग यह सारा क्षेत्र कुषाण तथा कौशलवशी राजाओ के अधीन रहा है। समीपस्थ कालसी मे अशोक स्तम्भ का होना बताता है कि यह सम्राट अशोक के साम्राज्य का भी हिस्सा रहा होगा।

ईसा पूर्व 57 वर्ष पूर्व महाराजा विक्रमादित्य का अवतिका मे सिहासनारोहण हुआ था। उनके बडे भाई श्रृगार नीति एव वैराग्य शतको जैसी अनुपम कृतियो के रचयिता महाराजा भर्तृहरि का भी हरिद्वार के साथ सबध रहा है। राजपाट छोडकर उन्होने अपने जीवन का उत्तरार्द्ध हरिद्वार मे ही बिताया था और यही रहकर नीतिशतक और वैराग्य शतक का प्रणयन किया था। उनकी मृत्यु के बाद कहते हैं राजा विक्रमादित्य ने ही हरिद्वार की हर की पौडी पर सबसे पहले सीढियॉ (पौडियॉ) बनवाई। इन भर्तृहरि की पौडियो' को ही कालान्तर मे हर की पौडी कहा जाने लगा। विक्रमादित्य के राजकवि कालीदास ने तो प्रसिद्ध महाकाव्य मेघदूत के पचासवे श्लोक मे कनखल का स्पष्ट उल्लेख किया है। वे अपने काव्य नायक को कहलवाते हैं

तस्माद्गच्छेरनुकनखलै शैलराजावतीर्णा जन्होकन्या सगरतनयास्वर्ग सोपान पक्तिम।
गौरी वक्त्रभृकुटि रचना या विहस्यैव फैने शम्भो केशग्रहणमकरोदिन्दु लग्नोर्महस्ता।।

ईसवी सन् 634 मे प्रसिद्ध चीनी यायावर ह्वेन त्साग अपनी भारत यात्रा के दौरान हरिद्वार भी आया था। उसने हरिद्वार को मो–यू–लो नाम से लिखा है। कर्निघम मोयूलो को मयूर या मयूरपुर बताते हुए कहता है कि हरिद्वार और उसके आसपास के जगलो मे भारी मात्रा मे मोरो के पाए जाने के कारण यह नाम भी सार्थक ही है।

तैमूर के इतिहासकार शर्फुदीन सन् 1398 ने हरिद्वार को काओपिल' या कुपिला' कहा है। कुछ लोग जहॉ इसे कपिलमुनि से जोडते हैं वही कर्निघम के अनुसार यह कोह–पैरी है। कोह का अर्थ पहाड होता है। उस काल की हर की पौडी पहाड की तलहटी मे एक छोटा कुण्ड मात्र रही होगी।

हरिद्वार मे अकबर की टकसाल होने का उल्लेख मिलता है। यह सोलहवी सदी की बात है। अबुल फजल लिखता है कि गगाजल की शुद्धता और पवित्रता से अकबर के रसोईघर मे कलमी शोरे के माध्यम से ठण्डा हुआ गगाजल ही प्रयुक्त होता था। यह गगा जल हरिद्वार से ही अकबर बडे–बडे घडो मे मगाया करता था।

मानसिह ने पुराने सकरे घाट को बनवाया था और गगा की धारा के मध्य एक अठकोणी स्तम्भ बनवाकर साधना–स्थल के रूप मे प्रयोग करने के लिए किसी साधु को ताम्रपत्र लिखकर दान दे दिया था। कालान्तर मे साधु और उसकी परम्परा वालो ने वहॉ छतरीनुमा स्थापत्यशैली मे श्रीगगा मदिर का निर्माण करवाया जो आज भी हर की पौडी के बीचोबीच आस्तिको की आस्था का केन्द्र बना हुआ है।

28 दिसम्बर 1998 को प्रदेश सरकार ने हरिद्वार को जिले का पूर्ण दर्जा देते हुए इसे सहारनपुर से अलग करके नवसृजित जिले मे रूडकी हरिद्वार के साथ एक नई लक्सर तहसील भी जोड दी।

कौरवी क्षेत्र के प्रमुख मेले

मेले अर्थात मेल मिलाप। जब किसी निश्चित तिथि एव समय पर लोग स्वत एकत्रित हो जाते हैं और इस सामूहिक मिलन के पार्श्व मे एक ओर धार्मिक पक्ष जुडा रहता है वहाँ दूसरी ओर व्यापार क्रय–विक्रय पारिवारिक सम्बन्धो को भी प्रगाढ किया जाता है। हमारे देश मे पैंठ या हाट मेले का प्रारम्भिक रूप है। यह सामयिक मेले प्राय धार्मिक उत्सवो कृत्यो परम्पराओ या मौसम से सम्बद्ध होते हैं। कुछ मेले जन सौहार्द के लिये तो कुछ व्यापारिक दृष्टिकोण से आयोजित किये जाते है। सास्कृतिक आदान–प्रदान के लिये भी मेले एक सशक्त माध्यम हैं। स्वस्थ मनोरजन तो प्राप्त होता ही है।

ईस्ट इण्डिया कम्पनी के शासन के बाद जब भारत को अग्रेजी राज्य मे सम्मिलित किया गया तो अग्रेज प्रशासको ने जहाँ प्राचीन मेले लगते थे प्राय उन्ही मेलो को नुमायश अथवा प्रदर्शनी का रूप दे दिया जिससे दूर दराज के लोग देश के अन्य उत्पाद को सुगमता से क्रय–विक्रय कर सके।

प्राय जन मानस इन मेलो मे सामूहिक रूप से बैलगाडी भैंसा बुग्गी इक्के घोड़ा तागा अथवा ट्रैक्टर ट्राली मे लोक गीत गाते हुए हर्षोल्लास से जाते हैं।

मेलो के अवसर पर दगल घुडदौड सर्कस झूले स्वाग नौटकी पशुओ एव कुटीर उत्पाद का क्रय–विक्रय आदि का अच्छा अवसर प्राप्त होता है। यहॉ तक कि लडके–लडकियो के विवाह सुगमता से तय हो जाते हैं।

नौचन्दी का मेला

जनपद मेरठ का सर्वाधिक प्रसिद्ध मेला नौचन्दी है। यह मेला वर्ष 1884 मे प्रारम्भ हुआ था। प्राचीन काल से ही इसके आयोजन का समय निर्धारित है। यह मेला होली के बाद एक रविवार छोडकर उससे अगले रविवार से लगता है।

मेला हिन्दू–मुस्लिम मे एकता का प्रतीक माना जाता है। यहॉ शक्ति का प्रतीक नवचण्डी मदिर है। नौचन्दी के समय मे ही नवरात्रि के व्रत भी चलते हैं। सडक के एक तरफ नवचण्डी का मदिर है तो दूसरी ओर हजरत वाले मियॉ की मजार। सूफी सन्त परम्परा के अनुसार मजार पर प्रत्येक वर्ष उर्स होता है और भक्तिपूर्ण कव्वालियॉ चलती हैं।

कुछ लोगो का मत है कि चण्डी की शक्ति नौ वाहिनी के रूप मे प्रगट हुई। उसी पर मेले का नाम नौचन्दी पडा। कुछ लोगो के विचार से मेरठ और टिहरी गढवाल ने



श्री औघडबाबा मदिर (प्रथम स्वतत्रता सग्राम
का सूत्र स्थान) मेरठ।



हिन्दुस्तान पाकिस्तान युद्ध मे भारत की
विजय का प्रतीक
(जनरल अरोडा द्वारा उदघाटित) औघडबाबा
मदिर परिसर मेरठ।





शहीद स्मारक मेरठ।



नवचण्डी मदिर (नौचन्दी) मेरठ।



बाले मियॉ का मजार (नौचन्दी मेला स्थल) मेरठ



मकबरा शाहपीर मेरठ।



शिव मदिर जगेठी सरधना।

कमल मदिर (जैन मदिर) हस्तिनापुर।



नरेन्द्र नगर स्थित चण्डी देवी मे नौ शक्तियॉ विराजमान है। एक किवदन्ती के अनुसार मय दानव की कन्या मन्दोदरी ने नवचण्डी के क्षेत्र मे चण्डी देवी का निर्माण कराकर नवरात्रि पूजन धार्मिक महोत्सव आरम्भ किया था।

हजरत वाले मिया सेयद वश के थे। सैयद सालार मसऊद गाजी नाम के यह व्यक्ति पहले सैनिक थे बाद मे सन्त हो गये। वह मेरठ आये और लम्बे समय तक मेरठ मे रहे। बाले मिया सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी के रण सेनानी थे। 11वी शताब्दी के आरम्भ मे नौचन्दी स्थल पर कभी भयकर युद्ध हुआ था जिसमे उनकी एक उगली कट गई थी। शारीरिक क्षति तो नही लेकिन मानसिक रूप से युद्ध की विभीषिकाओ से सतृस्त होकर फकीरी भेष धारण कर लिया था। इनका निधन बाराबकी मे हुआ था लेकिन इनके अनुयायियो ने इनका मजार मेरठ मे बनाया। यह भी कहा जाता है कि इनके मजार पर एक साधारण मकबरा और पास मे एक मस्जिद कुतबुद्दीन ऐबक ने निर्मित की है।

यह मेला प्राचीन काल मे एक दिन का आयोजित होता था। कालान्तर मे इसकी अवधि बढती गयी और वर्तमान समय मे एक मास का मेला होता है।

पहले अपूर्व प्रदर्शनी भी आयोजित होती थी। विख्यात नाटक कम्पनिया–एल्फ्रेड शालि वाहन तथा न्यू एल्फ्रेड यहा प्रदर्शन कर चुकी है। नौटकियो का भी नौचन्दी मेला गढ रहा है। उस जमाने की कलाकार चुन्नीबाई की अदाकारी को आज भी याद किया जाता है। बदले स्वरूप मे नौटकी आज भी देखी जा सकती है।

मेरठ गजेटियर के अनुसार इस नवचण्डी मन्दिर को सन 1194 मे कुतबुद्दीन ऐबक ने भग्न किया था तथा एक दरगाह का निर्माण कराया था। कालान्तर मे ग्वालियर की महारानी अहिल्याबाई ने इस मन्दिर का जीर्णोद्धार किया था।

गढमुक्तेश्वर का मेला

गाजियाबाद जनपद के गढमुक्तेश्वर मे गगा का मेला उत्तर भारत का प्रसिद्ध सास्कृतिक- मेला है। मेला कार्तिक सुदी अष्टमी से 10 दिन चक चलता है।

महाभारत के विनाशकारी युद्ध के पश्चात धर्मराज युधिष्ठर अर्जुन और कृष्ण के मन मे भारी नरसहार देखकर आत्मग्लानि हुई। दिवगत आत्माओ को कैसे शाति मिले और किस प्रकार मृत्यु सस्कार किया जाए इस समस्या पर भगवान कृष्ण की अध्यक्षता मे विचार विनिमय किया गया। सर्वसम्मति से निर्णय हुआ कि खाडवी वन मे भगवान परशुराम द्वारा स्थापित शिववल्लभपुर वर्तमान गढमुक्तेश्वर मे मुक्तेश्वर महादेव की पूजा यज्ञ

पतितपावनी गगा मे स्नान करने तथा पिण्डदान द्वारा इनकी आत्मा को शाति प्राप्त हो सकती है।

इस प्रकार कार्तिक शुक्ल अष्टमी को गऊ पूजन कर गगा तट पर स्नान करके एकादशी को सस्कार और पिण्डदान किया गया। यही देवोत्थान एकादशी कहलाई। एकादशी मे चतुर्दशी तक आत्माओ की शाति हेतु यज्ञ चतुर्दशी को यज्ञ समाप्त कर साय दीपदान द्वारा श्रद्धाजली अर्पित की गई। अगले दिन पूर्णिमा को गगा मे स्नान कर अर्चना तथा सत्यवृत कथा का आयोजन किया। अगले दिन प्रतिपदा को खिचडी आदि भोजन करके प्रस्थान किया। तभी से इस परम्परा का निर्वाह मेले मे किया जा रहा है।

इस मेले मे लाखो नर–नारी पूर्णिमा का प्रमुख स्नान करते है। कुभ मेले के बाद उत्तर भारत का यह सबसे बडा मेला है। इस मेले मे दूर–दूर से लोक कलाकार आते है अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं। लोक गीतो लोक नृत्यो एव लोक वाद्यो की ध्वनि वातावरण को सगीतमय कर देती है। मेले मे करोडो रुपये का व्यापार भी होता है। यहा गधो घोडो एव खच्चरो का भी विक्रय होता है।

शुक्रताल का मेला

जनपद मुजफ्फरनगर मे शुक्रताल पर कार्तिक पूर्णिमा के दिन प्रतिवर्ष गगा स्नान के लिए मेला आयोजित होता है।

इतिहास साक्षी है कि धनुर्धर अर्जुन के पौत्र वीर अभिमन्यु के पुत्र राजा परीक्षित एक दिन शिकार खेलते–खेलते जगल मे श्री शमीक ऋषि के आश्रम मे जल पीने की इच्छा से प्रवेश कर गये। वहा समाधिस्थ ऋषि शमीक द्वारा यथोचित आदर–सत्कार न हो पाने से राजा ने वहा पडे मृत सर्प को ऋषि के गले मे डाल दिया।

एक बार राजा परीक्षित ने अपने राज्य मे कलियुग को रहने के लिए पॉच स्थान दिये थे जिनमे एक स्वर्ण भी था। राजा शमीक ऋषि का अपमान करते समय स्वर्ण मुकुट धारण किये हुए थे अत कलयुगी बुद्धि ने ही शायद उनसे ऐसा अनर्थ कराया।

राजा के इस दुष्कृत्य को ऋषि पुत्र शमीक के पुत्र श्रृगी ने देखा तो क्रोधवश राजा को शाप दिया–कि आज से सातवे दिन मेरी प्रेरणा से तक्षक नाग उसे डस लेगा जिससे वह मर जायेगा।

राजभवन जाकर राजा ने अपना मुकुट उतारा तो उन्हे अपने दुष्कृत्य का आभास हुआ। तभी गौरमुख नामक शिष्य ने श्राप की जानकारी दी।

राजा ने अपना राज्य ज्येष्ट पुत्र जन्मेजय को सौपकर स्वय वैराग्य लेकर भागीरथी गगा के किनारे जगल मे विशाल वट वृक्ष की छाया मे सकल्प लेकर बैठ गये कि मृत्यु पर्यन्त यही निवास करूगा। दीर्घकाल के बाद व्यास नन्दन भगवान श्री शुक्रदेव जी वहा आये। इसके बाद जो भी सवाद वहा हुए वही सब श्रीमद्भागवत कथा का रूप है।

इस स्थान को प्रारम्भ मे शुक तीर्थ शुकतार और आज शुकताल के नाम से प्रचलित है। यहाँ लगभग 150 फिट ऊँची पहाडी पर स्थित पॉच हजार नब्बे वर्ष पुराना वट वृक्ष है। प्रभु का चमत्कार है कि इतनी लम्बी उम्र पाकर भी किसी भी वर्ष वट वृक्ष मे पतझड नही देखा। इस वृक्ष पर हमेशा शुक पक्षी ही निवास करते हैं अन्य पक्षी नही। इसी वृक्ष के नीचे श्री शुक्रदेव जी एव राजा परीक्षित की मूर्ति स्थापित है। यही 72 फिट ऊँची हनुमान जी की विशाल मूर्ति है जिस पर सात सौ करोड हस्तलिखित राम नाम है।

अतिशय क्षेत्र वहलना मेला

श्री दिगम्बर जैन मदिर अतिशय क्षेत्र वहलना तीर्थ स्थल बधुत्व की त्रिवेणी के साथ बढती धार्मिक एकता एव सौहार्द का प्रतीक बन गया है। इस पावन तीर्थ स्थल पर तेईसवे तीर्थकर भगवान पार्श्वनाथ की नौफन वाली प्रतिमा स्थित है।

आज का वहलना पहले कभी पारसनगर (बहरान नगर) के नाम से प्रसिद्ध था उस समय मुजफ्फरनगर भी नही बसा था। बहरान नगर का नाम ही बहलना पडा जिसमे एक प्राचीन किला है जो आज खण्डहर के रूपमे विद्यमान है। ईसा पूर्व लगभग साढे तीन सौ वर्ष पूर्व अफगान सम्राट शेरशाह सूरी ने साठ किलोमीटर लम्बे मार्ग का निर्माण कराया था। उसकी इच्छानुसार खतौली से जब किला नही दिखाई दिया तो बादशाह ने किला अपने सिपहसालार को दे दिया।

सिपहसालार ने पारस नगर मे चार मुख्य द्वार वाली एक गढी का निर्माण कराया जिसमे अब केवल एक ही अतीत का मूक साक्षी है। जीर्ण–शीर्ण गढी के करीब 60 फुट ऊँचे उस द्वार के भीतर अभी एक सैय्यद परिवार का वास है। किले मे आज भी गढी के निर्माता दीवान का मकबरा है जो जीर्ण अवस्था मे है।

जैन मन्दिर के बाहर उत्तर दिशा मे एक ऐसी पाण्डुक शिला है जो देखते ही शास्त्रो का स्मरण कराती है। इसी पाण्डुक शिला पर इन्द्र ने भगवान पार्श्वनाथ को स्नहवान कराया था। जैन समाज के मेले के समय पाण्डुक शिला पर स्थापित प्रतिमा पर विशेष वायुयान द्वारा पुष्प दृष्टि की जाती है। शिला पर विशाल कमल और कमल के ऊपर उससे भी अछूते तीर्थकर भगवान विराजे है जबकि नीचे दोनो ओर पक्तिबद्ध स्वर्ग के देव

श्री सागर जी विशाल कलशी मे जल भरकर नवजात शिशु पर डाल रहे है। श्रद्धालु यहॉ छत्र चढाते है।

मदिर के उत्तर की ओर पूज्य श्री 1008 मुनि बौद्धी सागर तथा मुनि सागर की समाधियॉ निर्मित है।

बिजनौर का कार्तिक मेला

विदुरकुटी का पौराणिक दृष्टि से पर्याप्त महत्व है। किवदन्ति है कि महाभारत काल मे सुप्रसिद्ध नीतिज्ञ महात्मा विदुर का आश्रम बिजनौर से लगभग 10 कि०मी० दूर पवित्र पावनी गगा के तट पर अवस्थित था। ऐसी मान्यता है कि भगवान कृष्ण जब हस्तिनापुर मे कौरवो को समझाने–बुझाने मे असफल रहे थे तो वे कौरवो के छप्पन भोगो को ठुकराकर गगा पार करके महात्मा विदुर के आश्रम मे आये थे और भोजन मे बथुये का साग खाया था।

महात्मा विदुर के आश्रम तथा प्राचीन मदिर का जीर्णोद्धार स्वतत्र भारत मे हुआ। भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्र प्रसाद ने सन 1960 मे विदुर कुटी पर महात्मा विदुर की प्रतिमा का अनावरण किया। विदुर आश्रम मे महात्मा विदुर के पद चिन्ह आज भी सगमरमर पर सुरक्षित है।

महात्मा विदुर के आश्रम के समीपस्थ ग्राम दारानगर के बारे मे किवदन्ति है कि जब महाभारत का युद्ध प्रारम्भ होने वाला था तब पाडवो और कौरवो तथा उनके सेनापतियो आदि ने महात्मा विदुर से प्रार्थना की कि वे उनकी पत्नियो तथा बच्चो को अपने यहॉ शरण दे दे इससे उनके परिवार युद्ध से सकुशल बच जायेगे। महात्मा विदुर ने यह अनुरोध स्वीकार कर लिया था। महात्मा विदुर के आश्रम मे स्थानाभाव था अत महिलाओ के लिए नये मकान बनाये गये और इस तरह एक पूरी बस्ती बन गई थी। यह बस्ती महिलाओ की थी। सभवत इसी कारण बाद मे इस बस्ती का नाम दारानगर पड गया। दारानगर आज भी एक गॉव है जिसमे प्राचीन भवनो के अवशेष अब भी बिखरे पडे है।

दारानगर से एक कि०मी० दूर गगा के किनारे अवस्थित गाव गज एक प्राचीन कस्बा है जिसका ऐतिहासिक महत्व है। इस गॉव की प्राचीनता के चिन्ह पग–पग पर बिखरे पडे है। प्राचीन काल मे बने भवनो के कुछ भाग आज भी शेष है।

यह गाव धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण गॉव है। इस गॉव के सामने ही प्रत्येक वर्ष कार्तिक पूर्णिमा का प्रसिद्ध मेला लगता है जिसमे लाखो श्रद्धालुजन सम्मिलित होकर गगा स्नान का पुण्य अर्जित करते है।

हरिद्वार – कुम्भ मेला

कुम्भ घट का पर्याय है और घट शरीर का जिसमे घट–घट व्यापी आत्मा का अमृत–रस व्याप्त रहता है। अत कुम्भ दर्शन आत्म दर्शन है। अवर्षण तथा दुर्भिक्ष को दूर करने वाला मगलकारी महात्माओ के सगम प्रच्छालन और पुण्य–प्रवर्धन अनुष्ठान और यज्ञ विश्व कल्याण के लिए समस्त दोषो को दूर करने वाला ही कुम्भ है।

हरिद्वार प्रयाग उज्जैन और नासिक मे चार कुम्भ–पर्व आयोजित होते हैं। हरिद्वार मे अर्ध कुम्भ लगता है।

देवापुर सग्राम मे अमृत मथन की कथा मे स्वय विष्णु मोहिनी रूप धारण करके असुरो को छल से पराजित करते हैं। इसी कक्षा को सर्वाधिक महत्ता प्राप्त है। इस अमृत मथन से 14 रत्न प्राप्त हुए थे। राष्ट्रकवि श्री मैथिलीशरण गुप्त ने इन 14 रत्नो का वर्णन इस प्रकार किया है–

निकले चौदह रत्न प्रथम सुरभी कल्याणी।
तब रभा छविमती चन्द्र शीतल सुखकारी।
घातक विषद प्रिय शख
बाजि गज धनु मणि प्यारी।
इनके पीछे प्रकट हुई श्री शोभा–सीमा।
रूप–भार से दबा गमन था जिनका धीमा।
तब प्रकटे सित–वसन वैद्य धनवन्तरी ज्ञानी।
लिये सुधा का पात्र जिलाने को मृत प्राणी।
मन्थन का उपकरण जहॉ का तहॉ पढाया।
फिर दोनो ने भाग प्राप्ति का प्रश्न उठाया।
पर दोनो दल हुए विकल
लख विष की ज्वाला।
उनके हित के लिये उसे शिव ने पी डाला।
श्री ने हरि को वरा योग्य वर उनको लेखा।
पर दैत्यो की ओर न भूले से ही देखा।

राक्षसो से कलश की रक्षा करने के लिये घटवाही जयन्त को हरिद्वार नासिक उज्जैन और प्रयाग चारो दिशाओ मे भागना पडा। इस प्रकार जहॉ–जहॉ अमृत कलश छलका वही अमृत की कामना करने वाले श्रद्धालु एकत्रित होने लगे। इसी धार्मिक मेले ने कालान्तर मे वृहद मेले का रूप ग्रहण कर लिया।

कुम्भ मेले मे मीना बाजार घोडा बाजार हाथी बाजार चिडिया बाजार और काठ बाजार आदि लगते हैं। लीलाओ का प्रदर्शन होता है। पूर्व काल मे सगीत नृत्य के लिए वारागनाये भी जाती थी। कुश–कॉस तम्बू–कनात नौका–जहाज गगाजली जनेऊ मुडन–तर्पण हडडी–पिडा स्नान गोदान सब गगा मैया के तट पर होता है। कुम्भ की बडी भारी भीड सभी के धैर्य की परीक्षा करा देती है।

मेरठ के मेले

स्थान	मेलो के नाम	समय तथा तिथि
मेरठ शहर	नौचन्दी	होली के बाद प्रथम रविवार से
	राम लीला	क्वार बदि तेरस
	छडियान	दूसरा मोहर्रम
	मोहर्रम	श्रावण सुदी नौमी
	छडियान	श्रावण सुदी पूर्णमासी
		श्रावण सुदी नाग पचमी
मेरठ छावनी	सलुने	श्रावण सुदी पूर्णमासी
	रथ जगन्नाथ	आषाढ सुदी
फफूडा	उर्स शहरुकनुद्दीन	सर्व–उन्साता मे
दौराला	देवी जी	चैत मे
पूठ	गगा जी	ज्येष्ठ सुदी पूर्णमासी
अजराडा	उर्स दरगाह/शमसुद्दीन	दिसम्बर मे 3 दिन
नरावा	कन्नौर सीतला	आश्विन मे एक दिन
खरखौदा	सीतला रास	चैत के अत मे प्रतिवर्ष कार्तिक मे।
बागपत	यमुना स्नान	फागुन सुदी एकादशी जेठ सुदी दशमी
खेकडा	बूढा बाबू	भादो बदी दूज
पुरा	महादेव	फागुन व श्रावण बदी चौदस
छपरौली	यमुना स्नान	फागुन सुदी एकादशी फादसी दशमी
कुतावा	यमुना स्नान	ज्येष्ठ सुदी दशमी
नीरपुडा	छडियान	श्रावण मे एक दिन
बरनावा	उर्स	चैत मे सात दिन
फजलपुर	काली देवी	चैत सुदी सप्तमी व अष्टमी
लोहार	काली देवी	बैशाख मे एक दिन
सरधना	बूढा बाबू	चैत सुदी दूज
सरधना	मोहर्रम छडियान	मोर्हरम मे भादो के दिन
मवाना कला	रामलीला	आश्विन मे
फलावदा	उर्स शाह	दो दिन
हस्तिनापुर	फेरी	

हस्तिनापुर	कार्तिक स्नान	जैन उत्सव–कार्तिक मे
टाटोना	बूढा बाबु	भादो सुदी दूज
टीकरी	कठी माता	फागुन
परीक्षतगढ	छडियान	श्रावण सुदी दशमी
बागपत	ज्येष्ठ दशहरा	ज्येष्ठ सुदी 13
खेकडा	भादो	भाद्र ब 2 4
बागपत	नहान	कार्तिक सु० 15 फागुन सु० ॥
खेकडा	घीसा सन्त	फागुन सु० 10
कोताना	बाथ फेयर	फागुन सु० 11
समाना	मलन्दी देवी	बैशाख सु० 5
डासना	उर्स मखदुम साहब	मोहर्रम 2
दौराला	देवी मेला	चैत्र बदी 2 कनहल तालाबपुर चैत्र सुदी 7 फजलपुर चैत्र सुदी 8
सलावा	जाहर दीवान	ज्येष्ठ सुदी 10
लावड	छडियो का मेला	श्रावण शु 15 निहोडी श्रावण शु 9
बरनावा	उर्स	सफर 5 8
मेरठ	रथयात्रा	आषाढ
मेरठ	छडियो का मेला	श्रावण यु 15
मेरठ	रामलीला	
मेरठ	उर्स हाजी साहब	अक्टूबर के अत मे
बडजावका	देवी का मेला	चैत्र सुदी 14
फिटकिरी	माता का मेला	ज्येष्ठ सुदी 1
ततीना	बूढे बाबा	आषाढ शु० 2
परीक्षितगढ	छडियो का मेला	श्रावण शु० 9 11
परीक्षितगढ	रामलीला	आश्विन सु० 1 10
खानपुर	कार्तिक पूर्णिमा	कार्तिक सुदी 15
फिरोजपुर	शिवरात्रि	फागुन बदी 15

गाजियाबाद के मेले

गढमुक्तेश्वर	गगा स्नान	कार्तिक मे 8 दिन
	ज्येष्ठ दशहरा	ज्येष्ठ सुदी 10
	वेरबोटी	बैसाख मे 1 दिन

गढमुक्तेश्वर	बसत पचमी	माघ मे
	गगा बख्श	रमजान मे 7 दिन
	बैशाखी	बैशाख सुदि
पूठ	गगा स्नान	कार्तिक पूर्णिमा
ब्रजघाट	गगा जी	पूर्णिमा व अमावस्या
हापुड	चण्डी	चैत सुदी अष्ठमी व नवमी
	रामलीला	आश्विन मे 8 दिन
	सलूनो व शिवरात्रि	श्रावण मे
	उर्स	श्रावण मे 3 बार
गाजियाबाद	देवी पूजा	बैसाख व कार्तिक मे
डासना	उर्स मखदूम	माह मोहर्रम मे
	देवी पूजा	चैत्र व कार्तिक मे

मुजफ्फरनगर के मेले

स्थान	उत्सव	तिथि
मुजफ्फरनगर	प्रदर्शनी	मार्च मास
	छट	दुलहैंडी के बाद 1 दिन
	रामलीला	क्वार मास
चरथावल	रामलीला	क्वार मास
चरथावल	छट	दुलहैंडी के बाद 1 दिन
चरथावल	छडिया	भादो सुदी चौदस
दूधली	छडिया	भादो सुदी चौदस
पुरकाजी	छडिया	भादो सुदी अष्ठमी
हरसौली	देवी जी	असौज सुदि चौदस
चरौली		असौज सुदि चौदस सुदि दूज
हैवतपुर	पीर	ज्येष्ठ का प्रथम रविवार
दयालपुर	शिवजी	फागुन की शिवरात्रि
कैराना	छडियॉ	मई मे
बनत	उर्स इमाम सहाब	11वॉ मोहर्रम मे
झिझौना	उर्स इमाम सहाब	मोहर्रम के अत मे
शामली	दशहरा	जेठ मे
हसनपुरी लुहारी	घुगाल	भादो सुदी तीज

थाना भवन	घुगाल	भादो सुदी चौदस
जलालाबाद	ह इलियास स	5वी रबिउल उव्वल
बिदौली	पीर बेहराम शाह	ज्येष्ठ व आषाढ के प्रत्येक रविवार को
बुढाना	ईरव्रदोज	मगसिर सुदी तीज
बुढाना	हरनन्दन हान	ज्येष्ठ सुदि दशमी कार्तिक सुदि पूर्णमासी कार्तिक
बुढाना	देवी जी	चैत सुदि चौदस
शोरो	उर्स	शाकाल का प्रथम सप्ताह
खेडा मस्तान	उर्स मस्तान शाह	चैत बदी छट
आरसौली	बूढा बाबू	चैत सुदि दूज
जानसठ	उर्स शाह नसीर	ज्येष्ठ के दूसरे बुद्ध को
खतौली	छडियॉ	अगस्त के सलूनो के दूसरे दिन
शेखपुर तिस्सा	परियॉ	चैत के हर बुद्ध को
शेखपुर तिस्सा	नखार फाग	भादो सुदि पूर्णमासी
शुक्करताल	गगा स्नान	कार्तिक तथा जेठ मे
माखिनपुर	जोग माया	चैत के अत मे अष्टमी

बुलन्दशहर के मेले

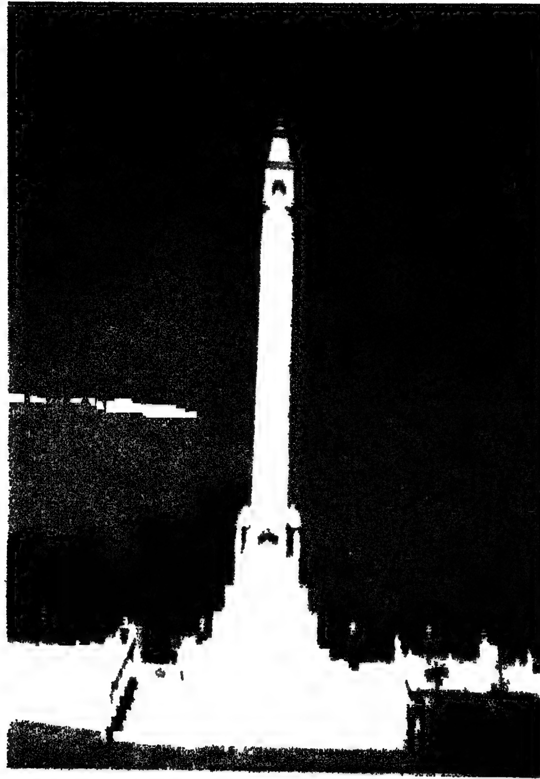
स्थान	उत्सव	तिथि
बुलन्दशहर	फरवरी मे प्रदर्शनी	फरवरी से
सिकन्दराबाद	होली मेला	होली पर
अनूपशहर	गगा मेला	कार्तिक की पूर्णिमा
खुर्जा	रामलीला मेला	क्वार मे
दनकौर	मेला जन्माष्टमी	जन्माष्टमी पर
जेवर	उर्स	प्रति वर्ष
गुलावठी	शहीद मेला	सितम्बर मास
अहार	कॉवड जल अभिषेक	शिव चौदस
ताहरपुर घाट	गगा स्नान	कार्तिक



श्री हनुमान प्रतिमा शुकताल मुजफ्फरनगर।



श्री हनुमान प्रतिमा मुजफ्फरनगर रोड।



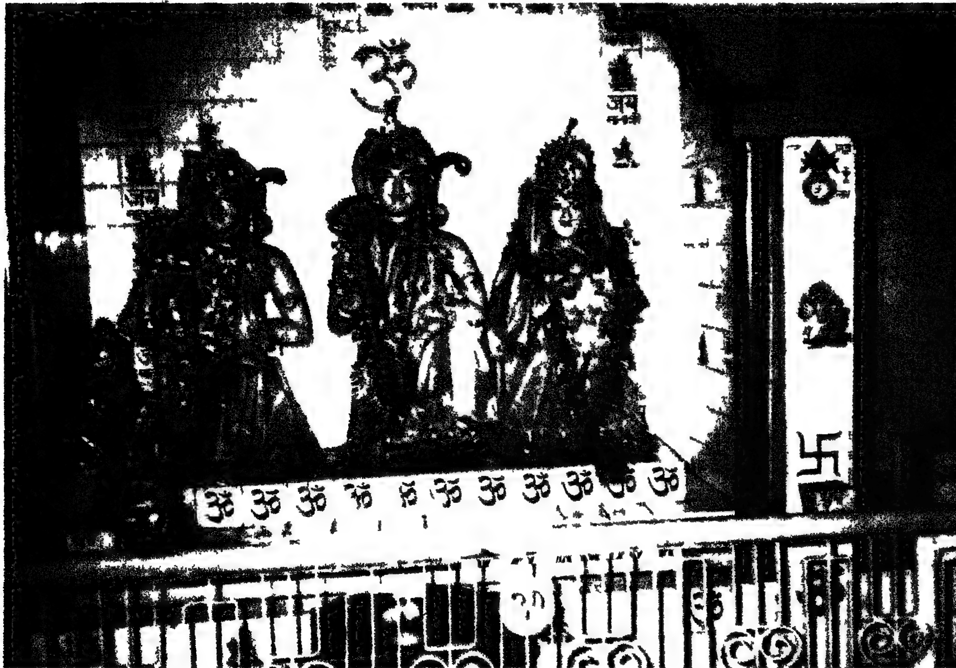
अतिशय क्षेत्र वहलना स्तम्भ भगवान महावीर मुजफ्फरनगर।



अकबर सूरी खॉ का किला मुजफ्फरनगर।



श्री राम मदिर शुक्रताल मुजफ्फरनगर।



चामुण्डा मदिर मे श्री राम सीता लक्ष्मण की मूतियाँ बिजनौर।



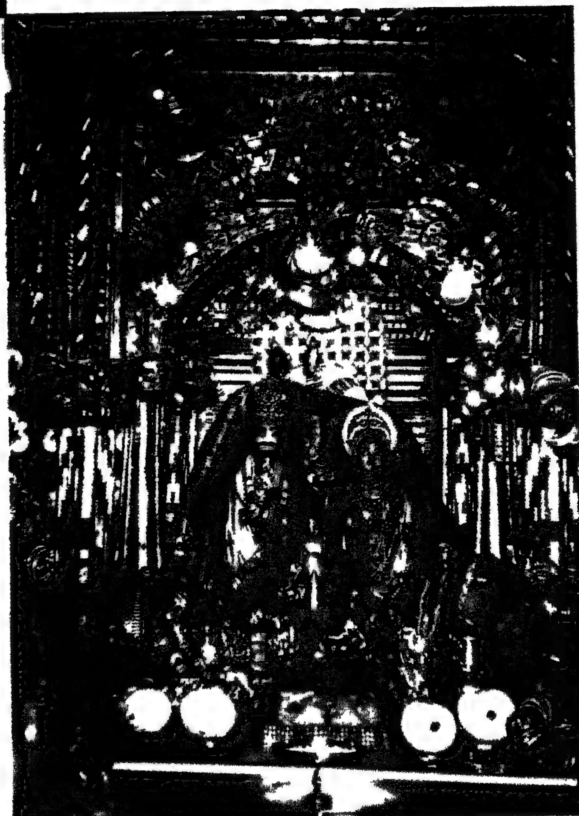
श्री त्रिपुरा मॉ बाला सुन्दरी मदिर देवबन्द सहारनपुर।



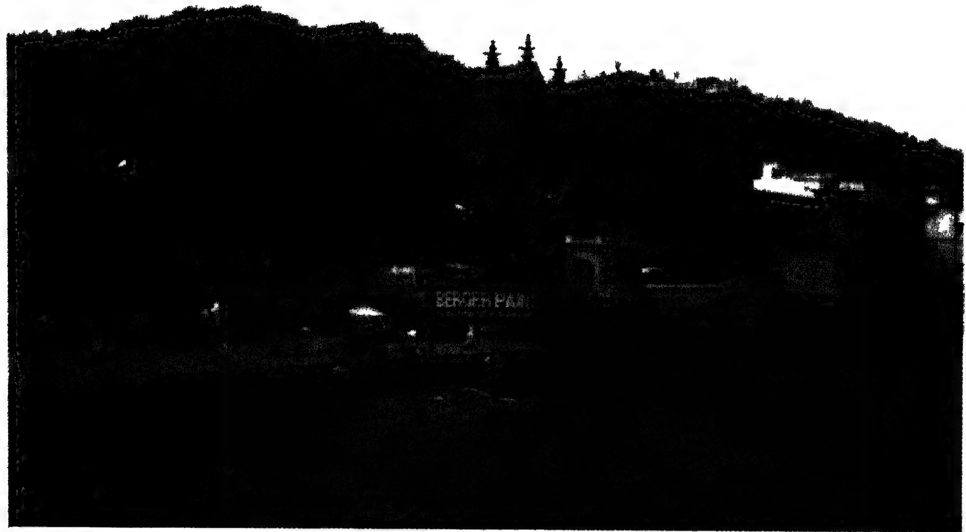
हनुमान मदिर बाबा लालदास मदिर सहारनपुर।



मकरवाहिनी दुर्गा मदिर हरिद्वार।



राजा भगीरथ एव गगा मैय्या हरिद्वार।



कर्नाटक वालो का शिव मदिर हरिद्वार।



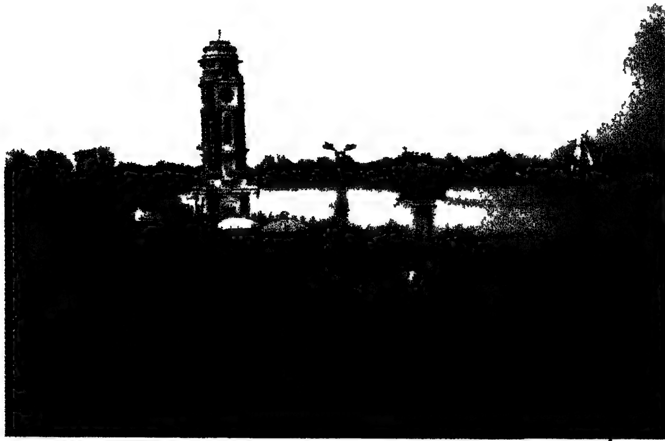
श्री लक्ष्मी नारायण मदिर (राजा रानी) हरिद्वार।

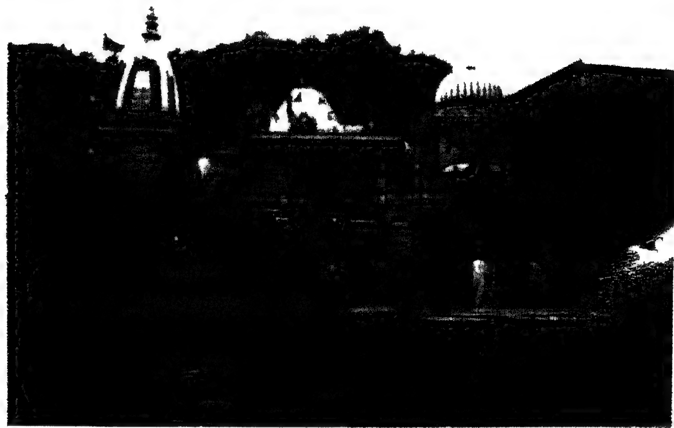


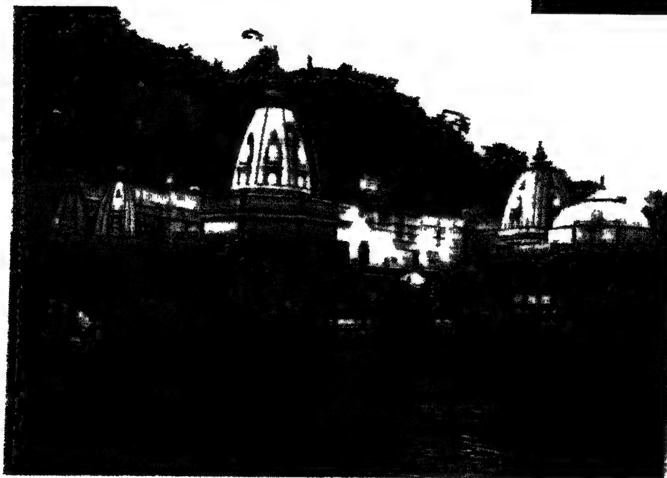
गगा मदिर हर की पौडी हरिद्वार।



दुर्गा मदिर हर की पौडी हरिद्वार।







हर की पौडी हरिद्वार।

औरगाबाद घाट	गगा स्नान	कार्तिक
गजरौला घाट	गगा स्नान	कार्तिक
बैलोन देवी मदिर	नवरात्रि	चैत मास नवरात्रि

सहारनपुर के मेले

स्थान	मेले	तिथि
सहारनपुर	रामलीला	असोज
सहारनपुर	गुघाल	भादो की दशमी
सहारनपुर	नुमायश	असोज
शाकुम्भरी देवी	शाकुम्भरी देवी	आश्विन सदी चौदस
शाकुम्भरी देवी	नौरात्री	चैत मास
देवबन्द	बाला सुन्दरी	चैत सुदी चौदस (देवी कुण्ड पर)
देवबन्द	बूढे बाबा	चैत सुदी चौदस (देवी कुण्ड पर)
रामपुर मनिहारान	रामनवमी का मेला	चैत्र शुक्ल नवमी
लाठरदेवा	गणेश चौथ	भादो सुदी चौथ
चिलकाना	देवी का मेला	चैत सुदी चौदस
बरसी	महादेव मेला	श्रावण मास
सरसावा	मखदूम मजार मेला	दिसम्बर मास
गगोह	शाह अब्दुल कद्दूस	दिसम्बर मास

हरिद्वार के मेले

स्थान	उत्सव	तिथि
हरिद्वार	नव सवत	चैत्र शुक्ल प्रतिपदा
हरिद्वार	पिजोर (हर)	बैशाख कृष्ण अमावस्या
हरिद्वार	गगा सप्तमी	बैशाख शुक्ल सप्तमी
हरिद्वार	गगा दशहरा	ज्येष्ठ शुक्ल दशमी
हरिद्वार	निर्जला एकादशी	ज्येष्ठ शुक्ल एकादशी
हरिद्वार	मेला ज्वालामुखी	आषाढ शुक्ल पूर्णिमा
हरिद्वार	श्राद्ध अमावस्या	श्रावण शुक्ल अष्ठमी
हरिद्वार	मेला चिन्त्यपूरणी	श्रावण शुक्ल अष्ठमी
हरिद्वार	कृष्णा जन्माष्टमी	भाद्रपद कृष्ण अष्ठमी
कनखल	गुघाल	भाद्रपद शुक्ल दशमी
ज्वालापुर	गुघाल	भाद्रपद शुक्ल त्रयोदशी
हरिद्वार	दीपावली	कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी
हरिद्वार	विजय दशमी	आश्विन शुक्ल दशमी
हरिद्वार	कार्तिक पूर्णिमा	कार्तिक पूर्णिमा
हरिद्वार	मकर सक्रान्ति	पौष शुक्ल षष्ठी
हरिद्वार	कॉवड मेला महाशिवरात्रि	फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी
रूडकी	प्रानकलियर	मुसलमानी मेला

टिप्पणी हर की पैडी पर प्रत्येक मास की पूर्णमासी अमावस्या चन्द्र ग्रहण एव सूर्य ग्रहण पर मेला भरता है।

लोक सगीत

लोक परम्पराओ के आधार पर लोक सगीत का स्वत स्फुरण हुआ है। लोक सगीत का विधिवत् इतिहास मिलना असभव है। यह गीत जन सामान्य मे प्रचलन के आधार पर रचे गये हैं। इनका कोई पुस्तकबद्ध रूप प्राप्त नही है क्योकि लोक गीतो का मौखिक रूप से आदान–प्रदान होता चलता है।

हिन्दुओ मे लगभग समस्त रीति रिवाज पर्व जन्म शादी विवाह से लेकर मृत्यु तक जितने सस्कार होते हैं सभी अवसरो पर स्त्रियो द्वारा गीत गाने की परम्परा है। लोक गीतो के गाने मे ढोलक ही मुख्य वाद्य है। साथ मे मजीरे या घुघरुओ का प्रयोग भी होता है।

विवाह के अनेक अवसरो पर जैसे– सगाई भात लग्न बान तेल घुडचढी परिक्रमा बरौठी विदाई वधू के आगमन पर लोक गीत गाने की परम्परा है। इसके अतिरिक्त त्यौहार पूजा होली सावन गगा स्नान के गीत सास बहू के गीत देवर भाभी के लटके ननद भौजाई के ताने–तुनके तीज के गीत प्राय सुनने को मिलते है।

भोर के समय महिला द्वारा चक्की पीसते हुए गुनगुनाना चरखा कातती हुई स्त्री का गीत अटेरन पर सूत अटेरते हुए गीत का आनन्द ही कुछ और है जो श्रोता को मन्त्र मुग्ध करने वाला जादू भरा गीत होता है। हिन्दुओ के अनुसार मुसलमानो मे भी इसी प्रकार के गीत गाये जाते हैं।

गॉवो मे हर काम के साथ गीतो का विधान है– धान रोपनी चावल कूटने के समय हल्दी पीसने के समय और हल चलाने के समय आदि। पर अब वे गीत कहॉ चले गये। गुमनामी के ॲधेरे मे खो गये।

चित्रपट तो इन गीतो के स्वाभाविक रूप को ही नष्ट करने का प्रयास कर रहा है। यह प्रयास निश्चित रूप से अक्षम्य है तथा लोक सस्कृति के साथ खिलवाड है।

कुरू प्रदेश के राग–रागनी

1 भजन

भक्ति उपदेश तथा निर्गुण गानो को भजन नाम की सज्ञा दी गई है। कौरवी क्षेत्र के भजनीको मे शकरदास गगादास बक्सीराम घीसा फूल सिह शीशराम महाशय लटूर चन्दन सिह आदिं ने तथा स्वामी दयानन्द जी द्वारा आर्य समाज की स्थापना के पश्चात पोगापथ बाल–विवाह अछूतोद्धार वैदिक शिक्षा आदि सामाजिक कुरीतियो के विरुद्ध जिन

उपदेशको ने जो उद्घोष किया वे सभी वन्दनीय है। महाभारत काव्य को लेकर भी अनेक भजनीको ने बहुत योगदान दिया।

भजन के समय वाद्य यत्रो मे केवल ढोलक धुतारा या तबूरा खडताल चिमटा है। भजन की टेक उभारने वाला एक सहायक होता है। प्राय ढोलकिया या चिमटा वाला ही इसकी पूर्ति कर देते हैं।

2- ख्याल

खयालबाजी का जनपद मे काफी प्रचलन था। मेरठ हापुड इसके केन्द्र थे। अनेक खयालबाज जिन्होने अनेक ख्यालो की रचना की और इसके द्वारा जनपद के जनजीवन को विलोडित कर दिया था।

खयाल प्राय चग पर गाये जाते थे और उनमे जनता की इतनी रुचि थी कि सैकडो खयाल रचयिता उत्पन्न हुए और उन्होने अनेक अखाडो मे बॅटकर अपनी शिष्य परम्परा चलाई। उस समय लाखो ख्यालो की रचना हुई। इसके लिये अलग निबन्ध व शोध की आवश्यकता है जिससे यह मृतप्राय रचनाए व कला समाप्त न हो। शहर मेरठ व हापुड के अतिरिक्त लोक कवियो मे ख्याल गायक भगीरथ फूल खचेडू खॉ मीरदाद चन्दन सिह शीशराम ये सब सेढूसिह के शिष्य थे। मेरठ के बनारसी दास के ख्यालो की पुस्तक भी छपी थी।

ख्याल गायको के दो अखाडे हैं– एक कलगी अखाडा और दूसरा तुर्रा अखाडा। गायन की शैली और धुन भी अनेक प्रकार की प्रचलित है जैसे ढाडा या खडी रगत का ख्याल तबील ख्याल या लम्बी रगत लगडी रगत का ख्याल या शिकस्त ख्याल डेढ रग का ख्याल छोटी रगत का ख्याल आदि शैलियॉ प्रसिद्ध हैं।

कहा जाता है कि जोक सहाब और मिर्जा गालिब ने तुर्रा और कलगी अखाडो को आरम्भ किया था। साथ ही यह भी कहा जाता है कि सन 1860 ई० म हापुड के चौराखी मन्दिर मे लक्ष्मण गिरी नाम के एक सिद्ध गोसाई रहा करते थे जिनके शिष्य राम किशन दास और सेढू सिह थे। गोसाई जी ने प्रसन्न होकर अपनी पगडी का तुर्रा राम किशन दास को और कलगी सेढू सिह को दे दी थी। इन दोनो के ख्याल आज उपलब्ध नही है। राम किशन दास ने तुर्रा अखाडे की स्थापना की जिसमे भैरो सिह के ख्यालो ने नाम कमाया। उधर सेढू सिह कलगी अखाडे मे अपने कुछ शिष्य बनाकर पजाब चले गये। कलगी अखाडे के मसीता खॉ के ख्याल ज्यादा मशहूर हुए। तुर्रा वाले ईश्वरीय ज्ञान की चर्चा करते थे। कलगी वाले माया की दार्शनिकता पर लिखते थे।

कहा जाता है कि राम किशन दास ने एक और शिष्य दुर्गा सिह हुए हैं और तत्पश्चात भैरो सिह जो तुर्रा अखाडे के प्रसिद्ध ख्यालबाज थे। परम्परा के अनुसार ख्याल

की रचनाओ मे गुरू का उल्लेख अनिवार्यत किया जाता है। कही–कही तो गुरू के गुरू तक का स्मरण भी किया गया है। उदाहरण रूप मे–

ख्याल– *मत करो ख्वार खस्ता इसको हाजिर है इसे ले लो इस दम।*
बीमार का दम बीमार का दम बीमार का दम बीमार का दम ।।टेक।।

चौक–1 *पहलू से उठे और भाग गए मफरूर हुए तुम आह सनम।*
पर कौल कसम कर कौल कसम कर कौल कसम कर कौल कसम।।
रोते है तुम्हारे फिराक मे हम सौहार्द कहे है कुल आलम।।
गई इज्जो शरम गई इज्जो शरम गई इज्जो शरम गई इज्जो शरम।।
गर आये नही तुम लेने खबर तो जायेगा आखिर मुलके अदम।
बीमार का दम।।
भैरो सिह शायर राम किशन के मिसरे मिसाल तगे दुदम।
किया खूब रकम किया खूब रकम किया खूब रकम किया खूब रकम।।
सुख लाल इबारत खुशरगी लिखा है बनाकर खूब नजम।
कर ख्याल खतम कर ख्याल खतम कर ख्याल खतम कर ख्याल खतम।

ख्याल मे युग की बदलती परिस्थितियो का वर्णन है।

ख्याल दीगर– *वजार लेखा न पास पैसा किसे खुश आवे ये यार होली।*
है अब जमाना खिजा मे लिपटा जो होली थी सो असलये होली।।
न प्रेम पिचकारियो मे साहब वो रग रूपी रही न रोती।
सब अपनी फिरते महार ईसा रही न यारो की यार टोली।।
था यार याना जो औवल–औवल करे थे बाहम खडे ठिठोली।
वो अब जुदे है अलग–अलग सब किसी ने दिल की गिरह न खोली।।
है कुमकुमे बन्द इस वजह से न मारो साहब हमारे गोली।

3- झूलने

झूलने के प्रति कुछ लोगो को भ्रान्ति है कि झूलना वर्षा ऋतु मे झूले पर बैठकर स्त्रियो द्वारा गाया जाता है वह झूलना होता है। ऐसा कदापि नही है। झूलना एक शास्त्रोक्त छन्द है।

झूलना एक पिगल का छद है जिसके एक चरण मे 7 7 7 और 5 पर विराम होता है। मात्राए 26 होती हैं अन्त मे लघु–गुरू होता है। किसी मे 10 10 पर यति तथा कुल 37 मात्राये होती हैं। यति पर तुक मिल जानी चाहिये। झूलने मे कविता का अच्छा प्रदर्शन होता है और यह छद बहुत ही कर्ण प्रिय होता है। होली के अन्तर्गत अनेक लोक कवियो

ने बीच–बीच मे झूलने डालकर होली को सुन्दर बना दिया है। घीसाराम भगीरथ फूल सिह दीवान गोविन्दराम मथुरा प्रसाद मीरदाद गल्लडमल साग सिह बुढन रामागुरू हापुड तथा मेरठ के अनेक कवियो ने झूलनो की रचना की है। यह जनपद की एक बहुत मूल्यवान धरोहर है जो लुप्त प्राय होती जा रही है। लक्ष्मण गिरी के दोनो चेले किशनदान और सेढूसिह के अलग–अलग अखाडे तुरा व कलगी तर्ज के थे जिनकी परम्परा वर्षो चलती रही।

4- होली

यह कुरू प्रदेश का एक बहुत प्रचलित राग है। इसका समय अधिकतर माघ मास से प्रारम्भ होकर फसल काटने तक चलता है। इस राग पर जितना लिखा गया है उतना अन्य किसी पर नही। रामायण महाभारत के अतिरिक्त इस राग मे राजा हरिश्चन्द गोपीचन्द राजा कारक सौदागर–प्रेमवती नर सुलतान निहालदे ढोला मरवन आदि न जाने कितने कथानको की सृष्टि की गई है। इस राग के कवि घीसाराम भटीपुर फूलसिह नगला भगीरथ सिह सिहपुर मनफूल निवाडी मीरदाद हापुड राम शरण बेडेवाले दीवान दत्त दबथुवा आदि थे जिनकी होलियॉ बहुत प्रसिद्ध हैं।

जब ऋतुराज अपने पुष्पधन्वा मित्रमदन को लेकर नायक नायिका को ललकारता है उस समय यह होली राग उनकी रक्षा करता है।

'होली आई है गजर भत्त खायके
होली जायगी लाण कटवाय के।

–यानी होली राग वसतागम से आरभ होकर फसल कटने पर बद होता था।

पहले ग्रामीण जीवन मे ऐसा था कि एक ग्राम मे ही कई–कई अखाडे होली गान करते थे तथा ढोलो ढपडो तथा झाजो से एक समा बॅधा रहता था।

होली गायन मे ढोल ढप झॉज ही पर्याप्त थे। कही–कही बडे–बडे घोसे भी बजाये जाते थे। एक ही होली अखाडे मे कभी बहुत से ढोलियो को इकटठा करके उनसे बजवाया जाता था।

होली की टेक समाप्त होते ही यह वाद्य बजने लगते और अपनी ताल पर ही समाप्त होते थे। होली का गायक उठान लावनी त्रिभग जैसा उस रचना मे होता था गाता था और तोड समाप्त होते ही फिर वाद्यो का घोष फूट पडता था। गाने वाले एक या दो मिलकर गाते थे। जब वाद्य बजते थे उस समय नचनियॉ लडके जो स्त्री पात्र का रूप धारण किये होते थे नाचना आरम्भ कर देते थे।

इसके पश्चात यह भी होने लगा कि पात्र अपना पार्ट स्वय अदा करता था और वही

उस होली को गाता था। इन पद्धति मे एक प्रकार गीत नाटय का सा बोध होता था और उसे अधिक पसन्द किया जाता था।

उदाहरण के लिये कवर निहाल दे को जो कहना होता था वह कवर निहाल दे बना हुआ पात्र ही गाता था। इसी प्रकार सभी होलियो मे ऐसा होता था।

रैदासी चमारो की होली की अपनी अलग धुन थी। अब से 80 90 वर्ष पूर्व कई रैदासी युवक बहुत लम्बे नीचे अगरखे पहिनकर अर्धचन्द्राकार खडे होते और उनमे कुछ के हाथो मे ढफ और झॉझ होती थी तथा ढोल वाला उनके बीच मे खडा होता था। वे सब एक लय से गाते और एक खास अन्दाज से नाचते थे। इस समय प्रयत्न करने पर भी उनकी कोई होली प्राप्त करने मे सफलता नही मिली।

होली के गायक अब भी खिदौडा निवाडी सिकेडा आदि ग्राम मे हैं और बहुत ही अच्छे गायक है। मोदीनगर के निकट सीकरी ग्राम मे चैत्र मास के देवी के मेले के अवसर पर होली की टोलियॉ जाती हैं और जनता समस्त रात्रि वहॉ होली के रस का आस्वादन करती है।

5- बारह मासे

यह राग सावन मास मे अधिक गाया जाता है। स्त्रियॉ झूलती हुई बारह मासे गाती है। बारह मासे मे वियोगिनी नायिका प्रतिमास नायक के न आने का वर्णन करती है। चैत्र मास से आरम्भ करके बारहमासा का वर्णन फागुण मे समाप्त होता है। विरहिणी नायिका प्रत्येक मास का ऋतु वर्णन करती हुई नायक के न आने पर अपने वियोग का दु ख कहती हैं। बारह मासो का इतना रिवाज था कि स्त्रियो के अतिरिक्त पुरुष भी इन्हे गाते थे। अनेक कवियो ने अपनी रचनाओ मे होलियो के मध्य बारहमासे की तर्ज को भी स्थान दिया है। बारहमासा बडा सुन्दर कर्णप्रिय राग है। यह प्रथा भी समाप्त प्राय है। कुछ बारह मासे तीज पर्व पर स्त्रियो द्वारा गाते सुने जाते हैं।

6- आल्हा

यह वीर–रस प्रधान गीत है। हिन्दी मे वीर–रस प्रधान काव्यो की कमी नहीं है। परन्तु जो लोकप्रियता आल्हा' को मिली वह जन–जीवन मे अन्य काव्य को कहॉ नसीब हुई? सावन–भादो मास मे रात के समय आल्हा' गान का उत्तरी भारत मे सभी जगह रिवाज रहा है। इस राग के गायक नट बादी लोग अधिक हुए हैं जो ग्रामो मे जाकर आल्हा गाते थे। ढोलक एक मात्र इसका वाद्य है। जब ढोलक पर थाप पडती व गायकी की ऊॅची आवाज दूर तक गूॅजती है तो सुनने वालो की नसो मे रक्त का सचार होने लगता है। युवको के बाहु फडक उठते हैं। आल्हा' की कहानी 52 भागो मे विभक्त है। इसमे सैकडो चरित्र है। यह ऐसा राग है जिसमे न गाने वाला ऊबता है न सुनने वाला।

यह काव्य गाथाकारो तक ही सीमित था। सबसे पहले फरूर्खाबाद के अग्रेज कलेक्टर डिलियट साहब ने इसे लिपिबद्ध कराया जो कुछ सशोधनो के बाद आल्हा–खण्ड नाम से प्रकाशित हुआ। मेरठ के मटरूलाल अत्तार ने जनपदीय भाषा मे आल्हा की 52 लडाई लिखी थी जो उत्तर भारत मे सभी स्थानो पर चलती हैं।

अन्य पुराने राग जो अब प्राय मृत हैं लोक–जीवन मे अभी उनका भी अभाव नही है। ये राग अब भी ग्रामीण युवक बडे चाव से गाते हैं और छोटे–बडे सभी मत्र मुग्ध होकर सुनते हैं।

7- ढोला

यह भी कुछ आल्हा से मिलती तर्ज से गाई जाती है। इस राग को किसी ने लिपिबद्ध नही किया। इसके गायक जोगी हैं जो ग्रामो मे कई–कई दिन ठहरते हैं। ग्रामीण जनता उनके भोजन का प्रबन्ध करती है और लोग उन्हे भेट देते हैं। यह राग दोतारा सारगी पर गाया जाता है। साथ मे ढोलक भी होती है। गायक कन्धे से दोतारा लगाकर उसे बजाते हुए खडे होकर झूम–झूम कर गाता है। ढोला राग मे नल–पुराण व ढोला–मारुवन की प्रेमकथा का पर्णन है। यह राग ग्राम मे लोकप्रिय है मगर इसके गायको का अभाव होता जा रहा है। यह बेल का राग होता था इसमे तुक व ताल नही होती थी।

7- जाहर के गीत

ग्रामो मे सावन मे जाहरपीर के रतजगे होते थे। इन रतजगो मे जाहरपीर के पुजारी जो अधिकतर हिन्दू जुलाहे हैं इस राग को डैरू डका बजाकर गाते थे। वादक दो होते थे जिनके बाये हाथ मे डमरू और दाहिने हाथ मे डका रहता था। वह जाहर की लोक कथा अपने प्रकार से गाते थे। आज भी जाहरपीर की माढियो पर जैसे निलोहा तहसील मवाना खिरवा तहसील सरधना आदि जनपद के अनेक ग्रामो मे जाहरपीर पर निशान (झडे) चढाये जाते हैं और वहॉ ये राग गाए जाते हैं। बिज्झन जुलाहा और कक्केपुर गॉव का बदलू तेली इस राग के बडे अच्छे गायक थे।

9- मल्होर

इस राग को ग्रामीण–जन जाडो की रात्रि मे अधिकतर कोल्हू पर गाया करते थे। इसके सुनने के लिये जनता नही होती थी वह केवल गायक का अपना मनोरजन था। रात्रि मे कोल्हू मे बैलो को हॉकता हुआ गायक अपनी मनमौज मे गाता था। मल्होर की टीप का रात्रि मे बिस्तरो मे पडे हुए लोग दूर से आनन्द लेते थे। मल्होर मे प्राय ग्रामीण दोहे होते थे और दोहे के अन्त मे 'बावलिया मल्होर शब्दो का उच्चारण किया जाता था। ये मल्होर जिन्हे मल्हाये भी कहते थे बहुत ही लोकप्रिय थे। इनके गाने वाले अब नहीं रहे हैं।

10- बारे

जिन ग्रामो मे चरस द्वारा कुएँ से पानी खीचकर सिचाई की जाती थी वहाँ कुएँ पर कम से कम पॉच व्यक्ति होते थे– 2 चरसिया 2 कीलिया 1 पनमेला। चरस चमडे का बहुत बडा डोल होता था जिसको सन की मोटी रस्सी से बॉधा जाता था। इसको लाव कहते थे। बैलो की जोडी के जुए मे भी एक रस्सी होती थी जिसमे लाव का सिरा लकडी की किल्ली से अटका दिया जाता था। जब चरस भर जाता था तब चरसिया को गाकर चरस भर जाने का सकेत देना पडता था और जब चरस कुएँ की मन के निकट आ जाता था तो चरस वाला उसे हाथ से थाम कर किल्ली वाले को गाकर सकेत देता था। तब वह लाव मे से किल्ली निकाल लेता था। इस सकेत गान को 'बारे कहते थे। चरस वाले के लिये यह जरूरी था कि वह सकेत दे और नीरस सकेत के स्थान पर यह सरस सकेत बहुत उपयुक्त था। बारे गाने वालो की भी गॉव मे चरचा रहती थी कि अमुक बहुत अच्छे बारे डालता है। गॉव के लोग कहते हैं 'बारे पानी लिकाडने का राग है। सत्य ही इस राग मे पानी निकालने की क्रिया मे समय–सकेत देने के लिए स्वर का आरोह अवरोह तथा विस्तार बहुत महत्व का होता था।

विभिन्न अवसरो पर गाये जाने वाले गीत

कर्तव्य भावना से प्रेरित एक लोक गीत। नायक की चिटठी लाभ पर जाने के लिये आई है –

मारू जी बैठे है तखत बिछाय
चिठियॉ तो आई दक्खन देश की जी।
ओ मेरी गोरी जी उठ धन दिवला जो बाल।
चिठियॉ तो बॉचे दक्खन————
ऐ मेरे राजा जी हम पर उठाई न जाय
चन्दर उजाले चिठियॉ बॉचिए जी
X X X X X X
ओ मेरे राजा जी किस–किस लिखी है सलाम
किस को तो लिक्खी बैरन चाकरी जी
ए मेरी गोरी जी सब–सब लिखी है सलाम
हमकू तो लिखी बैरन चाकरी जी——
ओ मेरे राजा जी अब के ससुर जी को——
बडे भैया छोटे भेजे भेजे न जाये।
X X X X X X
तो मेरे राजा जी अइयो मूँड मुँडाय
हाय खबर सिर ढोबरा जी——

ए मेरी रानी जी ऐसे बोल मत बोल
चलते हाकम न कोसिए जी
तो मेरे राजा जी अइयो घुडल सवार
सीस मोहर मुख सेहरा जी–––

राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत एक लोक गीत जिसमे आनन्दित होकर नायिका गा रही है और मदमस्ती से भरा होली का त्यौहार भी है। प्रसिद्ध सागी बुल्ली के स्वाग के आयोजन का भी वर्णन है–

दिके इब मिलग्या हमे सुराज
मौज मा होल्ली गावेगे।
किसाणो का रब सुडडा ऐस्सा
घर मे नाज हात्थ मे पैसा।
चौधरण कहे घेर मे आण
सॉग बुल्ली का लावेगे।।
होल्ली मॉ आया बडा उजीर
खुवावै उस्ने रस की खीर। -
करेगे थहरी जाण–पिछाण रग मॉ उसे न्हुवावेगे
दिके मिलग्या हमे सुराज–––
लाल्ला गॉ के चक्कर काटे–
हाकी जमीदार ने डाटे–––
दरोग्गा चलै दबा कर कॉण
रौब इब ढेर बनावेगे।।
एक रग मा रग दे सबकू
उन्चे निच्चे छोड दे ढबकू।
दैस का हो जागा कल्यान
प्रेम की गग बहावेगे–
एक रमणी की वीरता का बखान देखिये–

हाथ मल रह्यो थाणेदार
वो तो ले गई बलम छुडाय।
लुगाई ने गजब करे–––

हमारी भारतीय सस्कृति एव धर्म–कर्म मे पूर्ण निष्ठा है। सहज रूप मे एक अन्य लोक गीत जिसमे गढमुक्तेश्वर पर परवी के दिन गगा स्नान का वर्णन है –

मै तुज्झ से पुच्छूॅं मेरे बाले कन्हैया

गल का कण्ठा कहॉ खोया हो राम।

गढ गगा पै मइया पडवी पडी थी

हियै धरम कर आए हो राम।।

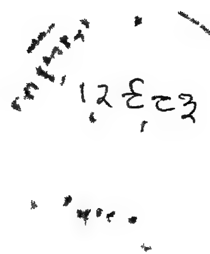
मैं तुझ से पुच्छुॅं मेरे बाले कन्हैया

सिर का तो चरिया तण का तो बाग्गा।

कहॉ खोया हो राम——

गढ गगा पै मइया पडवी पडी थी

हियै धरम कर आए हो राम।



एक जच्चा गीत जिसमे नव प्रसूतिका से ननद या भौजाई अपने मन पसन्द नेग लेने के लिये क्या–क्या उलाहने देती हैं–

मेरी ढोलक लाल गुलाब अजब गाने वाली

सासू आवे चौक पुरावे मागे अपना नेग।

देना हो तो दे मेरी जच्चा नही लौट कर जाये

——अजब गाने वाली।

जेठानी आवे पलग बिछावे मॉगे अपना नेग

देना हो तो दे मेरी जच्चा नही लौट कर जाये

——अजब गाने वाली।

ननद आवे सतिए रखावे मॉगे अपना नेग

देना हो तो दे मेरी जच्चा नही लौट कर जाये

——सुघड गाने वाली।

भावज तो नव प्रसूता है और अपनी लाडली ननद रानी को जी भर कर छकाती है–

एजी ननद भावज पनिया निकली पानी भरते मे बद लई होड

ओहो मनरजना———

भाभी जो तुम ललन जनोगी तो लूॅंगी गले का हार।

पानी भर के तो भावी घर आई कोई झटक जने नन्दलाल

ओहो मनरजना———

राजा होले–होले बासुरी बजाना कोई ननद नही सुन पाय

ओहो मनरजना———

उसने जोर से ही बाजा बजाया सुन ननद भागी आई

ओहो मनरजना———

भाभी दे दो हमारी तिलडी और दे दो गले का हार

ओहो मनरजना———

बीबी पालने मे झूले भतीजा तुम इसको ले घर जाओ

ओहो मनरजना———

ले गई ले गई ननद मेरा लाल मुझको घर ऑगन ना सुहाय

ओहो मनरजना———

राजा हलकी बनाओ एक तिलडी और हलका बनाओ गलहार

ओहो मनरजना———

दे जा दे जा ननद मेरा लाल और लेजा अपना नेग

ओहो मनरजना———

ननद भावज ने मिलन सजोया गले मिलती का तोड लिया हार

पैर छूने मे तोड ली तिलडी *ओहो मनरजना———*

राजा देखो हमारी चतुराई हमने दोनो बनाये काम

एक श्रगारिक लोक गीत जिसमे ननद भावी की ठिठोली है–

मुठ्ठी भर तिल तिलो पे दिल मेरा

दैया री दैया तिलो पे दिल मेरा

दैया री दैया तिलो पे दिल मेरा।

बाहर से आई ननदी रानी

पूछे कहा गये री तिल

इकन्नी देती ना लेती

दुअन्नी देती ना लेती

चवन्नी देती ना लेती

अठन्नी देती ना लेती

रूपइया देती ना लेती

क्या साजन बेचूँ हाय दैया

क्या खुद बिक जाऊँ हाय दैया

दैया री दैया तिलो पे दिल मेरा

दैया री दैया तिलो पे दिल मेरा।

प्रस्तुत लोक गीतो मे जच्चा की सहेलियॉ जच्चा से छेडछाड कर रही हैं–

बुरा मत मानिये जच्चा

ये बच्चा सात जात का

ये बच्चा टोपी मॉगेगा

ये बच्चा कुर्ता मॉगेगा

बुरा मत मानिये जच्चा

ये बच्चा दरजी का बच्चा

ये बच्चा चेन मागेगा

ये बच्चा अगूठी मागेगा

बुरा मत मानिये जच्चा

ये बच्चा सुनार का बच्चा

ये बच्चा बाल काटेगा

ये बच्चा नाखून काटेगा

ये बच्चा बाल काटेगा

ये बच्चा नाखून काटेगा

बुरा मत मानिये जच्चा

ये बच्चा नाई का बच्चा

ये बच्च झाड़ू मागेगा

ये बच्चा पजा मागेगा

बुरा मत मानिये जच्चा

ये बच्चा भगी का बच्चा

ये बच्चा किताब मागेगा

ये बच्चा कापी मागेगा

बुरा मत मानिये जच्चा

ये बच्चा मास्टर का बच्चा

ये बच्चा कैपसूल मागेगा

ये बच्चा दवा मागेगा

बुरा मत मानिये जच्चा

ये बच्चा डाक्टर का बच्चा

ये बच्चा मूॅछ मरोडेगा

ये बच्चा नैन मारेगा

बुरा मत मानिये जच्चा

ये बच्चा नन्दोई का बच्चा

मुजफ्फरनगर के कवि श्री किशोरी लाल कपिल द्वारा सुनाया गया एक लोक गीत–

ज्यादा णा बनावे बात गात मेरा जडया–पडया

ठोक दूँगा लात तेरे बोल याद सारे हैं।

और यह देखिए व्यवहार कुशल भाभी का अभिनय जो बधाई देने वाली ननद को किस प्रकार कगन देते–देते केवल एक पैसा देने पर आ जाती है –

कगन मागे ननदी लाल की बधाई

कगन नही दूगी ननदी लाल की बधाई

रुपया मागे ननदी लाल की बधाई

रुपया नही दूगी ननदी लाल की बधाई।

अठन्नी मागे ननदी लाल की बधाई

अठन्नी नही दूगी ननदी लाल की बधाई

अत मे भाभी कह देती है कि –

अगूठा लेजा ननदी लाल की बधाई।

उधर यह भी देखिए कि सास जेठानी और ननद को कैसे फुसलाया जा रहा है। यह अद्भुत प्रलोभन उनको इसलिए दिया जा रहा है कि उसकी अनुपस्थिति मे उसके नन्दलाल को ये रोने न दे –

नीर भर लाऊँगी नन्द लाल मेरा रोवे

ले ले ले लो सास रानी नन्द लाल मेरा रोवे

दादी कहलवाऊँगी नन्द लाल मेरा रोवे

ले लो ले लो जेठानी रानी नन्द लाल मेरा रोवे

ताई कहलवाऊँगी नन्द लाल मेरा रोवे

ले लो ले लो ननद रानी नन्द लाल मेरा रोवे

बुआ कहलवाऊँगी नन्द लाल मेरा रोवे

अपनी गोरी की प्रसव पीडा से दुखी पति चौपड खेलना छोडकर दूर ग्राम से भाद्रपद की अधेरी रात मे वर्षा से भीगता हुआ अपने घोडे पर दोई को बैठाकर लाता है और स्वय आगे–आगे मशाल लेकर पैदल चलता है किन्तु स्वार्थ सिद्ध होने पर सिर के दर्द का बहाना लेकर दाई को धता बतला देता है और विवश दाई दो वर्ष बाद ऐसा अवसर फिर आने पर बदला लेने की धमकी देकर खाली हाथ लौट जाती है –

अरे राजा रे अरे राजा रे अरे राजा रे सार तो धरो उठाय हमारे धोरे आईयो राजा रे

अरी गोरी री क्या है जरुरी काम तो पकड बुलाईयो गोरी री।

अरे राजा रे लाज शरम की बात तुम्हारे आगे न कहूँ राजा रे

अरे गोरी री तेरा मेरा अन्तर एक कपट जिये मे ना करो गोरी री।

अरे राजा रे सिर मेरा दुखता चतुर दाई लाईयो राजा रे

अरे गोरी री मैं चतुर दाई का नाम जानूँ ना ग्राम चतुर दाई कहाँ बसे गोरी री।

अरे राजा रे ऊँचा गॉव अयोध्या चतुर दाई कहॉ बसे राजा रे
अरे राजा रे घोडे पर होके सवार दाई को लेने चल पडे राजा रे
अरी दाई री अरी दाई री खोला ना चन्दन किवाड चलो हमारे साथ
अरी दाई री।
अरे राजा रे भादो की रैन अधेर दाई ना चले राजा रे
अरी दाई री आगे–आगे बालूँगा मशाल उजालै मे ले चलूँ दाई री।
अरे राजा रे रिम–झिम बरसे है मेघ भीगे है मेरी चूनरी राजा रे
अरी दाई री चूनरी धरो उतार ओढो यह मेरी कामली दाई री
अरी दाई री।
अरे राजा रे गलियो मे हो रही कीच पाव तो मेरे सनै राजा रे
अरी दाई री घोडे पै हो जाना सवार पैदल मैं चलूँ दाई री
अरे राजा रे दाई ने मारी है पौड सुगन मेरे भले हुए राजा रे
अरे राजा रे भोर हुआ भौ पाटती होलर (बच्चा) हो लिये राजा रे
अरे राजा रे दे दो हमारा नेग जो तुमने हम से कह दिया राजा रे
अरी दाई री कमरे से हो जा बाहर सिर हमारा फूटता दाई री
अरी बहू री दो बरस की बात फिर बुलाओगी बहू री।

मर्यादा पुरुषोत्तम राम की साध्वी अर्धांगिनी महारानी सीता गर्भकाल मे निष्कासित कर दी गई थी। सीता ने भले ही वह व्यथा मौन होकर बन मे सहन कर ली हो पुरुषो ने चिन्ता न की हो किन्तु नारी की वेदना को नारी–हृदय क्यो भुलाता अन्तत इस वेदना को वाणी देकर मुखरित कर ही दिया पढिए इस गीत को –

सिया खडी–खडी पछताय लव कुश बन मे हुए
जो लाला तुम होते अवध मे तो दादी लेती बलाय लव कुश बन मे हुए
सिया खडी खडी पछताय।
जो लाला तुम होते अवध मे तेरी चाची लेती बलाय लव कुश बन मे हुए
जो लाला तुम होते अवध मे तेरी मामी लेती बलाय
सिया खडी खडी पछताय।

आधी रात मे जब प्रसव–वेदना से ग्रसित बहू को प्रसव–हेतु, एक–एक करके घर का कोई व्यक्ति सवा गज अथवा सवा हाथ जगह घर मे देने को तैयार नहीं और अनाचारी पति तो उस विपदग्रस्ता को घर से निकाल देता है। वह जगल मे निकल जाती है उसे अपनी नही अपने होने वाले शिशु के लिए ओढना बिछौना घुटटी की चिन्ता है।

दर्दो की मारी बहोडिया ससुर धोरे आई रे जेठ धोरे आई रे
ससुर जी सवा गज जगह बताइये दर्द आधी रात के
दर्दो की मारी बहोडिया देवर धोरे आई रे
देवर जी सवा हाथ जगह बताइये दर्द आधी रात के
दर्दो की मारी बहोडिया राजा धोरे आई रे
राजा जी सवा हाथ जगह बताइये दर्द आधी रात के
गौरी महलो से देऊँगा निकाल चली तो जाइये बाप के
(और वह विवश घर से निकल जाती है जगलो मे)

भोर हुआ भो पाटगी कोई होलर (नवजात लडका) ने शबद सुनाये
विपत मे सम्पत हुए
काहे का करूँ उढैना अर काहे का बिछौना क्या रे रगड घुटटी पियाऊँ
विपत मे सम्पत हुए।
पत्तो का उढैना अर पत्तो का बिछौना अर वनफल रगड घुटटी पियाऊँ
विपत मे सम्पत हुए।
जो लाला होते बाबा के घर हे ताऊ जी के घर
बजने लगते ढोल धमाके विपत मे सम्पत हुए।

गुड की एक भेली लेकर बहन अपने भैया के घर आह्लाद पूर्ण गीत गाती हुई यथासभव अपनी सहेलियो के साथ पहुँचती है। वहॉ एक–दो दिन गीत गाये जाते हैं। इस प्रकार न्यौता जाता है। बहन चाहती है कि विवाह के दिन उसका भैया प्रात काल ही भात लेकर पहुँच जावे। आज उसकी दृष्टि मे रघुवशी राम से उसका महत्व कम नही –

मेरे भैया रघुवीर भात सबेरा लाना
मेरे माथे को टीका लाना टीके पर रत्न जडाना
गले को लाना जजीर रे भैया रघुवीर––––
हाथो को कगन लाना पैरो का पायल लाना
बिछुओ पर रत्न जडाना ओ भैया रघुवीर–––

वह चाहती है कि उसका भैया मण्डप की शोभा बढाने के लिए आवे अवश्य चाहे खाली हाथ ही सही–

कुछ न हो भैया तो खाली हाथ आ जाना
मेरे मण्डप की शोभा बढाना रे भैया रघुवीर भात सवेरा लाना।

भाती अपनी बहन से तिलक चढवाने एव भात देने के लिए चौकी पर चढता है। अपने भैया से आज तो वह अपना दैन्य प्रगट करने मे भी अपना अपमान नही समझती वह कह ही देती है –

भैया अच्छा भरियो भात बहन टोटे मे
थाली मे डेड हजार मोहर लोटे मे
मै लाल चुनरिया ओढ खडी कोठे मे
मै जुडवा टीका पहन खडी कोठे मे
भैया अच्छा भरियो भात बहन टोटे मे आदि।

वर ससुराल मे श्वसुर के द्वार पर बरोठी के समय जब आता है तब अपने गीत के द्वारा वर के सौन्दर्य से प्रसन्न सखियॉ दूर बैठी हुइ नव वधू को समाचार देती हैं–

बनी तेरा बनडा री चन्दा की उनिहार
माथे पर मुकुट बिराजे री कॉधे पर जनेऊ साजे
वह बॉध रहा हथियार————

इससे पूर्व दुल्हन उत्सुक है कि वह किस प्रकार अपने पति के दर्शन करे वह अपनी विवशता प्रकट करती है –

मै कौन बहाने जाऊॅ रगीला आया है बागो मे
हाथो मे डलिया फूलो की है लाडो
तुम मलिन बनकर बागो मे जाओ
रगीला आया है बागो मे।

इधर बनी दर्शनो के लिए व्याकुल है और उधर बनडे राजा अपनी प्रेयसी के बोल सुनने के लिए बेचैन है –

दुरज्जे से बोल सुना जा हरियाली सुना जा शहजादी
मैं तेरे कारण आया।
तेरे बाबा ने बुलाया जब आया तेरे माथे का टीका लाया
हरियाली लाया शहजादी मैं तेरे कारण आया
तेरे भैया ने बुलाया तब आया तेरे गले की माला आया।
हरियाली लाया शहजादी मैं तेरे कारण आया
तेरे मामा ने ताऊ ने दादा ने सभी ने बुलाया है
और तेरे लिए बनी सग बहुत सारे गहने लाया हूँ।

हास–परिहास ऐसे समय की शोभा है –

मुर्गा बोला कुकडू कूॅ, काने बराती आये क्यूॅ,
हमने बुलाये टॉगो वाले ये लगडे आये क्यूॅ,
मुर्गा बोला कुकडू कूॅ——
हमने बुलाये बालो वाले ये गजे आये क्यूॅ,
मुर्गा बोला कुकडू कूॅ——

और एक–एक करके बरातियो मे सब दोष दिखा दिये गए।

दुल्हन अपने पति के घर जाने के लिए कितनी बेचैन दिखाई गई है बन्ने का घर अब उसी का हो गया है। वहॉ होने वाले हानि–लाभ उसी के तो है। बन्ना यहॉ है और घर पर सब मिलकर माल की लूट–खसोट कर रहे होगे।

तू तो किस के सग ब्याहने आया रे बने
तू ने घर रखवाली कौन छोडी रे बने
मैं तो बाबा सग ब्याहने आया री बनी
मैने घर रखवाली दादी छोडी री बनी
मुझे जल्दी विदा कर ले चले रे बने
तेरी दादी का भरोसा मुझे ना है रे बने
वो तो खावे रे लुटावे घर खोवे रे बने
मैं तो जोडूॅ रे जगोडू थोडा खाऊॅ रे बने

पिता का पर छोडते समय पुत्री अपने मनमोहन भैया के द्वारा दादा दादी मामा मामी एव पिता आदि से कहती है–

मैंने छोडा बाबुल तेरा देश कि फिर भी बुला लेना
मैंने छोडा सहेलियो का साथ कि न्योता जिमा देना
मेरे मन मोहन भैया चाचा जी से चाची जी कह देना
मैंने छोडा बाबुल का देश कि फिर भी बुला लेना
मेरे दादा से दादी——

आज लाडो को ससुराल जाना है सोलह श्रृगार किये जा चुके है। इस गीत मे उसके सखियो के प्रश्नोत्तर हैं –

चली कौन से देश लाडो तू सज–धज के
जाऊॅ पिया के देश बहनो मै सज–धज के
आज तेरे बाबा जी रोये जी भर के
दादी रानी ने खाई है पछाड
आज तेरे चाचा जी रोये
चाची रानी ने खाई है पछाड
आज तेरे चाचा जी रोये
चाची रानी ने खाई है पछाड
आज मामा जी रोये
मामी रानी ने खाई है पछाड
लाडो तू सज धज के——————

लाडो ससुराल जाने को तैयार है डोला सज चुका है उस समय –

मेरी लाडो चली है ससुराल टप–टप ऑसू पडे
दादा ने डोला कस दिया दादी रानी ने खाई है पछाड
टप टप ऑसू पडे।
चाचा ने डोला कस दिया चाची रानी ने खाई है पछाड
टप टप ऑसू पडे।
भैया ने डोला कस दिया भाभी रानी ने खाई है पछाड
टप टप ऑसू पडे।

आसुओ से भीगे और अवरूद्ध कण्ठ से निकले इस शिक्षाप्रद गीत को भी देखिए –

सास घर जाना लाडो मेरी
रोज सबरे उठ जाना
चरण सब के छूना लाडो मेरी
नहाय धोय कर पूजा करना
रामायण नित पढना लाडो मेरी
सो लाडो मेरी बढिया सा भोजन बनाना
ससुर जी को जिमाना लाडो मेरी
सो लाडो मेरी सब को खाना खिलाना
सब से पीछे खाना लाडो मेरी
लाडो मेरी सास ननद से मिलकर रहना
वही तो अब अम्मा तेरी लाडो मेरी।

बहन बहुत दूर देश मे ब्याही है और वह बीमार है सावन का महीना है भैया खाली हाथ तो जायेगा नही। वह अपनी अम्मा से कहता है –

करदो री करदो अम्मा कोथली
अरी अम्मा करदो न मगद कसार बहना की ले जाऊ कोथली
ले जा तो ले जा बेटा कोथली अरे बेटा ले जाओ मगध कसार।

कसार की कोधली तैयार हुई भैया लेकर दूर बहन के घर पहुचता है सब मिलते हैं किन्तु दुखी से लगते हैं बहन नही दिखाई पडी तब वह मौसी से पूछता है –

अरी मौसी कहा गई है मेरी बहन
बहना की लाया हू कोथली।
बेटा बागो मे जाकर देख बहू वहा पर झूलती
अरी मौसी बागो मे तो हम फिर चुके वहा न मिली।

मेरी बहन बहना की लाया हू कोथली

अरे बेटा छत पर चढकर देख

रे बेटा बहन जावेगी तुम्हारी दीख

बहना की लाया कोथली।

अरी मौसी कोटठे पर चढ हम देखते

चिता मे लग रही आग बहन मेरी मर गई।

X x x x x

सावन मे गाया जाने वाला एक अन्य गीत देखिए –

बारह बरस मे जोगी आ लिये

कोई आये हैं अम्मा दरबार पपीहा बोला बाग मे।

भिच्छा तो देकर अम्मा रो पडी।

कोई तेरी सिक के मेरे लाल पपीहा बोला बाग मे।

तू तो री अम्मा बावली

कोई तेरे करमो मे बेटा नाय पपीहा बोला बाग मे।

बारह बरस मे जोगी आ लिये

कोई आया है बहना दरबार पपीहा बोला बाग मे।

भिच्छा तो देकर बहना रो पडी

अरे जोगी तेरे सिकल के मेरे भ्रात पपीहा बोला बाग मे।

तू तो री बहना बडी बावली

कोई तेरे करम मे भैया नाय पपीहा बोला बाग मे।

X X X X X X

अब एक हास्य व्यग्य से भरपूर लोकगीत देखिए। इस गीत को लडकिया सन्ध्या काल साझी की आरती उतारते समय नव–रात्रियो मे गाती है –

मॉ भैया किघे ब्याहा झबूखडा

बेटी खटटे डोले ब्याहा झबूखडा

मॉ भाभी कैसी आई झबूखडा

बेटी ऑख चना सी मुँह बटुआ सा

चने चबाती आई झबूखडा

मॉ भाभी क्या–क्या लाई झबूखडा

बेटी आठ बिलैया नौ चकचुन्दर

सोलह चूहे लाई झबूखडा
मॉ भाभी कैसे खावे झबूखडा
बेटी आला सा मुँह बावे झबूखडा

देवउठानी एकादशी के अवसर का एक गीत –

नई टोकरी नई कपास देव उठेगे कातक मास
उठ नारायण बैठ नारायण उठूँ सै उठाऊँ से
छीके परी चार पूरी चार पूरी घी चुपडी
आप खाऊ बामन देऊँ बामन दीजै बूढी गाय
रपट पडी बामन के द्वार नई टोकरी नई कपास
देव उठेगे कातक मास।

इसी प्रकार देवोत्थान एकादशी की रात महदी की रात' कही जाती है। इस अवसर का एक गीत –

मेहदी सुतन धन जाय अगुली मै कॉटा लागा।
ननद भावज मि तोडती रे
दोनो ने बदली होड रे अगुली मे कॉटा लागा।
ननद की भर गई वोचनी
भावज की भर गई गोद रे अगुली मे कॉटा लागा।

सॉझी गीत

आश्विन मास की नवरात्रियो मे सॉझी मिटटी को बारीक पीसकर अच्छी तरह माड कर बनाई जाती है। इस आकृति मे देवी के रूप मे मान्यता मानी जाती है। कुछ परिवारो मे व्रत एव पूजन के दिन देवी का थापा भी रखा जाता हे। सॉसी पर रात्रि मे बच्चे विशेषकर कन्याये समूह मे सॉझी गीत गाती हैं –

सॉझी माई आरता री आरता
सॉझी माई आरता

इन्ही दिनो छोटी उम्र के लडके भी झुण्ड बनाकर टोले–मोहल्लो मे 'टेसू गीत गाते है और श्रोतागण उन्हे इनाम मे रुपये–पैसे देते हैं। इन बच्चो के हाथो मे दीपक और तरह–तरह की सजी हुई आकृतिया होती है। ये गीत रात्रि मे गाये जाते हैं –

मेरा टेसू यही अडा खाने को मॉगे दही बडा।
दही बडे मे मिर्चे बहुत आगे देखो कॉजी हौस।।



लोक रगमच

लोक मच सामान्य नागरिको के मनोरजन के लिए साधारण भाषा को लेकर जनमानस का अपना मच है। जैन मुनियो के राक्षक उत्तरी भारत के सतो का भक्ति आन्दोलन तथा धनाढय जमीदारो का सहयोग लोक मच के आदि आधार स्तम्भ बने है। हेमचन्द्र सूर्य ने अपने काव्य मे उस काल की चर्चा की है--वह कहते है कि भाडो के अभिनय को देखकर नागरिक और ग्रामीण समाज समान रूप से उल्लसित होते थे। राजाओ अथवा सेठो द्वारा निर्मित मन्दिर जनता के उपदेश मनोरजन तथा नाटको के काम आते थे। भिन्न--भिन्न भागो मे विविध नामो मे इस रग परम्परा की शैलिया विकसित हुई है।

कवि मौलाना गनीमत ने अपनी नौरगे--इश्क नामक पुस्तक मे लिखा है-- आज शहर मे अजब किस्म के लोग आये हैं जो एक नाजो अन्दाज के साथ नकल करते है और नामो साज के साथ शैजदे दिखाते हैं। नाज और नक्ल मे यह उस्ताद है। इनकी आवाज भी मीठी है। वे कभी मर्द कभी औरत और कभी बच्चे की नकल करते हैं। कभी मुसलमान कभी फिरगी और कभी कश्मीरी बन जाते है। गरज हर किस्म का जलवा दिखाते है और हरत रह के रश्वा जमाने से नाम लेते हैं।

डॉ० सोमनाथ ने इन लोक नाटको पर आपत्ति उठाई है। उनका कथन है-- 'सब रचनाए कविता मे हैं। इनमे पात्रो का प्रवेश प्रस्थान का कोई सकेत नही अक विभाजन और दृश्य परिवर्तन का कोई चिन्ह नही। जाति निर्देश के लिए छन्दो का सहारा लिया गया है लेखक स्वय अनेक स्थानो पर एक पात्र बन जाता है। अगर गहराई से विचार करे तो उपरोक्त ही मौलिक स्वरूप है।

कुरू अचल ने अनेक लोक रग परम्पराओ को अकुरित पल्लवित एव पुष्पित किया है जैसे--यात्रा नौटकी स्वाग आदि। यहा लोक रग की चार प्रमुख शैलिया प्रचलित है --

1 यात्रा
2 नौटकी
3 स्वाग
4 रामलीला

यात्रा

यात्रा का शाब्दिक अर्थ जूलूस है। नृत्य सगीत एव अभिनय के माध्यम से देवोपासना की सगीतमयी स्तुति यात्राए ऋग्वेद मे वर्णित है।

जिस प्रकार बगाल मे जयदेव और चैतन्य का यात्रा नाटक के विकास मे योगदान है उसी प्रकार उत्तर प्रदेश के मेरठ निवासी पुरुषोत्तम दास वतन का नाम भी

स्वर्णाक्षरो मे लिखा जायेगा। सबसे पहले मेरठ सदर कैट से शक्ति यात्रा निकाली गयी थी। जिसकी प्रथा आज भी पूर्ववत है।

इस यात्रा मे काफी सुधार हुआ है। स्थायी मच के स्थान पर ठेलो द्वारा चल मच पर लघु धार्मिक नाटको के मचन होने लगे है। हापुड वर्तमान गाजियाबाद जनपद तो यात्रा रगकर्म का गढ माना जाता है। यहा अखाडा सगठन समिति का निर्माण किया गया जिसके प्रधान चौधरी कैलाश चन्द्र जी है। अखाडे और साथ मे उनकी गुरु परम्परा निम्न प्रकार है –

1	कबाडी बाजार का अखाडा	–	गुरु चौधरी कैलाश चन्द्र
2	खारी कुए का अखाडा	–	गुरु राजो रोहतगी
3	पक्के बाग का अखाडा	–	गुरु मुकट खलीफा
4	चाह कमाल का अखाडा	–	गुरु सुरेश चन्द्र धीगले
5	तगा सराय का अखाडा	–	गुरु पासो जी
6	सुनारान का अखाडा	–	गुरु त्रिलोकी जी
7	बृज मोहल्ला का अखाडा	–	गुरु चौधरी कैलाश चन्द्र
8	जवाहर गज का अखाडा	–	गुरु पुरुषोत्तम दास
9	खिडकी बाजार का अखाडा	–	गुरु नकाबपोश
10	आर्य नगर तहसील चौपले का अखाडा	–	गुरु चेतन प्रकाश जी
11	नेहरू लैन का अखाडा	–	गुरु प्रकाश चावल वाले

ये यात्रा नाटक बगाल के यात्रा नाटको से एकदम अलग है। यहा पद्य की जगह गद्य ने ले ली है। इसमे सम सामयिक सामाजिक एव राजनैतिक प्रसग लिये जाते हैं तथा दृश्य विधान कौतूहल एव रोमाचकारी प्रभाव वाले होते हैं। जैसे प्रियदर्शनी इन्दिरा एव शिमला समझौता आदि उल्लेखनीय लोक नाटक हैं।

नौटकी

महाकवि प्रसाद जी के अनुसार नौटकी' शब्द नाटक शब्द का ही अपभ्रश है। जिसमे भाडो द्वारा हसी–मजाक की बहुलता होती है। कुछ विद्वानो का मत है पजाब की नौटकी नामक राजकुमारी के नाम से नौटकी की उत्पत्ति मानते हैं। कुछ विद्वानो का कथन है कि बन–ठनकर रहने वाली वेश्या को नौटकी कहते हैं तो कुछ विद्वान भगत' का अन्य नाम ही नौटकी मानते हैं।

कौरवी जनपद मे मेरठ नौटकी नाटक का गढ रहा है। आदिकाल मे नौटकी के नाटक पौराणिक हुआ करते थे लेकिन बाद मे श्रृगारिकता का पुट आने से नौटकी से शिष्ट समाज कटने लगा और सामान्यजन की अभिरूचि का पर्याय ही बनकर नौटकी विधा रह गई।

कौरवी अचल की नौटकियो की सबसे बडी विशेषता यह है कि भाषा शुद्ध हिन्दी है और बृजभाषा का साहित्यिक पुट है। सबसे अधिक आश्चर्य चकित करने वाली बात यह है कि इन नौटकियो के लेखक अधिकाश मुसलमान है। जिनमे प्रमुख नाम इस प्रकार है –

गुलशन हज्जी

आपका जन्म 1856 ई० मे गुजरी बाजार मे हुआ। हज्जी जी ने 64 नौटकिया लिखी हैं इसीलिए आपको नौटकी का बादशाह के नाम से नवाजा जाता है। नल–दमयन्ती रूप–बसन्त लव–कुश कृष्ण–सुदामा भक्त अमरीश भक्त प्रहलाद शकुन्तला विद्या सुन्दरी मैना सुन्दरी मोरध्वज सत्यवान–सावित्री सती सुलोचना रूकमणि–मगल हीर–राझा युसुफ–जुलेखा नीलम–परी इन्दर–सभा आदि बहुत प्रसिद्ध नौटकिया हैं। आपने स्वय अपना परिचय इस प्रकार दिया है –

दोहा– *गुजरी बाजार का वासी हू मै हज्जी मेरा नाम*
शुद्ध हिन्दी मे रचना करना मेरा उत्तम काम।

सत्यवान सावित्री नौटकी का एक अश देखिये –

पद–पद्मो की सेवा करना धर्म रहा है नारी का।
पिया हमारे परमेश्वर है दिया अधिकारी है सारी का।।
पूनम रे चन्दा निर्मल है कोष मिला उजयारी का।
बुरा न मानू कन्ता प्यारे मिली तुम्हारी गारी का।।

हज्जी द्वारा युसुफ जुलेखा नौटकी का एक अश –

दिलवर जानी अजहु न आये कहा लगाई देर बताऊ
कुन्दन काया काली पड गई किस विधू होय निभाओ।
सगरी रजनी रो–रो काटी और न मोहे सताओ।
नीरज लोचन असुवॉ टपके और न विलम लगाओ।

रहमत

आपका जन्म 1888 ई० मे हुआ। शाहपीर दरवाजा मेरठ के निवासी थे। आपने नौटकी के प्रचार के लिए अपनी मण्डली की स्थापना की और प्रदर्शन हेतु पजाब प्रात तक

का दौरा किया। आपके गले मे मुरकी थी और गायन मे बहुत माधुर्य और रसीलापन था। आपने १० नौटकिया लिखी–ढोला– मारू राजा भोज सरनदे शाही लकडहारा भरथरी–पिंगला पद्मावत–रतनसेन सरवर–नीर और राजा हरिश्चन्द्र प्रसिद्ध नौटकिया हैं। प्रतीकात्मक शैली एव शुद्ध प्रेम पर आधारित एक चबौले का उदाहरण प्रस्तुत है –

अरी सलिला कहा जाती है पिया तो दूर घर बसी।
बडे बेदरदी निठुर छबीले हरजाई के पाले फसी।
रतन भरे इतराते यो ही नदी नाथ है खारी।
सौतन सो लग गई है अखिया सुध नही ले तुम्हारी।।

कौरवी क्षेत्र मे दस नौटकी कारो के नाम और मिलते है लेकिन उनकी रचनाए उपलब्ध नही है–राजन बाबू, बन्दू माट मनिराम शुक्ल कुज बिहारी लाल रस्तोगी श्याम सिह पाठक सैयद हसन खा मलखान गुरू नौबत सिह तथा माधो सानी।

प० परशादी लाल

आपका जन्म मढी मे सन 1903 ई० मे हुआ। आप प लज्जाराम के शिष्य हैं। मोहल्ला पडियान मे रहते थे। इनकी लिखी नौटकियो मे–हकीकत राय क्षत्रानी पद्मनी राजा रघुवीर सिह राजा मोरध्वज बेनजीर बदरे मुनीर जहारपीर चन्दकिरन मदन सैन पूरनमल रिसाल सीलादे कत्ले इश्क सेठानी सौदागर बच्चा बीन बादशाहजादी पजाब की हूर माहीगीर दिलरूबा लैला मजनू, राज भोज ब्रमदे कीचक द्रौपदी विराट पद्मावत हरिश्चन्द्र चन्द्रवती– नासकेत राजा नल दमयन्ती तथा जानी चोर महकदे आदि है। आपकी नौटकी के सवाद के कुछ अश दृष्टव्य है –

दोहा– *बागो की ल्यारी कटी गोरी कवर निहाल।*
गडवा मरा है नीर से भोजन का ले थाल।।

चबौला– *भोजन का लै थाल हाथ मे चल दई राजकुमारी।*
दिलपे डर नही करे नाजनी झुकी रैन अधियारी।।
मारग मे गई पहुच अछोया सुनियो बात अगारी।
चार चोर रास्ते मे मिल गये ना घबराये–क्वारी।।

राधेश्यामी तर्ज पर आपकी नौटकी का एक पद्य प्रस्तुत है –

बाध लिया प्रहलाद कवर को बाहर शहर से लाये हैं।
वहा राजा भी मौजूद खडे नर नार भी देखन आये है।।
ठाके तेज जल्लाद भारत सब खुशी से हो रहे खडे।
जौन सी मारे तेग तुरत धरनी के ऊपर टूट पडे।।

सौ लो से क्या हजार पान सौ तेग हो गये टुकडे।
ईश्वर अपने भक्त के कुल पडदे से भेट रहा दुखडे।।
इस तरह से भक्त वो नही मरा वे और क्या जतन बनाते है।
प्रहलाद को मात और मत्री भी क्या लडके को समझाते है।

स्वाग

सस्कृत साहित्य मे रूप धारने को रूपक की सज्ञा दी जाती है ठीक उसी प्रकार जन सामान्य की भाषा मे रूप गाठना रूप भरने को स्वाग जिसका अपभ्रश साग कहा जाता है। डॉ० दशरथ ओझा ने इसकी उत्पत्ति डोमनियो के गीतो मे नवी शताब्दी माना है। डॉ० नगाइच और मुदगल शास्त्री ने अकबर का शासन काल माना है। सगीत शास्त्री तानसेन ने अपनी पुस्तक रागद्वीप मे गुजराती ब्राह्मणो को श्रेय दिया है।

कुरू लोक मे सदा सुखराम व अम्बाराम गुजराती ब्राह्मणो द्वारा स्वाग का प्रचलन हुआ है। इस शैली को सनातनी शैली के नाम से भी जाना जाता है। सनातनी शैली के भी दो रूप है–शिव शैली और भगवती शैली। इन शैलियो मे अपने इष्ट की पूजा–अर्चना एव मगलाचरण द्वारा ज्योति जगाकर स्वाग आरम्भ होता है। इस सनातनी शैली का ही नाम भगत शैली भी है। मेरठ अचल मे इसी शैली की मान्यता अधिक रही है। इस सनातन शैली के भी प्रमुख रूप से दो भेद है –

1 बैठी ताल (शास्त्रीय सगीत)
2 खडी ताल (सयुक्त सगीत)

बैठी ताल के स्वाग

स्वाग खुले मच पर होता है। एक विशाल मच तख्तो द्वारा निर्मित होता है। इसी मच पर साजिदे और अभिनेता बैठते हैं। पुरुष ही स्त्रियो का वेश धारण करते है। अगर राजा या रानी का दृश्य है तो उसका निर्माण अलग मच पर भव्यता से पूर्ण होता है।

इस शैली मे प्रयोग होने वाले छन्द को चौबोला कहते हैं। चौबेले से पहले दोहा और फिर चौबोला गाया जाता है। छन्द दोहा कली छन्द कडा ठेका इस शैली मे प्रयुक्त होते हैं।

बैठी ताल के स्वाग शास्त्र सम्मत होते हैं और रात्रि 11-12 बजे से प्रारम्भ होकर प्रात तक चलते है। इन स्वाग का वातावरण बडा शुद्ध होता है। अधिकाश कलाकार अच्छे सुसस्कृत परिवारो के होते हैं। इनाम वगैरह भी मिलता है तो अपने गुरू को दे देते हैं। धन के लिए स्वाग न करके स्वान्त सुखाय के लिये करते हैं। इस स्वाग मे पखावज ढोलक दिलरूबा सारगी तबला मुरज–मजीरा और वीणा वाद्य बजाये जाते हैं। हारमोनियम की

ईजाद के बाद यह वाद्य और बढ गया था। एक मजेदार बात देखने मे आई है कि स्वाग के कलाकार अपने स्त्रियो के स्वर्णाभूषण तक स्वाग के कलाकारो को लाकर पहना देते है। मेरठ नगर मे लगभग 100 बैठी ताल नाटक के अखाडे थे। जिस प्रकार आज हम दल सस्था केन्द्र सस्थान के नाम से सास्कृतिक दलो की पहचान करते है। पहले समय मे अखाडे से सम्बोधन करते थे। प्रमुख अखाडो के नाम इस प्रकार है –

1 अखाडा बनियापाडा
2 अखाडा मोरीपाडा
3 अखाडा खारी कुआ
4 अखाडा भाटवाडा
5 अखाडा शाहपीर दरवाजा
6 अखाडा शीशमहल
7 अखाडा पत्थरवालान
8 अखाडा ठठेरवाडा
9 अखाडा डालमपाडा
10 अखाडा खैरनगर
11 अखाडा बागपत
12 अखाडा रेलवे रोड
13 अखाडा मन्नू चौक सदर
14 अखाडा केसरगज

प० सदासुख राम (सन् 1524)

आप सस्कृत के प्रकाड पडित थे। आपने चार बैठी ताल के स्वाग की रचना की है। चन्द्रहास राजा अज सव्यसाची और सती अजना। कहा जाता है एक बार राजा अकबर ने इन्हे दिल्ली आमन्त्रित किया था और स्वाग देखकर पुरस्कार प्रदान किया।

प० रामलाल शर्मा (सन् 1930)

आपकी सुदामा नाम की रचना बहुत प्रसिद्ध हुई है। इनकी दूसरी मौलिक कृति पिगला (राजा भरथरी) है। गणपति गणेश की वन्दना मे आपका सौन्दर्य–बोध देखिये –

दोहा– *एक रदन गजबदन तन सदन करो मम अग।*
दहन करो कलिमल सकल कहन करो निरभभ।।

चौबोला– *सुमरिये गणेश देव आदि प्रतापी।*
लम्बोदर नाम प्रथम पूजा थापी।
माथे सिन्दूर गले मुतियन माला।
चार भुजा एक दन्त विश्व उजाला।
औगुण सब दूर सकल गुण के राशी।
अष्ट सिद्ध आगे नित ढाडी दासी।

प० अम्बाराम (सन् 1528)

आपने केवल एक स्वाग राजा हरिश्चन्द्र की रचना की है।

दोहा– *सब दिन शारद सुमरिये सिद्ध होय सब काज।*
विध्न–हरण मगलकरण राखन जन की लाज।।

चौबोला– *राखन तुम लाज चढी हस भवानी।*
दीजै वरदान बुद्धि–विधा वानी।।
आवै सुरताल जो जन धावै।
हो मानस भरपूर शरण शीश नवावै।।

प० वशीधर शुक्ल (सन् 1600)

आपको पिगल का पूर्ण ज्ञान था। सस्कृत भाषा के परम विद्वान थे। आपने पद्मावत रतन सैन का स्वाग रचा है। यह लोक कथा पर आधारित है –

दोहा– *सरस्वती को सुमर के गुरु को शीश नवाय।*
बशीधन आधीन पर–दुर्ग होत सहाय।।

चौबोला– *आया हू शरण मे तो ज्वाला तेरी।*
हुजिये सहाय लाज रखिये मेरी।।
कठ मे विराजो मेरे अब ही ज्वाला।
दर्शन बिन तेरे उठ रही स्वाला।।

चौबोला– *आया बनजारा एक सिहल द्वीप।*
लाया सौगात रतन मोती सीपी।।
ब्राह्मण एक नाही सग सुआ लाया।
पडित कविराज वेद शास्त्र मुख से गाया।।

खडी ताल के स्वाग

खडी ताल परम्परा के प्रणेता धनिया और मनिया है। आप दोनो सुप्रसिद्ध कलावत रहे है। बैठी ताल और खडी ताल मे मच विधान और छन्द विधान मे विशेष अन्तर नही है।

इस ताल के स्वाग व्यवसायिक पक्ष को अधिक महत्व देते है। इस ताल का मुख्य वाद्य नगाडा है। लघु तपके के लोग इस ताल के स्वाग मे अधिक रूचि लेते है। ये स्वाग चलताऊ हसी वाले जन–साधारण को प्रभावित करने वाले श्रगारिक पक्ष प्रधान होते है। इन नाटको मे अश्लीलता का पुट पर्याप्त मात्रा मे होता है और साहित्यिकता का बोध कम होता है। इसका प्रभाव ग्राम्य क्षेत्रो मे अधिक है।

खडी ताल के स्वाग के अखाडो की सख्या 1857 ई० से 1957 ई० तक इस प्रकार है–

1 प० माखन लाल का अखाडा (गढमुक्तेश्वर)

2 प० दीपचन्द का अखाडा (प० दीपचन्द कथावाचक भी रहे है)

3 गोपाल सहाय का अखाडा

4 दीनानाथ का अखाडा

5 नत्थू राम का अखाडा

6 सेढूसिह का अखाडा

7 गुरू सत लाल का अखाडा

8 शकरदास का अखाडा

9 अखाडा मान सिह

10 रामसिह नाई का अखाडा

11 प० बलवन्त सिह बुल्ली का अखाडा

इस अखाडे के गुरू प० बलवन्त सिह बुल्ली रहे है। आप उच्च काटि के गायक भी है। आपने अपनी कला से शहर और ग्राम दोनो क्षेत्रो मे अत्यधिक नाम कमाया है।

12 फूल सिह अखाडा (आप भजनी भी रहे हैं)

13 अखाडा घीसाराम

बडे भाग से हमको नेक कमाई मिल गई।
मानो भगीरथ को जैसे गगे माई मिल गई।।
बुरे की बुराई भले की भलाई मिल गई।
जैसे लका मे हनुमान को जनक की जाई मिल गई।।

(गरीब की दीवाली बुन्दूमीर)

दोहा– *मै निर्धन कगाल हू लक्कड नार गवार।*
क्या मतलब है आपका जो करती हो गुफ्तार।।

चौबोला– *करती हो गुफ्तार नार क्या मतलब हमे सताने का।*
मुश्किल से गुजरान करू रहे तोडा पीने खाने का।।
तुम वन खड के मालिक हो मै काला दुर्गल बाने का।
आज दो लकडी तोडने दो कल को फिर नही आने का।

(सत्यवान–चन्दन भाट)

दोहा– *हासी मै करती नही बीच मेरे भगवान।*
रथ आया एक पलक मे भाबी साची मान।।

चौबोला– *भाबी साची मान आप की करती नही हसाई।*
तेरे पिता जी के चाकर को सब कह रहे जादरे राई।।
माती को पहले हसते थे अब कर रहे बढाई।
मनसा पूरन हो जावेगी भाबी क्यो घबराई।।

(नरसी का भात नत्थू दास)

दोहा– *कागा सब तन खाइयो चुन–चुन खइयो मास।*
दुई नयना मत खाइयो पिया मिलन की आस।।

चौबोला– *पिया मिलन की आस नही जाना दूभर होगा।*
सरग नरक बन जाय जीवन भूभर होगा।।
मरे चकोरी तडप–तडप चन्दा बिन जीवै कैसे।
बिना सलिल के मछली अमृत पीवै कैसे।।

(दीपचन्द)

सन 1957 ई० से 1972 ई० तक के अखाडो के नाम–

1 रामस्वरूप का अखाडा।

2 रघुवीर शरण का अखाडा।

3 नत्थुदास का अखाडा।

4 बुन्दुमीर का अखाडा।

5 चन्दुलाल (चन्दन) भाट का अखाडा। (आप नेत्रहीन थे)

इनमे सौन्दर्य बोध एव यथार्थवादी चित्रण देखिए –

लावनी– *सुनो शिरोमणी माता जी म्हारे पडी कर्म मे चूक।*
हम जिस छाया बैठते म्हारा कर गया चन्दन रूख।।
छिन गई तसल्ली हुआ सबर पर काबू री।
जहा रहा करते थे शेर रह गये वहा आबूरी।।

(सावित्री बुन्दुमीर)

सत्तर–अस्सी वर्ष पहले स्वाग (नौटकी) मे मर्दाने जनाने पात्र सजाये जाते थे। सजाने के स्थान से उन्हे चौकियो पर उठाकर रगमच पर लाया जाता था। मशाले जलती थी और जयकारो के बीच आकर पात्र मच पर बैठते थे और गायक के पीछे एक चिटठा बाचक रहता था। वह गायक को छन्द की पक्तिया धीरे से सुनाता रहता था और गायक गाता था। यही क्रम नाटक मडिलियो का था नैपथ्य से सवाद बोला जाता था।

स्वाग मे पात्र स्वय अपना गाना गाता है चिटठा वाचक का अब रिवाज नही है। साग अब रात्रि मे ही न होकर दिन मे भी होते है चौबोला का स्थान रागनियो ने ले लिया है जिसे धीगताना नाम दिया गया है। दीपचन्द दीना रामसिह चन्दू भाट (चन्दरवादी) आदि गायक धीगताना के प्रवर्तक है इनके गानो मे हरियाणा भाषा का पुट रहता है और अडे–कडे से आदि शब्दो का प्रयोग होता है जो जनपदीय भाषा से भिन्न है। अनेक स्थलो पर अश्लीलता का प्रदर्शन भी होता है।

स्वागो मे एक विदूषक (नकलची) की भी सृष्टि की जाती है जो ग्रामीण जनता को हसाता है।

उ प्र के प्रसिद्ध सागी श्री चन्दरवादी से मिलने बागपत गये। वहा पता चला कि ग्राम नगला मे उनका स्वाग चल रहा है। गाडी विपरीत दिशा मे दौडाई। साग आरम्भ होने वाला था चन्दरवादी जी से साक्षात्कार हुआ।पता चला बादी भाट का अपभ्रश है। सत्यवान सावित्री का स्वाग है जिसमे 70 वर्षीय चन्दरवादी स्वय नायक सत्यवान की भूमिका कर रहे है। नक्कारा तुमुल ध्वनि से बज रहा है। ग्रामो से दर्शको के झुण्ड के झुण्ड आ रहे हैं।

मगलाचरण के बाद स्वाग आरम्भ होता है। इस वृद्धावस्था मे चन्दरवादी की क्या चटखीली एव मधुर आवाज है। स्वाग मे इनके पुत्र सुरेश कुमार एव उमेश कुमार भी जुडे है। मच के चारो ओर दर्शक बैठे है। मच के मध्य भाग मे अभिनेता एव साजिन्दे बैठे हुए है। अभिनेता इन्ही के चारो ओर मच पर अभिनय करते हैं। ध्वनि यत्र (माईक) का प्रयोग नही होता है। कलाकार ऊचे स्वर मे सवाद बोलते है और पचम स्वर मे राग–रागनी गाई जा रही है।

पुरुष ही स्त्री कलाकारो का वेश धारण किये हुए है। पुरुष पात्र प्राय अपनी ही सामान्य वेशभूषा धारण करते है। अपने पात्र नाम से ही परिचय देते है। कही दूसरे स्थान

पर जाना होता है तो दृश्य परिवर्तन नही होता बल्कि स्वय अभिनेता उठकर कहता है– लीजिए अब मैं हस्तिनापुर आ गया हू अथवा देखिये सामने दरबार लगा है । सवाद सम्प्रेषण गायन नृत्य एव वाद्य ही मुख्य होते हैं। नक्कारा विशेष वाद्य है। विदूषक स्वाग के बीच–बीच मे अपने कार्यकलापो द्वारा दर्शको को हसाता रहता है। लगभग रात्रि पर्यन्त कार्यक्रम चलता है। अब दिन मे भी होने लगे हैं।

बलवन्त उर्फ बुल्ली ने धार्मिक स्वाग के लिए ख्याति प्राप्त की है तो दूसरी ओर चन्दरवादी ने श्रृगारपरक प्रदर्शन के लिये। अन्धे बुन्दु मीर ने ग्रामीण परिवेश के स्थान पर शहरीकरण को अपनाया है। बस्तीराम ने सामाजिक उत्थान के लिए सघर्ष किया तो शीशराम ने अध्यात्मिकता का अलख लगाया। अन्य सभी ने निगुण परम्परा को आगे बढाया है।

साठ के दशक की सत्य घटना है दौराला गाव मे शिव मदिर के पास सोरठ का चौक (स्वाग प्रदर्शन) को लेकर चौधरियो वाली पटटी और अन्य पटटी मे शर्त लग गई कि जो भी सोरठ का किरदार निभाने वाले स्वागी को चादी के सिक्को से तोलेगा उसी की पटटी मे चौक होगा। देखते ही देखते लाला राजाराम ने अपने घर से सोरठ के वजन के बराबर 59 किलो चादी के सिक्को से तोल दिया और बाजी जीत ली। यह था लोगो मे स्वाग के प्रति आकर्षण।

दादा साहब फालके ने अपनी पहली फिल्म 'राजा हरिश्चन्द्र स्वाग से प्रभावित होकर बनाई थी।

कहा जाता है कि प्रसिद्ध स्वागी शामली निवासी बुल्ली को किसी झूठे मुकदमे मे फासी की सजा हो गई। अतिम इच्छा के रूप मे उसने जज साहब के सामने स्वाग का चौक करने की इच्छा जताई। स्वाग के जरिए ही बुल्ली ने अपने फसने के षडयन्त्र का पर्दाफाश कर दिया। इस पर जज ने उसे बरी कर दिया।

रामलीला नाटक

समस्त कौरवी जनपदो मे रामलीला के नाटको के प्रदर्शन का बाहुल्य रहता है। विशेष रूप से इन लोक नाटको का आश्विन मास मे रामनवमी पर राम जन्म के उपलक्ष्य मे प्रत्येक नगर मे उल्लासपूर्वक मचन किया जाता है। यह लीलाए सवाद प्रमुख होती है। वास्तव मे इन लोक राम लीलाओ का धार्मिक महत्व अधिक है। नाटक के मूलभूत तत्वो के विकास की ओर ध्यान नही दिया गया है। सामान्य नागरिक अति नाटय सवादो एव क्रियाकलापो मे विशेष रूचि लेते है चरित्रो के सूक्ष्म मनोविश्लेषण मे रूचि नही ली जाती। रावण और अगद के सवाद परशुराम और लक्ष्मण सवाद हनुमान जी के कार्यकलापो मे जन सामान्य विशेष रूचि लेता है। यह लोक नाटय आठ रात्रि तक निरन्तर राम की



साझी गीत।



रामलीला।



स्वाग। (श्री चन्दर बादी द्वारा प्रस्तुत)



स्वाग। (श्री चन्दर बादी द्वारा प्रस्तुत)



स्वाग। (श्री चन्दर बादी द्वारा प्रस्तुत)



स्वाग। (श्री चन्दर बादी द्वारा प्रस्तुत)



बहुरूपिया गाजियाबाद।



बहुरूपिया गाजियाबाद।



लोक नृत्य होली।



लोक नृत्य होली।



लोक नृत्य।



लोक नृत्य।

लीलाए खेलते है। इन लीलाओ मे साजिन्दे तुमुल स्वर मे तुलसी कृत रामायण की चौपाइयो का पाठ करते है।

होली गायक

इसमे ढोल और सगीत का प्रयोग होता है। अगर गायक घीसाराम रामशरण दीवान दत्त नाथूराम गोविन्द राम की होलियो के स्वर आज भी यत्र–तत्र गूजते है। घीसाराम का गढमुक्तेश्वर को जाने वाली सडक पर भटीपुरा ग्राम मे 1843 मे जन्म हुआ था। आप आशु कवि थे। सैगे ग्राम मे आपने चुनौती मिलने पर कहा–

सैगे ढिग बसे मढैया।
छोटी लडकिन के ब्याह करत है लेले बडे रुपैया।।

निर्गुण ज्ञान पर आधारित होली का एक रूप –

होनी ने बडे खेल खिलाये
किस्मत से क्या जोर चले है
कर ले भजन हाथ मे ले माला तोहे उमर काटनी भारी।।

दीवान दत्त

मेरठ से सरधना जानी वाली सडक पर दवथुवा ग्राम के निवासी है। इनकी होली मे ग्रामीण परिवेश झाकता है– होली नाग लीला मे देखिए –

क्या भावज ने बोली मारी मरा फिरा उसका मारा।

गोपीचन्द आख्यान मे –

जग जाय अमर नही होई
ले लो जोग अमर होय काया
रट ओम कटे चौरासी
जो कोई जाप करे ओइम का बधन पाप कटे सारे।
ईश्वर का बासा घर अन्दर क्यो फिरते मारे–मारे।।
मन्दिर तेरी बनी है काया नित बास करे अविनासी।।

X X X X X X X

मैने देखी गडबड तेरी चेतन पूजा जड को।
योग ध्यान शुद्ध मन छोडा पूज रहे पीपल बड को।।

मवाना तहसील के बजा ग्राम निवासी पडित गोविन्दराम और मथुरा प्रसाद चाचा–भतीजे ने भी होली लोक गायकी की रचनाए की हैं और इनकी रचनाए उपलब्ध नही हो पायी है।

रागिनी गायक

लोक नाटय स्वाग मे रागिनी गायकी ही एकमात्र प्राण है। रागिनी के ह्रदयग्राही सशक्त स्वरो को सुनकर कई–कई कोस से श्रोता किसी जमाने मे उमड पडते थे।

श्री आशाराम डडेवाला जो हलालपुर के निवासी हैं की रागिनी प्रस्तुत है–

दुनिया के मॉ फिरै भरमता मन–मूरख मेरे
बेरा ना कत्त हाड खिडेगे तन दुश्मन तेरे।।
X X X X X X
काल रूप की चाक्की के मा जान की दाल दली जागी
मॅूड पकड कै रोवैगा जब पुज्जी सकल चली जागी।

इस प्रकार ही सशक्त एव जीवत स्वाग रागिनी गायकी मे बलवन्त उर्फ बुल्ली चन्द्रलाल उर्फ चन्दर बाद्दी रणवीर बुन्दुमीर आशाराम दीना लुहार मानसिह के नाम लोक जगत मे सदैव याद रहेगे। बलवन्त उर्फ बुल्ली को हिन्दू और मुसलमान समान भाव से प्रेम–पूर्वक सुनते हैं। ये राष्ट्रीय आपदा के समय मोर्चे पर जाकर फौजियो का मनोबल बढा चुके हैं। बुल्ली की रागिनी का एक अश देखिए–

ओम नाम सबसे बडा उससे बडा न कोय
जो उसका सुमरन करे दु ख काहे का होय।

रागिनी गायकी मे सबगा के रहने वाले जन्माघ सत्यपाल के रिकार्ड लाउडस्पीकरो पर खूब बजते हैं। लक्ष्मीचन्द्र उर्फ लखमी और उनके बडे भाई श्री रघुवीर ने भी रागिनी गायकी मे उल्लेखनीय नाम अर्जित किया है।

बहुरूपिया

बहुरूपिया अर्थात अनेक प्रकार के रूप परिवर्तित करना। लोक नाटय के अन्तर्गत बहुरूपिया आपको कही भी अचानक आश्चर्य चकित करने के लिए मिल सकता है। इसके अन्तर्गत एक कलाकार हनुमानजी का रूप धारण कर गदा चलाते हुए जय श्रीराम का उच्चारण करते हुए बन्दर या लगूर की रूप सजा कर खौ–खौं कर आपको डराते हुए मिलेगा और जब आप डर जायेगे तब वह आपको नमस्कार कहेगा और इनाम मागेगा। आपके सामने दरोगा आता है आपको थाने ले जाने के लिए डाटता–फटकारता है। जब आप डर जाते है तब वह आपको सलाम करेगा और कहेगा इनाम सरकार बहुरूपिया हू। आपका हाथ बरबस ही जेब की ओर बढ जायेगा। मच पर इसका प्रदर्शन 'छद्म–वेश एव फैन्शी ड्रेस के रूप मे देखा जा सकता है।

बहुरूपिया कला प्राचीन काल से ही हमारी सस्कृति और जीवन शैली का हिस्सा रही है। वैसे तो बहुरूपिया कोई जाति नही है फिर भी इस पेशे मे नट जाति के लोग अधिक है। इसके अलावा डॉग व मारीस मुस्लिम जातिया भी है। आजादी से पूर्व ये जातियॉ जागीरदारो के महलो मे अपने हैरतअगेज करतब दिखाकर राजा महाराजाओ की वाहवाही लूट कर इनाम पाते थे।

इस जाति के करीब 35 परिवार दौराला के गॉव बटजेवरा मे रह रहे हैं। इसके अतिरिक्त दायमपुर छोटा हसनपुर नूरनगर तथा रिठानी मे भी रहते है। नट महासभा के अध्यक्ष गोकुल चद इस कला के लुप्त होने का सबसे बडा कारण उपेक्षा महगाई तथा आधुनिक मनोरजन के साधन बताते है।

गोकुल चन्दं बताते हैं कि इनके मौसा फत्ती लाल राजस्थान के वर्तमान सासद राजा विश्वेद्र कुमार के पिता के सामने उनके महल मे पाछुल कला' का प्रदर्शन करते हुए अपनी दोनो ऑखे गवॉ बैठे थे। पाछुल कला मे एक निश्चित स्थान से छलाग लगाकर 15 20 फुट की ऊँचाई पर बैठे राजा के सामने सिर नवाकर पुन उसी स्थान पर छलाग लगाकर लौटना होता है।

कठपुतली नृत्य

प्राचीन काल मे पुत्तलिका नृत्य से ही नाटक का जन्म माना गया है। काठ की पुतली या लकडी से निर्मित पुतली को कठपुतली कहा जाता है जिसका पात्रानुकूल वस्त्र विन्यास किया जाता है। आज भी लोक नाटय के अन्तर्गत कठपुतली का तमाशा दिखाने के लिए कौरवी क्षेत्र मे सुगमता से मिल जाएगे। यह नृत्य और नाटक का मिश्रित रूप है। कठपुतली मे धागा बाधकर उगली से नचाते हैं साथ मे ढोलक पर गीत गाया जाता है। मुह से एक विशिष्ट प्रकार का वाद्य भी बजाते रहते हैं। दो चारपाई खडी करके दृश्य तैयार किया जाता है जिसके पृष्ठ भाग से सचालन होता है। बच्चो को यह खेल बडा लुभावना लगता है।

नट कला

नट कला एक प्रकार का शारीरिक प्रदर्शन है। नट का शाब्दिक अर्थ अभिनेता है। भगवान शिव की नृत्य करते हुए मुद्रा को नटराज की सज्ञा दी गई है। नट कला को कलाबाजी भी कहते है। यह कला बास पर रस्सी बाधकर शारीरिक सतुलन एव अन्य कलाबाजियो का प्रदर्शन है। यह कला भी लोक जीवन मे काफी देखने को मिलती है। नट अपने पैरो मे लगभग पाच–छ फुट लम्बाई के बास बाध लेते हैं और ऊपर से लम्बे कुर्ते पहनकर मुह और सिर पर बडे–बडे मुखौटे धारण कर करतब दिखाते है।



लोक–नृत्य

जन–सामान्य मे प्रचलित नृत्य को लोक नृत्य कहा जाता है। लोक नृत्य का जन्म ग्रामो से हुआ है और लोक जीवन से ही विकसित हुए हैं। लोक नृत्य मे लय तथा ताल का कोई विशेष बन्धन नही होता। प्राचीन खण्डहरो की भाति प्राचीन नृत्यो की परम्परागत शैली की झलक लोक नृत्यो मे दिखाई देती है। लोक नृत्य की उत्पत्ति के विषय मे यह कल्पना की जाती है कि मनुष्य ने मोर को नाचते देखकर उसकी नकल की होगी। जब कभी वह प्रसन्न हुआ होगा मोर की तरह नाचा होगा। धीरे–धीरे अग सचालन मे वृद्धि हुई होगी और आगे चलकर यही लोक नृत्य कहलाया।

घरेलू लोक नृत्य

ग्रामीण महिलाये मनोरजन करने मे पीछे नही हैं। किसी के यहा शादी–विवाह यज्ञोपवीत अन्नप्राशन मुण्डन छठी आदि 16 सस्कारो मे से कुछ भी हो उनकी नृत्य कला देखते ही बनती है। लोक गीतो को आधार मानकर ही लोक नृत्य किये जाते हैं। इस प्रकार के नृत्य विशुद्ध रूप से घरेलू होते हैं केवल घर के आगन मे ही सम्पन्न किये जाते हैं।

इन लोक नृत्यो की विशेषता यह है कि ये केवल मात्र एकाकी होते हैं। एक ही स्त्री नृत्य करती है शेष अन्य स्त्रियॉ सामूहिक रूप से लोक गीत गाती है और तालिया बजाती हैं। लम्बे गीतो मे प्रत्येक कडी पर एक स्त्री के बाद दूसरी स्त्री नृत्य आरम्भ कर देती है।

इस प्रकार लोक नृत्यो मे विशिष्ट प्रकार की साकेतिकता प्रदान करने की प्रवृत्ति नही है। शास्त्रीय नृत्यो की तरह इनमे आखो उगलियो और चेहरे की भगिमाओ से सकेत प्रदान नही किये जाते। इसमे केवल स्थूल सकेत होते है अर्थात पैर कमर हाथ सिर या धड की भगिमाये ही प्रयुक्त होती है। लोक नृत्य अधिकतर कहरवा या दादरा ताल मे किये जाते हैं।

स्वाग और नौटकी के लोक नृत्य

घर से बाहर झाककर देखे तो यह लोक नृत्य स्वाग और नौटकी मे भी प्राय देखने को मिलते है। यह नृत्य जन सामान्य मे प्रदर्शन की दृष्टि से होते हैं इसलिए इनका रूप एव स्तर घरेलू लोक नृत्यो से कुछ भिन्न होता है।

स्वाग लोक कला मे पुरुष कलाकार ही स्त्रियो के वेश धारण कर लोक नृत्य करते है तो नौटकी कला मे पुरुषो के साथ स्त्रिया भी साज सज्जा कर लोक नृत्य प्रस्तुत करती

है। इस प्रकार के लोक नृत्यो की साज–सज्जा मे वृद्धि हुई है। साज के अन्तर्गत नक्कारा ढोलक हारमोनियम आदि का प्रयोग होता है। सज्जा मे श्रृगार एव वस्त्र विन्यास आदि पर ध्यान दिया जाता है।

रामलीला के लोक नृत्य

रामलीला के अवसर पर धार्मिक भाव से भी नृत्य करने की परम्परा है। यह नृत्य अधिकाश युद्ध कौशल की भाव भगिमाओ के साथ सम्पन्न होते हैं जैसे–राम–रावण युद्ध आदि। श्रृगारिक भाव मे राधा–कृष्ण की लीलाओ के नृत्य के उदाहरण हैं।

होली नृत्य

कौरवी जनपदो मे होली के अवसर पर भी टोलिया गाती बजाती हैं। प्राय दुलहैंडी के अवसर पर समूह के रूप मे यह नृत्य चलता है। इसमे नृत्य करने वाला केवल पुरुष ही होता है और वह अश्वारोही के रूप मे नृत्य करता है। नर्तक के चारो और वाद्य वृन्द होता है। वाद्य वृन्द मे ढोल या ढोलक घन्टा और थाली मे भगौना उल्टा करके लकडी के डडे से बजाया जाता है जो विशेष प्रकार का उन्माद पैदा करता है।

अहीरो के लोक नृत्य

छोटी जातियो मे अहीरो मे मागलिक अवसरो पर सामूहिक नृत्य नट कौशल सहित होते हैं। रग–बिरगी कच्छी या जाघिया जिनमे घुघरू टके हुए चिपकी हुई कुरती पहने हुए या नगे बदन सिर पर रगीन पगडी पहन कर वृत्ताकार नृत्य करते हैं। इस नृत्य मे ढोल और झाझ का प्रयोग होता है।

धोबी एव कहारो के लोक नृत्य

मेलो पर्वों और त्यौहारो पर कहार भी नृत्य करते हैं। किसी युवा को स्त्री का वेश बनाकर नचाते हैं। वाद्य मे डमरू की तरह हुडुक बजाते हैं। धोबी भी अपने नृत्यो मे बिरहा गाकर तथा थाली बजाकर नाचते हैं।

जादू–टोने टोटके के नृत्य

झाड–फूक जादू, टोने–टोटके वाले भी विभिन्न प्रकार की ध्वनि के साथ नृत्य करते है। हाथ मे मोर पख होता है और लोबान द्वारा धुआ करते हैं तथा अग्नि भी जलाते हैं। कुछ लोगो की मान्यता है कि इस नृत्य से वे दैवी आपदाओ को दूर करते हैं।

सावन के लोक नृत्य

सावन के दिनो मे स्त्रिया श्रृगार कर वृक्षो की डाल पर झूला डालकर सावन के बीत गाती हैं तथा नृत्य कर मनोरजन करती है।

लोक नृत्यो की वर्तमान स्थिति

कौरवी क्षेत्र मे लोक नृत्यो को कभी विकसित होने का अवसर नही मिला और न ही कभी सही मूल्याकन हो सका। प्राय लोक कलाकारो को देहाती गवार की ही सज्ञा से कोसा गया है।

वर्तमान काल मे चित्रपट के प्रभाव के कारण इनमे अश्लीलता समाविष्ट हो गई है और इनका स्वाभाविक रूप विकृत होने लगा है जो लोक नृत्य कला की दृष्टि से हितकर नही है।

लोक वाद्य

लोक सगीत मे निम्नलिखित तत् वितत धन और सुषिर आदि वाद्यो का प्रयोग किया जाता है–

ढोल	नगाडा	ढपली	पखावज
हारमोनियम	बासुरी	क्लारनेट	शख
झाझ	मजीरे	खडताल	चिमटा
घुघरू	घन्टा	घडा	मटका
सारगी	डमरू	धुतारा या तबूरा	डका
धौंसा	बीन	चिकारा	इकतारा

होली के अवसर पर कासे की थाली मे उल्टा भगौना रखकर थाली के किनारे को लकडी से बजाया जाता है। ग्रामीण औरते थाली लोटा परात एव चम्मच आदि बजाकर भी गीत गाती हैं।

लोक कला

लोक कला कृति के अन्तर्गत विभिन्न रचना शैलिया प्रचलित है जैसे–लिखना गोदना मॉडना पूरना एव भरना आदि।

गुदना गुदवाना

स्त्री एव पुरुष अपने शरीर पर गुदना गुदवाते है। प्राय इसमे पति या पत्नी का नाम अथवा प्रेमी का नाम राम का नाम कृष्ण की लीला गुदवाते है। लीला गुदवालो प्यारी

लोक गीत भी गाया जाता है। गुदवाना साधारण सज्जा अथवा जादू टोने का प्रतीक समझा जाता है।

भित्ति चित्र

अहोई दीपावली करवा चौथ अहोई रक्षा बन्धन आदि त्यौहारो पर भित्ति चित्र अकित किये जाते हैं। स्वास्तिक सतिया या ॐ ब्रह्माण्ड के धार्मिक प्रतीक चिन्ह अकित किये जाते हैं। यह चिन्ह मगल सूचक होते है। पूजन के समय इनकी रचना मे रोली हल्दी गेरू एव सूखा आटा प्रयोग मे आता है। यह चिन्ह भित्तियो (दीवार) पर या चौक मे चिन्हित किये जाते है दीवार पर सलूने चित्रित होते है। मुसलमान 786 का अक बिसमिल्लाह के लिए चिन्हित करते है।

साझी

साझी के लिए माडना' शब्द का प्रयोग होता है। यह आकृतिया गोबर तथा मिटटी को गूथकर बनाई जाती है। यह रूढिगत आकृतिया होती है। द्वार सज्जा के लिए चीतना' शब्द प्रयुक्त होता है।

चौक पूरना

मागलिक अवसरो पर आटे एव गेरू के विभिन्न रगो द्वारा चौक पूरे जाते हैं। नवग्रह कोष्ठ नवग्रह मण्डल की स्थापना की जाती है। अल्पना' और 'रगोली चौक पूरना ही का पर्याय है। पौराणिक ग्रन्थो मे जिस 'रग वल्ली का वर्णन आता है वह रगोली का ही एक रूप लगता है। इसी प्रकार आलिम्पन का भी वास्तु शिल्प मे उल्लेख मिलता है। लगता है अल्पना' शब्द का आविर्भाव इसी से है। विशेष बात यह है कि यह कला विशेष रूप से स्त्रियो के ही हाथ मे है।

वन्दनवार

शुभ अवसरो पर आम के पत्ते और पुष्प की वन्दनवार द्वार पर बाधे जाते है। रगीन कागज की झण्डिया मार्ग या चौक के ऊपर सजाई जाती है। द्वार पर कलश चित्रित कर तथा उसके ऊपर आम्र पत्तो के साथ नारियल शोभित करते है। मार्ग के इधर–उधर कली छिडकी जाती है।

सौन्दर्य प्रसाधन

प्राय स्त्रियॉ श्रृगार सज्जा के अन्तर्गत गाल पर काला तिल' अकित करती है। आखो मे काजल अजन या सुरमा' का प्रयोग किया जाता है। दातो पर ददासा'

लगाते है मुसलमानो मे यह रिवाज अधिक है। स्त्रियो अपने पैरो को महावर द्वारा सज्जित करती है।

कौरवी भाषा एव बोली

किसी क्षेत्र की भाषा एव बोली उस परिवेश विशेष की सस्कृति को पीढी दर पीढी हस्तान्तरित करती हुई आगे बढती है इसी कारण भाषा बोली का महत्व बढ जाता है। कौरवी जनपदो मे खडी बोली का प्रचलन है। खडी बोली मध्यकालीन हिन्दी का वह रूप है जिसका विकास हिन्दू और मुसलमान दोनो के पारस्परिक सम्पर्क से हुआ था।

खडी बोली को ही राष्ट्र भाषा का गौरव प्राप्त हो चुका है। इस बोली मे मधुरता की कभी तथा लाठी का प्रयोग होता है। यह नाम भी अन्त मे खडी पाई (लाठी) के प्रयोग के कारण पडा है। कौरवी क्षेत्र मे धोत्ती ठाला' 'तू उठजा' बोला जाता है उधर शुद्ध रूप मे 'उठाला' 'उतार ला' आदि का प्रयोग भी यही सिद्ध करता है कि वर्तमान खडी बोली का विकास इसी कौरवी क्षेत्र से हुआ है।

कौरवी की सामान्य विशेषताए

- इसमे (इस बोली में) आकारान्त प्रधान है जैसे–करता किया गया करना करेगा बडा छोटा आदि।
- ऐ औ का उच्चारण सयुक्त होने के कारण ए ओ है–जैसे पैर–पेर और–होर।
- ह के पहले अ का उच्चारण ए जैसा सुनने मे आता है जैसे–कहया–केहया रह–रेह।
- ड ल स्वर के मध्य न क्रमश ड ल्ल और ण बोले जाते हैं जैसे गाडी–गाडी बडा–बडा नीला–नील्ला जाना–जाणा।
- स्वर मध्य मे आने वाले दित्व व्यजन दीर्घ स्वर के बाद बोले जाते हैं किन्तु दीर्घता कम हो जाती है जैसे–बाप्पु बेटटा लोटटा जुत्ता रान्नी।
- कर्ता कर्म सम्प्रदान करण–अपादान सम्बन्ध तथा अधिकरण कारको के लिए क्रमश· ने–ने को–कु, नु–ने–के–ते–सेती–से–सो का–के–की मे–पे–पे परसर्गों का प्रयोग होता है।
- सर्वनामो और क्रिया–विशेषणो मे भी विशिष्टता दृष्टिगत होती है।
- सर्वनाम–मैं मुज (मै मुझे) महारा (हमारा) ते (तुझ) तम तमे (तुम तुम्हारा) यू–यो (यह) वोह (वह) जोण (जो) कोन (कौन) के (क्या) अपणा (अपना) को (कोई)।

– क्रिया–विशेषण–कै (कितने) असे (ऐसे) जसे (जैसे) जिब–तिब (जब–तब) जा (जहा) क्यू (कैसे क्यो)।

डॉ नित्य किशोर शर्मा ने अपने लेख मे एक स्थान पर बडा स्पष्ट चित्रण किया है– 'कुरू प्रदेश मे सडक चलती नही है 'बगती है हवाए बहती' नही (एक सी उन पर हवाए है बही) 'सन्नाटा' लेती हैं। यहा के लोग किसी के 'दाव' पर नहीं आते अपितु अडगे चढते हैं। यहा के राजा 'सेना' नही फौज–फैडा' रखते हैं। यहा के कृषक सिर पर पगडी नही मुन्डासा' बाधते हैं। यहा के किसी काम मे कमी' नहीं बल्कि 'रडक' रहती है। यहा के सभी काम टच मिलते हैं 'तावली होते हैं क्योकि यहा सब 'सेला' करके खाते है तत्ता–तत्ता कोई नही खाता। इस क्षेत्र मे देशज शब्दो में जो प्यार और माधुर्य है उसमे कमाल की अभिव्यजना शक्ति है। कितने सीधे–सादे हैं ये लोग और कितनी सहज है इनकी भाषा यदि कोई अप्रिय घटना घट भी जाती है तो शोर–शराबा नही खडका–दडका ही होता है।

इनके अतिरिक्त ढाल (तरह) क्युक्कर (कैसे) दडबा (द्वार) लौंडी (लडकी) लुगाई (औरत) लखना (देखना) कहरी (कह रही) रक्खन (रखना) मूद दे भेड दे (बन्द कर दे) बाहण बोब्बो (बहन) चोक्खा (अच्छा) बोल्ला (बोलना) मोहडा (द्वार) वार होरी (देर हो रही) आदि अनेक उदाहरण हैं।

कोस–कोस पर बदले पानी चार कोस पर बानी

मुजफ्फरनगर एव बिजनौर की तरफ बढे तो वहा 'दित्त' विशेष से पगी खडी बोल्ली मिलेगी। जैसे–तन्ने के चइये (तुझे क्या चाहिए) तन्है किग्घै जाणा (तुझे किधर जाना) तथा बहन्ना (बहन) आदि उदाहरण हैं।

बागपत एव बडौत की तरफ जाये तो वहा की बोली मे हरयाणवी पुट झलकता है। जैसे–इबी (अभी) इबजा (अब) सोड (रजाई) ढब कू होजा (एक तरफ हो जा) के ढब हैं (क्या हाल हैं) माणक सा या कनक सा (तनिक सा) ठहरिस (ठण्ड) बाल (हवा) जातक (बच्चा) के ब्यरा (पता नही) आदि।

उधर बुलन्दशहर की बोली मे ब्रज भाषा का पुट दृष्टिगत होता है। जैसे–खवावे (खावे) जात हती (जाती थी) खात हती (खाती थी) रेहदे (रहने दे) ददुआ (दादा) घेल्लियो (घेर लिया) वा मे कहा है (उसमे क्या है) मो को कहा बतावे (मुझे क्या बताते हो) लल्ला (लडका) जे (ये) आदि।

सहारनपुर की बोली मे भी अन्तर पड जाता है जैस–किगै (कहॉ) उगै (वहॉ) वा को (उसको) वाकी (उसकी) कौन से भॉऊ (तरफ) गई ही (गयी थी) गया हा (गया था)। यहा था' के लिए ही का प्रयोग होता है।



रहन–सहन

कौरवी जनपद कृषि प्रधान क्षेत्र है। यहा खेती–बाडी का मुख्य कार्य होता है। सामान्य ग्रामीण जन के घर कच्चे जिन पर फूँस से निर्मित छप्पर होते है। फर्श और दीवारे कच्ची होती हैं जिन पर गोबर द्वारा लिपाई की जाती है। छत कडीदार होती है। मकान के अन्दर 'कोठा' 'दुबारी' 'तिबारी' 'दुकडिया' कोठरी होती है। अनाज भरने के लिए 'कोठी' 'कुठला' या 'ठेका' बनाया जाता है। भोजन बनाने के लिए रसोई होती है। घर से बाहर या कुछ दूर या गाव के बाहर घेर' होता है यानी पुरुषो का बैठक खाना। यही ढोर–डगर भी पाले जाते हैं। मुसलमानो के घर के दरवाजे पर टाट का पर्दा लटका रहता है।

खाने का सामान रखने के लिए छप्पर मे 'छीका' टगा रहता है। सोने के लिए चारपाई खाट पलॅग मूज या सन के बान द्वारा निर्मित होती है। बूढी स्त्रिया और बच्चे 'खटोला' का प्रयोग करते हैं। लकडी के 'तख्त' का भी प्रयोग होता है। बैठने के लिए 'सरकडो' द्वारा निर्मित ''मूढा' होता है। स्त्रिया मुढिया' पीढा' या पटरा' प्रयोग मे लाती है। भोजन के लिए आसन' टाट 'दरी अथवा 'चटाई प्रयुक्त होती है।

धान' कूटने के लिए प्राय जमीन मे ओखली होती है और लकडी के मूसल से कूटते हैं। दूध गर्म करने के लिए मिटटी का हारा' या बरोसी होती है और दूध 'हाडी' अथवा 'बरोसी' मे रखा जाता है। दूध बिलोने के लिए 'रही या बिलोनी एक पतली रस्सी तथा 'मटका' होता है।

पानी भरने के लिए 'घडा' मटका' टोकना' 'कूँड मिटटी अथवा पीतल से निर्मित 'कुआ' 'गगाम' या 'ताशा' प्रयोग मे लाया जाता है। पानी के स्रोत कुए या 'हत्थी के नल' होते हैं। अब पाइप लाइन भी आ गई हैं। ग्रामीण स्त्रिया अपने सिर पर 'ईंडवी रखकर दो या तीन घडे पानी भर कर सुगमता से ले जाती हैं।

प्रकाश के लिए 'दीपक 'दीवा' कुप्पी डिबिया लालटेन मोमबत्ती 'लैम्प' 'गैस की लालटेन' होती है। ग्रामो मे बिजली आ गई है लेकिन बहुत कम लाइन आती है। हवा के लिए 'बीजना' या पखा' प्रयोग करते है। स्त्रिया विभिन्न प्रकार के कलात्मक बीजने बनाती हैं जैसे खजूर के पत्तो से गोटे द्वारा चमकीले वस्त्र पर कढाई करके सिगरेट के पैकेट एव पोलिथीन द्वारा निर्मित होते है। चारो और घूमने वाले बीजने भी बनते हैं। समृद्धिशाली लोगो द्वारा बिजली के पखे तथा कूलर का प्रयोग होता है।

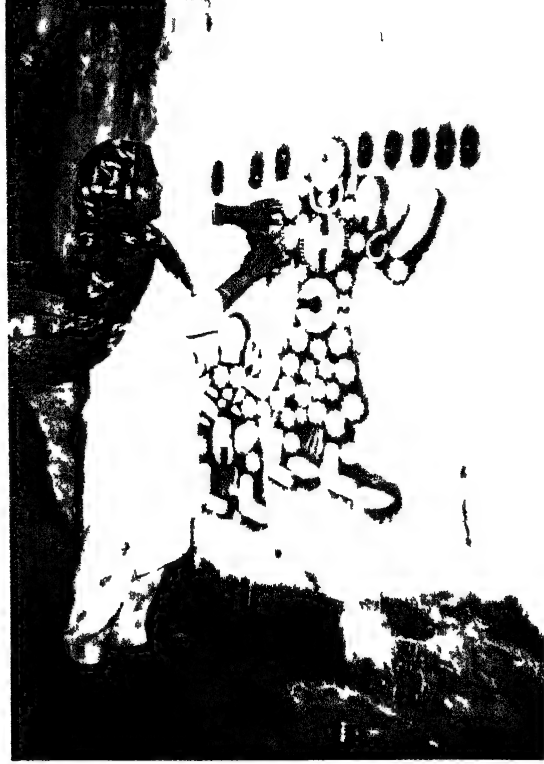
हिन्दुओ के घरो मे प्राय पीतल एव ताबे के बर्तन प्रयोग करते है। मुसलमानो मे मिटटी' चीनी मिटटी तामचीनी अलमोनियम' एव कलई के बर्तन प्रयोग मे लाते हैं।



लोक नृत्य।



लोक वाद्य ढोल।



लोक कला साझी।



ग्रामीण घर।



उपले पाथती हुयी महिला।



गॉव मे बिटौडे।



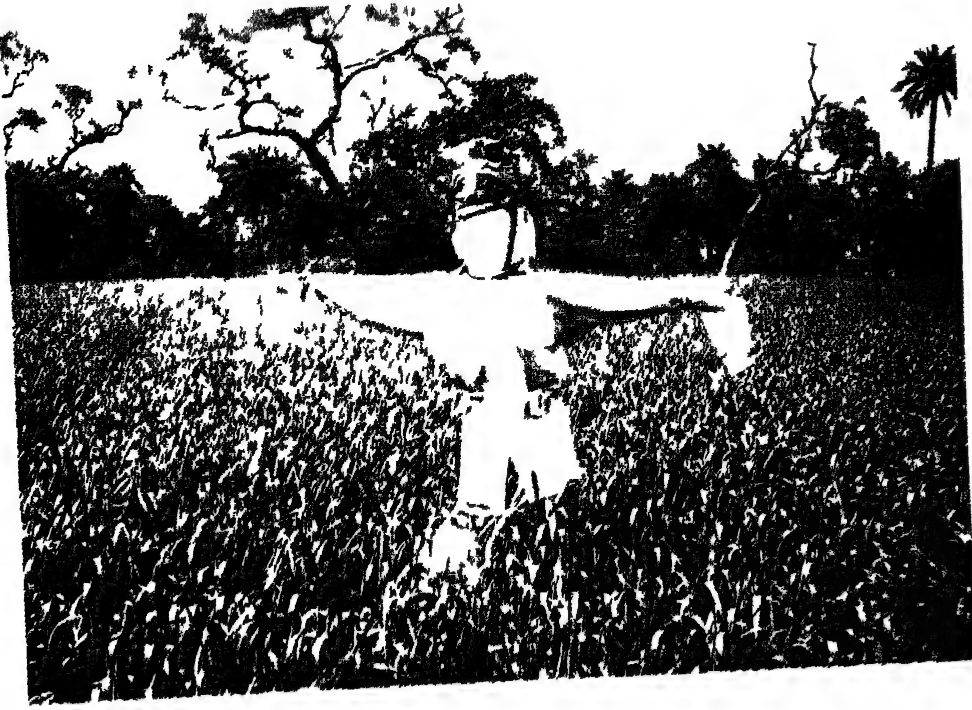
भुस के बुन्गे।



सरसो का खेत मेरठ।



खेत जोतता हुआ किसान।



बिझुका (काक भगोडा)।



लोक देवता।



लोक देवता।



लोक देवता समाधि–श्री बाबा लाल दास सहारनपुर।



लोक देवता समाधि–श्री बाबा लाल दास सहारनपुर।

ग्राम्य जीवन मे हुक्का' धूम्रपान के लिए अनिवार्य साधन है। हुक्के पर एक चिलम होती है जिसमे तम्बाकू भरकर पिया जाता है। हुक्का पीतल कलईदार चारो ओर घूमने वाला अथवा पाइप लगा हुआ होता है। मुसलमान मिटटी तथा अलमोनियम का हुक्का प्रयोग करते हैं। हुक्के मे करसी उठाने के लिए एक छोटे आकार का चीमटा' लगा हुआ होता है। तम्बाकू रखने के लिए एक छोटी थैली रखते है। चिलम मे रखने के लिए अगारे या करसी हारे या चूल्हे से लेते हैं। हुक्के के अतिरिक्त लोग बीडी तथा सिगरेट भी पीते हैं। वृद्धा औरते कली या गुडगुडी पीती है। यह छोटे आकार का हुक्का होता है। साधु–सन्यासी 'सुलफिया' पीते है।

गावो मे हुक्के का प्रयोग जाति के आधार पर किया जाता है जैसे–ब्राह्मणो का हुक्का जाटो का हुक्का गूजरो का हुक्का हरिजनो का हुक्का आदि। हुक्का समाज मे आवभगत आदर–सत्कार के लिए एक अति महत्वपूर्ण साधन है। पचायत द्वारा अनैतिक कार्य करने वालो का हुक्का–पानी बन्द कर दण्ड दिया जाता है। एक बार सरकार ने तम्बाकू पर टैक्स लगा दिया था तब गाव वालो की तीखी प्रतिक्रिया देखिए–

लेग्ये रे तमाखू दिण के चोर
गुजर नही होणे की–

गावो मे शौच के लिए स्त्री एव पुरुष मुह अधेरे जगल या खेतो मे जाते है। इससे खेतो की रखवाली हो जाती है और खाद मिल जाता है। वैसे चिडियो अथवा पशुओ से सुरक्षा के लिए खेतो मे 'बिजुका अथवा काक भगोडा' (एक प्रकार से मनुष्य की तरह डरावना आकार) खेत मे गाड दिया जाता है।

ओढने बिछाने के कपडे

सर्दियो मे ओढने के लिए रजाई या लिहाफ गोटदार लोई कम्बल खेस का प्रयोग होता है। बिछाने के लिए दुतई दरी गद्दा बिछौना चादर दोबडा दसूती का प्रयोग किया जाता है। सामान भूसा या कुटटी बाधने के लिए पल्ली का प्रयोग करते है।

काम धन्धे

स्त्रिया कृषि कार्य मे पुरुषो के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर सहयोग देती है। खेती बाडी फसल बोना पानी देना फसल काटना कुटटी काटना गाय–भैंस ढोरो की सानी करना तथा गृहकार्य खाना बनाना आदि सभी कार्य मुस्तैदी से करती है।

खान–पान

पहले कभी मक्का के आटे का खाने मे प्रयोग करते थे और गेहू का आटा अतिथियो के लिए प्रयोग होता था। अब अधिकाश गेहू के आटे मे चने का आटा मिलाकर मिस्सा

या 'गोचनी' प्रयोग मे लाया जाता है। सरसो का या चने का घुटवा 'साग' प्राय बडे शौक से खाया जाता है।

फुल्के के पोद्दे लपझपे हरियण धरदे साग।
लम्बी सी दे दे लाकडी गोस्से पै धरधे आग।।

छाछ या मटठा का प्रयोग प्रात गुड और बासी रोटी के साथ मक्खन का नाश्ता किया जाता है। बाजरे की रोटी और खिचडी का जायका ही कुछ और है। उडद की दाल का अधिक प्रयोग होता है। त्यौहार या अतिथि के आगमन पर खीर हलवा कचौरी पक्का खाना बनाया जाता है। गुड का प्रयोग भी बहुतायत से होता है।

आटे गुड और घी से निर्मित व्यजन को 'गुडयानी या लपसी घी बूरा या शक्कर का प्रयोग मिष्ठान के रूप मे होता है। गर्मियो मे जौ के आटे का सत्तू पीकर गर्मी शात करते हैं। इसके अतिरिक्त चावल सरसो का तेल तिल का तेल प्रयोग मे आता है। सब्जी मे गुडम्बा' का रिवाज है। त्यौहारो के अवसर पर ग्रामीण मुसलमान मास का प्रयोग करते है। बिना चकला बेलन' के हाथ की रोटी अथवा पानी के हाथ की रोटी' के स्वाद की कल्पना नही की जा सकती है।

महिलाए केश प्रसाधन मे अपने बालो की बहुत सारी भीडिया (चोटी) तथा केश ग्रन्थि बनाकर सजाती हैं। पुरुष वर्ग द्वारा रक्षा के लिए अपने हाथो मे लाठी रखने का बहुत रिवाज है।



वेशभूषा

कौरवी क्षेत्र मे वेशभूषा सादगी पूर्ण होती है। कृषि कार्य एव जलवायु का वेशभूषा पर विशेष प्रभाव हे। यहा सूती गाढे के वस्त्रो को प्राथमिकता दी जाती है। गाढे के वस्त्र मे यह विशेषता हाती है कि यह स.र्दी मे गर्म और गर्मी के मौसम मे स्वत ठडा हो जाता है। किसानो के लिए यह सर्वाधिक उपयुक्त पहनावा है। यहा मलेशिया' पटटेदार पापलीन लटठा' मोटी मारखीन भी प्रयोग की जाती है।

स्त्रियो की वेशभूषा

लहगा जिसक 12 से 15 मीटर तक घेर होता है। कमीज जो मर्दाने ढग की लेकिन ऊची होती है। आगे से खुली हुई बटनदार कुर्ती। सीधे पल्लू की धोती अगवस्त्र मे चोली या अगिया तथा उसके ऊपर कोटी या बिल्लौज (बलाउज) पहनती हैं। ओढनी ओढती हैं। ओढनी के ऊपर सफेद रग की सूती या सिल्क की चादर ओढी जाती है। पैरो मे स्लिपर या जूती लकडी की खडाऊ या पादुका धारण करती हैं। (सन्यासी खूटीदार खडाऊॅ धारण करते है।)

मुसलमान स्त्रियो की वेशभूषा

चूडीदार पायजामा लम्बा कुर्ता लहरियादार या गोटदार ओढनी पहनती हैं।

पुरुषो की वेशभूषा

लागदार धोती कुर्ता मिर्जई वासकट टोपी मुडासा या साफा सम्भ्रान्त लोगों द्वारा कधे पर चादर सलीम शाही जूती (पहले चर्र–मर्र की आवाज करने वाली जूती भी पहनी जाती थी) जेबदार आडे बनियान पहनते हैं।

मुसलमान पुरुषो की वेशभूषा

लुगी अलीगढ कट पायजाम गले मे ताबीज दुपल्ली टोपी।

धोती का प्रयोग

धोती का पहरावा प्राचीन काल से ही चला आ रहा है। दैनिक जीवन मे ग्रामीण भाई धोती को अनेक प्रकार से प्रयोग मे लाते है जैसे एक ही धोती अधोवस्त्र एव उपरिवस्त्र दोनो रूप मे प्रयोग की जा सकती है। धोती को साफे पगडी या मुडासे के रूप मे सिर पर

बाध सकते है। ओढकर सोया जा सकता है। रस्सी की तरह बाल्टी मे बाध कर कुए से पानी निकाल सकते है। धोती मे गटठर या सामान बाध सकते है।

सर्दी के वस्त्र

सर्दी मे स्त्री पुरुष 'बण्डी जिसके अन्दर रूई होती है पहना जाता है। दोहरा यानी एक तरफ छीट दूसरी तरफ अन्य कपडा तथा चारो ओर गोट लगाकर ओढते है।



आभूषण

स्त्रिया स्वभावत आभूषण प्रिय होती है। यह उनका जन्मजात गुण है। आभूषण चल सम्पत्ति के अन्तर्गत आते है। पूर्वकाल मे बैक तो होते नही थे इसलिए आभूषण के रूप मे चल सम्पत्ति एकत्रित कर ली जाती थी जिसका सदुपयोग सकटकाल मे किया जाता था। कुछ आभूषणो का शारीरिक स्वास्थ्य सम्बन्धी लाभ के लिए प्रचलन आरम्भ हुआ है। नाक कान के आभूषण इसमे प्रमुख है। कमर मे तगडी पहनने से नाफ नही उतरती है और हर्निया नही होता है और कमर पतली रहती है। पैरो मे कडे पहनने से मिर्गी का दौरा नही पडता है और मोच नही आती है।

प्राय जिनके बच्चे मर जाते है और जो बच्चा जीवित रहता है उसके कान मे बाली डाली जाती है ऐसी मान्यता है। हसली द्वारा बच्चो के गले की हडडी नही उतरती है। प्राय धोबी अपने गटटे मे कडे पहनते है इससे कपडे धोते समय हाथ मे मोच नही आती है। अष्टधातु की अगूठी पहनने से उगली मे चटे नही उखडती हैं।

आभूषण समाज मे आर्थिक स्तर का परिचायक बन गया है। विवाह के अवसर पर आभूषणो का लेन–देन बहुतायत से होता है।

स्त्रियो के आभूषण

गले के आभूषण

हसली–गले के चारो ओर चिपटवा।

कठला–चादी या स्वर्ण के रुपये के आकार मे हार रुप मे जुडे हुए।

गुलीबन्द–गले के चारो ओर मोती जडा पटटा तथा नीचे घुघरू लटकते हुए।

पचलड़ा–पाच जजीर फिर बीच–बीच मे टिकली।

सतलड़ा–सात जजीर बीच–बीच मे टिकलिया।

रामनौमी–तीन इच लम्बाई की पाच या सात लडिया और बीच–बीच मे टिकली और मुख्य रूप से मध्य मे पाननुमा या गोल आकार जिस पर नग जडे होते हैं।

हमेल–चॉदी की जजीर जिसमे आयताकार टिकली लगी होती हैं।

सिर के आभूषण

टीका–माथे पर माग के ऊपर।

झूमर–सिर के एक ओर पाच–सात लडिया।

चकफूल–चोटी के ऊपर फूल के आकार का पखुडिदार।

क्लिप—बाल व्यवस्थित करने के लिए छोटे आकार के।

काटे—चादी के घुघरूदार काटे जो जूडे मे लगाये जाते है।

कान के आभूषण

झुमकी—छतरीनुमा गोल आकार की लटकवा।

मगरचौरानी—4 5 इच की लम्बाई मे एक—दूसरे से जुडे हुए चार घुघरू।

फूल—जिन्हे आजकल टॉप्स कहा जाता है।

टोरे—छोटी लडकियो के लिए छोटे गोल आकार मे।

नाक के आभूषण

नथ—छोटी तथा बडे आकार की नगीने या मोती जडी अथवा मीनाकारी।

बेसर—नाक के बीच मे छेदकर पहना जाता है। स्वर्ण जडित जड़ाऊ या कुन्दन दार। इसे 'बुलाक' भी कहते हैं।

लौंग—लौंग के आकार की स्वर्ण या चादी सादी जडाऊ अथवा नगीने की।

हाथ के आभूषण

कड़े—सादे गोल। इन्हे खडवे भी कहते हैं।

पौहची—सादे गोल आकार पर दाने।

दस्तबन्द—लडिया और बीच—बीच मे टिकली।

परिबध—कडे पर घुघरू लगे हुए।

पचागला—पाचो उगलियो की जजीर और मध्य मे गोल टिकली।

आरसी—एक प्रकार की अगूठे की अगूठी जिसमे घूँघट मे मुह देखने के लिए या बिन्दी लगाने के लिए छोटा शीशा लगा होता है।

बाजूबन्द—कोहनी के ऊपर कडे के आकार का।

अगूठी—उगलियो मे पहनने की सादी मोती नगीने अथवा मूल्यवान पत्थर जडी। विभिन्न राशियो के पत्थर भी जडे होते है। नाम का प्रथम अक्षर या पूर्ण नाम की भी होती है।

कमर के आभूषण

तगडी—इसे करधनी या कमरबन्द भी कहते है। बैल्ट के आकार की सादी अथवा लडीदार।

पैर के आभूषण

पैर के समस्त आभूषण चादी द्वारा निर्मित होते है।

लच्छे—गोल आकार के सादे।

झाजन—इन्हे झाजर भी कहते हैं। खोखले होते हैं जिनके अन्दर बजने वाले दाने डाले जाते हैं।

अनोखे—इन्हे 'रामझोल भी कहते हैं। चादी की पटटी पर घुघरू जडे होते हैं।

छैलचूडी—चादी की पटटी पर दूर—दूर तक घुघरू जडे होते हैं।

कड़े—गटटे पर चिपटवा होते हैं।

हजारा पायल—घुघरूदार बजने वाले।

पायजेब—सादी।

बिछुवे—केवल विवाहित स्त्रिया पैर की चारो उगलियो मे पहनती हैं। विवाहित के लिए अनिवार्य शगुन माना जाता है।

अनवर—बिछवे के आकार पर एक टिकली जिस पर एक घुघरू जडा होता है। पैर के अगूठे मे पहना जाता है।

अन्य आभूषण

पिन—स्वर्ण निर्मित पिन साडी व्यवस्थित करने के लिए प्रयोग मे आती है।

चाबी का गुच्छा—चादी निर्मित चाबी का गुच्छा साडी मे कमर पर लगाया जाता है।

काच की चूडिया

स्त्रियो हाथो मे काच की रगीन अथवा जडाऊ चूडिया बडे चाव से पहनती हैं जो सौभाग्य सूचक मानी जाती हैं। इनके अतिरिक्त अविवाहित भी पहनती हैं।

अन्य धातु के आभूषण

निर्धन स्त्रिया पीतल अलमोनियम सिलवर सीप कौडी सीघ प्लास्टिक एव पत्थर से निर्मित आभूषण भी पहनती हैं।

वर्तमान काल मे शिक्षित और शहर की स्त्रियो मे फैशन के नाम पर इस प्रकार के आभूषण पहनने का रिवाज है।

पुरुष के आभूषण

कान मे बाली या मुर्की हाथ मे अगूठी गटटे पर कडा गले मे चेन (चेन के मध्य मे—शिव दुर्गा बजरगबली कृष्ण आदि इष्ट देव का लॉकेट लगा होता है।)



वर्ण व्यवस्था

धर्म के बाद दूसरा प्रमुख परम्परागत आधार सामाजिक श्रेणीबद्धता है। यह श्रेणीबद्धता समाज मे असमानता की परिचायक है। श्रेणीबद्धता का प्रमुख आधार है –

1 **वर्ण व्यवस्था**

2 **जाति व्यवस्था**

वर्ण व्यवस्था

वर्ण व्यवस्था के अन्तर्गत समाज कर्म के अनुसार चार वर्णो मे विभाजित है–ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य एव शूद्र। ब्राह्मण का कार्य धार्मिक कृत्य क्षत्रिय का कार्य वीरता द्वारा देश की रक्षा वैश्य का कार्य व्यापार एव शूद्र का कार्य सेवा करना था। यद्यपि यह व्यवस्था शिथिल होती जा रही है।

जाति व्यवस्था

जाति व्यवस्था जन्म के आधार पर होती है। ब्राह्मण के परिवार मे जन्म लेने वाला ब्राह्मण ही कहलायेगा। इस प्रकार जो जिस जाति मे जन्म लेगा वह उसी जाति का होगा। यह वशानुगत व्यवस्था है।

लोक जीवन मे सभी जातियो को एक–दूसरे से सहयोग लेना पडता है। विवाह के अवसर पर चाहे वह किसी भी जाति का हो लेकिन ब्राह्मण पुरोहित नाई कुम्हार माली भगी सभी का सहयोग आवश्यक है। ऐसे अवसरो पर नेग टेहले अधिकारपूर्वक मागे जाते है। कौरवी जनपदो मे यही व्यवस्था परम्परागत रूप से चली आ रही है।

जातिगत त्रुटियो को दूर करने के लिए जाति सघ की स्थापना होने लगी है। जैसे–ब्राह्मण सघ वैश्य सघ आदि। कई जातिया मिलकर भी अपना सगठन बना लेती हैं जैसे पश्चिमी उ प्र के ग्रामो मे अहीर जाट गूजर और राजपूतो ने मिलकर अपनी जाति के प्रथम अक्षर को जोडकर अजगर सभा की स्थापना की थी।

कौरवी क्षेत्र मे मातृभूमि मातृदेवी के रूप मे हर जगह पूजनीय है। यह भावना हिन्दुओ द्वारा आयोजित सस्कारो मे प्राय देखने मे मिलती हैं। धार्मिक अनुष्ठान कराने वाला मनुष्य भरत खण्डे जम्बूद्वीपे' द्वारा अपना नाम गोत्र लेकर पूजन आरम्भ करता है। मै जम्बूद्वीप मैं भारत वर्ष का निवासी हूँ, मेरा नाम ये है और मैं यह सस्कार सम्पन्न कर रहा हूँ। घोषणा करता हूँ।

इधर जजमानी प्रथा' भी प्राय सभी जगह है। जजमानी सस्कृत के यज्ञमान का अपभ्रश है। वेवस्टर शब्दकोष मे जजमान शब्द का प्रयोग उस व्यक्ति विशेष के लिए किया

गया है जिसके द्वारा एक ब्राह्मण धार्मिक सेवाओ को पूरा करने के लिए किराये पर लिया जाता है। अत वह सरक्षक या कार्यार्थी है।

वाइजर ने करीमपुर मे रहने वाली 24 जातियो मे पायी जाने वाली प्रकार्यात्मक सम्बन्धो की व्यवस्था को ही जजमानी प्रथा कहा है। विभिन्न जातियो एव उनके परम्परागत व्यवसाय अग्राकित हैं –

क्रम	जाति का नाम	व्यवसाय
1	ब्राह्मण	पुरोहित अथवा अध्यापक
2	भाट	वश परम्परा का वर्णन करने वाले (पारिवारिक वरूदा या वन्दा)
3	कायस्थ	खजाची
4	सुनार	सोने का काम करने वाले
5	माली	फूल पत्ती का प्रबन्ध करने वाले
6	काछी	सब्जिया उगाने वाले
7	लोधा	चावल उगाने वाले
8	बढई	बढईगिरी अथवा लकडी का काम करने वाले
9	नाई	हजामत करने वाले
10	कहार	पानी लाने वाले
11	गड़रिया	भेड–बकरिया पालने वाले
12	भड़भूजा	भाड से अनाज भूनने वाले
13	दर्जी	कपडे सिलने वाले
14	कुम्हार	मिटटी के बर्तन बनाने वाले
15	महाजन	व्यापारी
16	तेली	तेल निकालने वाले
17	धोबी	कपडे धोने वाले
18	घालुक	मेट बनाने वाले
19	चमार	चमडे का काम करने वाले
20	भगी	मलमूत्र साफ करने वाले
21	फकीर	पैतृक मुसलमान भिखारी
22	मनीहार	मुसलमान शीशे की चूडिया बेचने वाले
23	धुना	मुसलमान कपास धुनाई करने वाले
24	तवाईफ	मुसलमान नाचने वाली लडकी



सस्कार

सुसस्कारो की योजना को ही सस्कृति कहा जाता है। मनुस्मृति मे उल्लिखित याज्ञवलक्यस्मृति तथा वर्तमान समय मे परवर्ती स्मृतियो मे मुख्य रूप से निम्नलिखित 16 सस्कारो का उल्लेख किया गया है –

1 गर्भाधान सस्कार
2 पुसवन सस्कार
3 सीमन्तोन्नयन सस्कार
4 जात कर्म सस्कार
5 नामकरण सस्कार
6 निष्क्रमण सस्कार
7 अन्नप्राशन सस्कार
8 चूडाकर्म सस्कार
9 कर्णवेध सस्कार
10 उपनयन सस्कार
11 वेदारम्भ सस्कार
12 समावर्त्तन सस्कार
13 विवाह सस्कार
14 वानप्रस्थ सस्कार
15 सन्यास सस्कार
16 अन्त्येष्टि सस्कार

इनमे प्रथम तीन सस्कार जन्म से पूर्व माता–पिता द्वारा सम्पादित होते हैं।

गर्भाधान सस्कार

श्रेष्ठ सन्तान प्राप्ति के लिए यह सस्कार किया जाता है।

पुसवन सस्कार

गर्भधारण करने के दूसरे अथवा तीसरे महीने मे गर्भ की रक्षा के लिए यह सस्कार किया जाता है।

सीमन्तोन्नयन सस्कार

इस सस्कार मे गर्भवती स्त्री के केशो को उठाने का क्रिया विधान है। इस सस्कार द्वारा गर्भवती स्त्री के ऐश्वर्य की कामना की जाती है तथा उसे प्रसन्न रखने का प्रयत्न किया जाता है।

जातकर्म सस्कार

इस सस्कार का उद्देश्य बाधारहित प्रसव तथा शिशु को यशस्वी तथा शूरवीर बनाना है। बालक के जन्म लेते ही किया जाता है। शिशु के शरीर का जरायु अलग कर तथा उसको कोमल वस्त्र से पोछकर पिता की गोद मे दिया जाता है। घृत तथा मधु को बराबर मात्रा मे मिलाकर सोने की शलाका से बालक की जीभ पर ओइम लिखा जाता है तथा उसके दाहिने कान मे 'वेदी सीति (तेरा गुप्त नाम वेद है) इस प्रकार कहा जाता है फिर पिता बालक को सोने की शलाका से घृत तथा मधु चटाता है। चावल और जौ को शुद्ध करके पानी मे

पीसकर वस्त्र से छानकर एक पात्र मे रखकर हाथ के अगूठे तथा अनामिका से थोडा सा लेकर उसके मुख मे डाले तथा ब्राह्मण से उसकी शतायु के लिए आशीर्वाद प्राप्त करे।

नामकरण सस्कार

यह एक महत्वपूर्ण सस्कार है। बृहस्पति ने वीर मित्रोदय सस्कृत प्रकाश' मे नामकरण को अनिवार्य बताया है। नाम समस्त लौकिक व्यवहारो का हेतु है। शिव का आधायक है और भाग्योदय का हेतु ही मनुष्य नाम के आधार पर ही कीर्ति प्राप्त करता है। नामकरण का काल जिस दिन जन्म हो उस दिन से 10 दिन छोडकर 11वे दिन या 101वे दिन अथवा दूसरे वर्ष के प्रारम्भ मे जिस दिन जन्म हुआ हो उचित माना गया है।

निष्क्रमण सस्कार

विधिपूर्वक शिशु को सर्वप्रथम गृह से बाहर निकालने की क्रिया को निष्क्रमण कहा जाता है। उस समय किये जाने वाले सस्कार को निष्क्रमण सस्कार कहा जाता है। इस सस्कार मे शिशु को घर से बाहर लाकर 'तच्चक्षु देवार्हित इस मन्त्र के उच्चारण के साथ उसे सूर्य दर्शन कराना चाहिए। इस सस्कार का उद्‌देश्य बालक का शारीरिक विकास शुद्ध वायु सेवन सृष्टि का अवलोकन है।

अन्नप्राशन सस्कार

छठे या आठवे मास मे जब बालक की पाचन शक्ति मे वृद्धि हो जाती है तब यह सस्कार किया जाता है। अन्नप्राशन मे बालक को घृत दही शहद तीनो को भात के साथ मिलाकर देने का विधान है।

चूडाकर्म सस्कार

इसे केशोच्छेदन अथवा मुण्डन सस्कार भी कहा जाता है। ब्रह्मसूत्रो के अनुसार यह सस्कार बालक के जन्म के तीसरे वर्ष अथवा प्रथम वर्ष मे करना चाहिए। मनु ने इस सस्कार का समय प्रथम अथवा द्वितीय वर्ष स्वीकार किया है।

कर्णवेध सस्कार

इस सस्कार मे बालक के कान बेधे जाते हैं। सुश्रुत सहिता मे अनेक रोगो से रक्षा के लिए तथा आभूषण पहनने के निमित्त कर्ण छेदन का विधान किया जाता है। कात्यायन ने तीसरे अथवा पॉचवे वर्ष कर्ण छेदन सस्कार का विधान किया है। बृहस्पति के अनुसार यह सस्कार जन्म के दसवे बारहवे अथवा सोलहवे दिन करना चाहिए। आश्वालायन गृह्यसूत्र के अनुसार बालक के कर्ण–वेधन का समय तीसरा अथवा पाचवा वर्ष उचित है।

उपनयन सस्कार

उपनयन का शाब्दिक अर्थ है पास ले आना। इसको यज्ञोपवीत सस्कार भी कहते है। कन्या के उपनयन सस्कार के विषय मे कुछ निश्चित नही कहा जा सकता है। शूद्रो का उपनयन सस्कार नही किया जाता है। शेष तीनो वर्णो के बालको का उपनयन सस्कार होता है। आश्वलायन गृह्यासूत्र मे कहा गया है कि जिस दिन बालक का जन्म हुआ हो अथवा जिस दिन गर्भ रहा हो उससे आठवे वर्ष मे ब्राह्मण के ग्यारवे वर्ष मे क्षत्रिय के बारहवे वर्ष मे वैश्य के बालक का उपनयन सस्कार करने की प्रथा है।

वेदारम्भ सस्कार

उपनयन सस्कार के साथ ही वेदाध्ययन करने का विधान है। इस समय किये जाने वाले सस्कार को वेदारम्भ सस्कार कहा जाता है। इस सस्कार मे पहले आचार्य ब्रह्मचारी को अनेक उपदेश देता है तत्पश्चात उसी दिन दूसरे दिन अथवा उपनयन सस्कार होने के एक वर्ष के अन्दर ही गायत्री मन्त्र की दीक्षा के साथ वेदाध्ययनाध्यापन कार्य आरम्भ हो जाता है।

समावर्त्तन सस्कार

इस सस्कार को स्नान सस्कार दीक्षान्त सस्कार भी कहा जाता है। विद्या अध्ययन पूर्ण हो जाने के पश्चात गुरू की आज्ञा लेकर जब ब्रह्मचारी गृहस्थाश्रम मे प्रवेश करने के लिए अपने घर लौटता है तब उसे समावर्त्तन सस्कार कहते हैं। वीर मित्रोदय मे समावर्त्तन के लिए कहा गया है। वेदाध्ययन के पश्चात् गुरुकुल से अपने घर आना समावर्त्तन है। इस सस्कार मे पूर्व ब्रह्मचारी आचार्य को गुरुदक्षिणा भी दिया करते थे तथा ब्रह्मचारी शीतल पवित्र जल से स्नान करके अपनी मेखला तथा दण्ड कोपीन आदि का परित्याग करके केश नख दाढी मूछ कटवाकर सुगन्धित द्रव्य शरीर पर लगाकर सुन्दर वस्त्र तथा पीताम्बर धारण करता था तथा आचार्य का शुभाशीर्वाद प्राप्त करके गृहस्थाश्रम मे प्रवेश करने के लिए अपने घर वापस आता था।

विवाह सस्कार

ब्रह्मचर्य पूर्वक गुरुकुल मे रहकर आचार्यो द्वारा धर्मपूर्वक चारो वेदो तीनो वेदो दो वेदो अथवा एक वेद का सागोपाग अध्ययन करने के पश्चात् ही गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने का विधान था। व्यक्तियो की उच्छृखल एव स्वछन्द प्रवृत्ति को रोकने पुत्रोत्पत्ति द्वारा वश–रक्षा हेतु इस सस्कार का विधान है। पुत्रोत्पत्ति करके व्यक्ति अपने पितृ–ऋण से भी उऋण हो जाता है। कन्यादान सस्कार कन्या के माता–पिता द्वारा किया जाना प्रमुख है। विवाह के अवसर पर वर–वधू के हाथ को पकडकर अपनी स्वीकृति प्रदान करता है तत्पश्चात् दोनो अग्नि की प्रदक्षिणा करते हैं। सप्तपदी भी इस सस्कार की मुख्य क्रिया है।

वानप्रस्थ सस्कार

जीवन के तीसरे भाग मे मनुष्य वानप्रस्थाश्रम मे प्रवेश करता है। उस समय किये जाने वाले सस्कार को वानप्रस्थ सस्कार कहा जाता है। इसका समय 50 वर्ष की आयु के उपरान्त माना जाता है। मनुस्मृति मे कहा गया है कि गृहस्थ लोग जब अपने शरीर का चर्म ढ़ीला तथा केश श्वेत होते हुए देखे और पुत्र का भी पुत्र हो जाये तब वन का आश्रय लेना चाहिए। मुण्डोपनिषद् मे वानप्रस्थ का महत्व बताते हुए कहा गया है कि हे मनुष्यो–जो विद्वान लोग वन मे शान्ति के साथ योगाभ्यास तथा परमेश्वर की श्रद्धापूर्वक भक्ति करते हुए रहते हैं और भिक्षाचरण को करते हुए जगल मे निवास करते हैं वे पापरहित होकर प्राण के द्वारा जहा वह अमर नाश रहित पूर्ण परमात्मा विराजमान हैं वहा जाते हैं।

सन्यास सस्कार

मोहादि आवरण तथा पक्षपात का परित्याग करके विरक्त होकर सम्पूर्ण पृथ्वी पर जन–जीवन के उपकारार्थ भ्रमण करना ही सन्यास सस्कार है। इस सस्कार मे केश–मुण्डन आदि कुछ प्रमुख क्रियाये होती थी। सन्यासी काषाय वस्त्र धारण करता था तथा अपने हाथ में दण्ड तथा भिक्षा पात्र ग्रहण करता था। शतपथ ब्राह्मण मे कहा गया है कि ब्रह्मचर्य गृहस्थ तथा वानप्रस्थ सफलतापूर्वक निर्वाह करने के पश्चात् सन्यास ग्रहण करना चाहिए। इस सस्कार मे व्यक्ति प्रतिज्ञा करता है कि मैंने पुत्र विषयक धन–विषयक तथा विषयक इच्छाओ का सब प्रकार त्याग कर दिया है। मुझसे प्रत्येक व्यक्ति को अभय प्राप्त है। अन्यत्र ब्राह्मण ग्रन्थ मे कहा गया है कि जिस दिन दृढ वैराग्य प्राप्त हो जाये उसी दिन चाहे वानप्रस्थ का समय भी पूर्ण न हुआ हो अथवा वानप्रस्थ का अनुष्ठान न करते गृहस्थाश्रम से ही सन्यास ग्रहण करे। ब्राह्मण ग्रन्थ के एक स्थान पर ब्रह्मचर्याश्रम पूर्ण करने के उपरान्त ही सन्यास ग्रहण करने का सकेत किया गया है।

अन्त्येष्टि सस्कार

मृत्यु के पश्चात् किये जाने वाला यह शरीर का अन्तिम सस्कार है। इस सस्कार को नरमेध पुरुषमेध नरयाग पुरुषयाग भी कहा जाता है। वैज्ञानिक दृष्टि से इस सस्कार के द्वारा सक्रामक रोगो तथा विषैले कीटाणुओ का नाश हो जाता है। इस सस्कार मे मृतक को स्नान कराया जाता है। तत्पश्चात् चन्दनादि का लेप करके नवीन वस्त्र मे शव को लपेट कर शमशान मे लकड़ियो की चिता पर रखकर कपूर डालकर अग्नि प्रज्जवलित की जाती है तथा वेदो के मन्त्रो के पाठ के साथ आहुतिया देने का विधान है। इसका विधान तैन्तिरीयारण्यक के षष्ठाध्याय मे प्राप्त होता है।

इस प्रकार प्राचीन भारत मे इन सस्कारो का अत्यधिक महत्व था। सस्कार विहीन मनुष्य समाज से बहिष्कृत किया जाता था।



रीति–रिवाज

समाज मे रीति–रिवाज पारम्परिक होते हैं जो पीढी दर पीढी चलते रहते है। कुछ रीति–रिवाज के मूल मे वैज्ञानिक तथ्य होते हैं तो कुछ केवल रूढीवादिता के आधार पर मनाये जाते हैं। कृषि प्रधान काय का प्रभाव भी हमारे रीति–रिवाजो पर स्पष्ट रूप से दृष्टिगत होता है। रिवाज का मूल उद्देश्य सौहार्द भावना जाग्रत करना एक–दूसरे के यहा आना–जाना तथा जीवन की दैनिक एकरूपता तथा एकरसता को भग करना है।

वी स्मिथ का कथन है कि भारत मे वेश वर्ण वेशभूषा तथा रीति–रिवाज सम्बन्धी विभिन्नताओ मे भी एक अखण्ड सार्वभौमिक एकता है।

पाणिग्रहण सस्कार के समय रीति–रिवाज के कुछ उदाहरण दृष्टव्य हैं –

1 **गोद भरना** सर्वप्रथम ससुराल पक्ष वाले कन्या की 'गोद भराई की रस्म करते हैं। इस प्रथा मे कन्या की गोद मे साडी नारियल फल मिष्ठान्न आदि रखते हैं। इस प्रकार दोनो पक्ष का सम्बन्ध पक्का हो जाता है।

2 **लग्न लिखाई** लडकी वाले लग्न पत्रिका द्वारा वर पक्ष को आमत्रित करते हैं। इसमे कन्या एव लडके के बान तेल की सख्या निर्धारित होती है।

3 **भात** विवाह के अवसर पर कन्या एव वर के मामा अपने–अपने पक्ष को वस्त्र आदि भेट करते हैं। यही वस्त्र वर द्वारा पहने जाते हैं।

4 **मौड बधाई** मामा द्वारा दूल्हे के सिर पर मौड (मौहर) बाधा जाता है।

5 **घुडचढी** वर के बहनोई द्वारा घोडे की लगाम पकडकर घुडचढी का शुभारम्भ किया जाता है।

6 **जनवासा** घुडचढी के बाद वर अपने घर केवल बहू लेकर ही आता है। बारात प्रस्थान तक वह जनवासे मे ही रहता है।

7 **मदिर दर्शन** घुडचढी के समय ही वर अपने इष्ट देव के दर्शन करने मदिर जाता है। वही कुए पर वर की मा पैर लटका कर बैठ जाती है कि मैं मर रही हू नही तो सेवा करने के लिए मुझे बहू लाकर दे। वर मा को बहू लाने का आश्वासन देता है।

8 **खोडिया** इसे रतजगा भी कहते हैं। बारात प्रस्थान के बाद स्त्रिया अकेली रह जाती हैं इसलिए वे अपना मनोरजन करती हैं साथ ही घर की रखवाली हो जाती है। खोडिया मे लडके की बहन दूल्हा बनकर अन्य स्त्रियो के साथ नाचती गाती है। पहले बारात मे स्त्रियो का जाना वर्जित होता था।

9 **कन्यादान** भावरो के समय माता–पिता मामा–मामी या चाचा–चाची कन्यादान सम्पन्न करते है। परिवार का कोई वृद्ध हो सकता है। कन्यादान करने वाला व्यक्ति उस दिन उपवास रखता है।

10 **गऊदान** विवाह के अवसर पर कन्या पक्ष द्वारा वर पक्ष को गऊदान किया जाता है।

11 **मामा द्वारा गोद** भावरो के समय कन्या को मामा गोद मे उठाकर लाता है। सम्भवत यह प्रथा बाल–विवाह के समय की रही होगी।

12 **खीले डालना** भावरो के समय कन्या का भाई अग्नि मे खील डाल कर आहुति देता है।

13 **छन कहवाई** भावर के बाद कन्या पक्ष वाले वर से छन (छन्द) सुनते है।

14 **विदा** विवाह की भावरो के पश्चात् कन्या द्वारा हलवाई की भटटी को लात मारने का रिवाज है।

15 **चावल फेकना** विदा के समय कन्या द्वारा पीछे आने वाले पारिवारिकजन पर चावल फेकती है जिसका उद्देश्य है कि मैं तो जा रही हू लेकिन मेरे जाने के बाद यह घर भी धन–धान्य से परिपूर्ण रहे।

16 **गृह प्रवेश** बहू की आरती के बाद मार्ग मे 5 या 7 सरैयो मे छोटी–छोटी पूरिया ढककर रखी जाती हैं उन पर बहू पैर रखकर गृह प्रवेश करती है।

17 **कगना खेलना** वर एव वधू के हाथ मे विवाह पूर्व कगना बाधा जाता है। कगने मे सुपारी कौडी, लोहे का छल्ला हल्दी की गाठ और राई की पोटली कलावे मे बाधी जाती है। यह नजर के लिए होता है। कन्या की ससुराल मे वर एव वधू अपने एक हाथ से दूसरे का कगना खोलकर मनोरजन करते हैं।

18 **सटी खेलना** वर–वधू के हाथ मे छोटी–छोटी सटिया दे दी जाती है। कहा जाता है कि एक–दूसरे को मारो। कोई पक्ष हलके ढग से मारता है तो कहा जाता है–ओहो अभी से बडा प्यार हो गया है। इसी प्रकार जब कोई जोर से मारता है तो कहा जाता है कि बडा निर्दयी है। इस प्रकार मनोरजन कराकर प्रगाढता बढाई जाती है।

19 **मुह दिखाई** ससुराल मे बहू का मुह देखकर मुह दिखाई मे दान–दक्षिणा देकर शगुन दिया जाता है।

20 **अन्नापूर्णा** बहू द्वारा प्रथम बार ससुराल मे खाना बनाने पर भेट आदि दिये जाते हैं। इस प्रकार गृह कार्य का बोध कराया जाता है।

इस प्रकार अन्य मागलिक अवसरो पर अनेक प्रकार के काज टेहले रीति–रिवाज आयोजित होते हैं।

जादू–टोना

ग्रामीण हिन्दू–मुसलमान दोनो मे ही जादू–टोना झाड–फूक गडा–ताबीज का प्रभाव अधिक है विशेषकर अशिक्षित लोगो मे। इसी प्रकार भूत–प्रेतो और उनको दूर करन वाले सियानो और फकीरो का इधर की आम जनता मे अधिक प्रभाव है। जो अधविश्वास का प्रतीक है।



व्रत, तीज, त्यौहार पर्व

कौरवी क्षेत्र मे दार्शनिक विचार प्राय एक से है। एकेश्वरवाद आत्मा का अमरत्व कर्म पुनर्जन्म मायावाद मोक्ष निर्वाण भक्ति आदि सभी धर्मो की समान धरोहर है। वेद उपनिषद गीता रामायण महाभारत पुराण स्मृति आदि सभी धार्मिक ग्रन्थ श्रृद्धापूर्वक पढे जाते है। सभी का सम्मान किया जाता है। ब्रह्मा विष्णु महेश लक्ष्मी पार्वती आदि देवी–देवताओ की पूजा सभी स्थानो पर की जाती है। गगा गाय गायत्री सभी स्थानो पर पवित्र एव पूज्य मानी जाती है।

इन सभी देवी–देवताओ इष्ट देवो के लिए व्रतो के साथ–साथ व्रत सम्बन्धी लोक–कथाओ का भी उल्लेख किया गया है।

मकर सक्रान्ति

पौष मास मे सूर्य जब मकर राशि पर जाता है तभी मकर सक्रान्ति का योग बनता है। अग्रेजी तिथि के अनुसार यह पर्व प्रतिवर्ष 14 जनवरी को ही पडता है। मकर सक्रान्ति से सूर्य उत्तरायण स्थित रहने पर दिन बडे और रात्रि छोटी होती है। दक्षिणायन होने पर इसके विपरीत होता है। इस दिन गगा स्नान पर दीन–दुखियो एव भिक्षुओ को खिचडी दान करते है। कहते हैं यशोदा ने कृष्ण को पुत्र रूप मे पाने के लिए इसी व्रत को किया था। इस दिन अनेक स्थानो पर मेले भी आयोजित होते हैं। इसी दिन सास घर से बाहर मन्दिर मे रूठकर चली जाती है। बहु अपने पडोसी की स्त्रियो को एकत्रित कर गीत गाते हुए गाजे–बाजे के साथ अपनी सास को मनाकर घर लाती है तथा वस्त्र दान–दक्षिणा सास को देकर आशीर्वाद प्राप्त करती है।

बसत पचमी

माघ सुदि पचमी को ऋतुराज बसत के आगमन मे बसत पचमी का आयोजन होता है। किसानो मे चैत की बुआई के साथ ही धन–धान्य की देवी लक्ष्मी का आगमन आरम्भ हो जाता है। अगहनी धान की फसल भी तैयार रहती है। विक्रमादित्य के काल मे यह आरम्भ हुआ और गुप्त काल मे यह उत्सव काफी लोकप्रिय हो गया। इसे श्री पचमी का उत्सव भी कहते हैं। किसान आज के दिन अपने हल का पूजन करते हैं। किसान खेती–बारी अर्थात खेती और बारी यानी आम के वृक्ष पर मजरिया मौल निकलने लगती हैं तो निश्चिन्त हो जाता है।

इस दिन पीले वस्त्र पहने जाते है। विद्यार्थी सरस्वती पूजन करते है। इस दिन बच्चे और युवक प्रात से साय तक पतगबाजी करते है। कुछ लोग इस शौक के विरूद्ध है

क्योकि छत पर पतग उडाने से दुर्घटनाए होती है। मूल रूप से यह मैदानी खेल है। कुछ का कथन है कि पतग उडान से नेत्र ज्योति बढती है। वर्तमान समय मे तो पतगबाजी की प्रतियोगिताए भी आयोजित होती हैं। इसी दिन होली का दहन के लिए विधिवत पूजन आदि करके स्थान का चयन एव सात उपले रखकर सगुन रखा जाता है।

होलिकोत्सव

फाल्गुन सुदी 15 को लोग ग्राम की समस्त गदगी यहा तक मन के द्वेश भाव को भी जला देते हैं। अगले दिन दुलहैंडी पर आपस मे फाग खेलते है और एक–दूसरे के गले मिलते हैं। यह पर्व ऊच–नीच जाति के भेदभाव मिटाकर प्रेम भाव जागृत करता है। इस समय तक किसन की कमाई खलिहान मे आ जाती है। वह मन से प्रफुल्लित रहता है। टेसू के रग और गुलाल के सेवन से लोग मस्त हो जाते है। इस पर्व पर लोग मद्य पान जुआ खेलना आदि दुर्व्यसन कर इस पर्व की गरिमा को नष्ट करते हैं। हानिकारक पेट या रग कीचड आदि का प्रयोग करते हैं। होलिका दहन से पूर्व विधिवत पूजन किया जाता है। तीन प्रदक्षिणा की जाती हैं। गेहू की बालियो को भूनकर एक–दूसरे को खाने को देते हैं। यह एक प्रकार से फसल पकने की जाच की जाती है। होली की भस्म को लोग पवित्र मानकर माथे से लगाते है और घर लाते हैं।

कथा

हिरण्यकश्यप राजा ने कठोर तपस्या कर भगवान शिव से यह वरदान माग लिया कि मैं जमीन पर और न आकाश मे मरू। न शाम को न दिन मे मरू। न घर के अन्दर और न बाहर मरू। न मनुष्य से और न पशु से मरू। इस वरदान को पाकर उसे अहकार हो गया और वह स्वय को भगवान समझने लगा।

प्रहलाद हरिण्यकश्यप का इकलौता पुत्र था। एक दिन कुम्हार अपने धधकते आवे से मिटटी के पक्के बर्तन निकाल रहा था। देखते क्या हैं कि आवे के मध्य भाग के एक कच्चे बर्तन से बिल्ली के जीवित बच्चे निकल रहे हैं। प्रहलाद के पूछने पर कुम्हार ने कहा कि यह सब भगवान राम की कृपा है। इस घटना से प्रहलाद के बाल मन मे भगवान राम के प्रति निष्ठा एव विश्वास जागृत हो गया। प्रहलाद के पिता ने बारम्बार कहा कि मै भगवान हू अन्य कोई नही मेरी पूजा करो। प्रहलाद को अनेक प्रकार के कष्ट दिये गये लेकिन उसकी राम के प्रति भक्ति लेशमात्र कम नही हुई। प्रहलाद की बहन होलिका को यह वरदान प्राप्त था कि वह अग्नि मे कभी नही जल सकती है। अन्त मे प्रहलाद को एक लकडी के ढेर पर होलिका की गोद मे बैठा दिया गया तथा अग्नि प्रज्जवलित कर दी। भगवान राम का चमत्कार हुआ कि होलिका तो भस्म हो गयी लेकिन भक्त प्रहलाद का

बाल भी बाका नही हुआ। इसके बाद प्रहलाद को लौह स्तम्भ से बाध दिया और उसके पिता तलवार से मारने के लिए लपके। तभी लौह स्तम्भ से नृसिहावतार जिसका मुह सिह का शरीर मनुष्य का था ने हिरण्यकश्यप की जीवन लीला समाप्त कर दी। तभी से होलिका का दहन पर्व मनाया जाता है।

महाशिवरात्रि

महाशिवरात्रि का व्रत फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी को होता है। इस व्रत को शिवतेरस भी कहा जाता है। इस व्रत मे शिव का पूजन होता है। पूरे दिन व्रत रखकर शिव लिग पर गगा जल दुग्ध एव बेल पत्र चढाया जाता है। भक्त जन भोले बम बम भोले ˜का समवेत स्वर से उच्चारण करते हुए लाखो की सख्या मे पुरुष स्त्री और बच्चे तक कन्धे पर कावड लिये पैदल ही हरिद्वार और ऋषिकेश से गगा जल लाकर शिवलिग पर चढाते हैं। यह धार्मिक भाव इतना बढ रहा है कि प्रशासन को वाहन आदि के लिए अलग से मार्ग घोषित करने पडते है। यह कावड परिक्रमा काल मे जमीन पर नही रखी जाती है। इस व्रत मे शिव पुराण शिव महिमास्तोत्र एव रुडास्टाध्यायी का पाठ किया जाता है।

कथा

समुद्र मथन के समय 14 रत्न प्राप्त हुए इनमे हलाहल भी था। इसका पान करने के लिए कोई भी तैयार नही हुआ। अन्त मे शिवजी ने लोक कल्याण हेतु इस विष का पान किया। इसीलिए उन्हे महादेव कहने है। जब यह विष शिवजी के गले मे गया तो उनका कठ नीला पड गया। इसीलिए शिव को नीलकठ भी कहा जाता है। समस्त राष्ट्र मे शिव के चौदह ज्योर्तिलिग है।

एक अन्य लोक कथा के अनुसार पार्वती द्वारा प्रश्न करने पर शकर जी ने इस व्रत को मुक्तिदायनी महत्ता बतलाई और कहा प्राचीन काल मे एक बहेलिये द्वारा एक सेठ से धन उधार लेकर वापस नही किया गया। सेठ ने उसको शिव मठ मे बद कर दिया। इस मठ मे रात्रि पर्यन्त शिव पूजन चलता रहा। अगले दिन शिव ने धन लौटाने की शर्त पर बहेलिये को मुक्त कर दिया। बहेलिया जगल मे जाकर एक बेल वृक्ष पर शिकार के लिए मच तैयार करने लगा। बेल वृक्ष के नीचे शिवलिग था। इस प्रकार शिवलिग पर बेल पत्र चढते रहे वह दो दिन से भूखा था इस प्रकार अनजाने ही वह शिवरात्रि व्रत कर चुका था। रात्रि मे एक गर्भवती हिरणी के आने पर बहेलिये ने तीर चढाया लेकिन हिरणी ने गिडगिडाकर कहा कि मैं प्रात स्वय आऊगी मुझे छोड दो। इस प्रकार दूसरी और फिर तीसरी हिरणी द्वारा पुन आने की प्रार्थना करने पर छोड दिया। बाद मे हिरण आया उसने भी कहा कि पहली हिरणी मेरी पत्नी है मै उसे मिलकर प्रात स्वय आऊगा। प्रात चारो

आये लेकिन तब तक बहेलिये का अनजाने शिव पूजन एव व्रत द्वारा हृदय परिवर्तन हो गया। इस प्रकार बहेलिये को मोक्ष की प्राप्ति हुई।

महावीर जयन्ती

चैत्र शुक्ल 13 को जैन धर्म के 24वे तीर्थकर भगवान महावीर का ढाई हजार वर्ष पूर्व वैशाली के निकट कुण्ड ग्राम मे जन्म हुआ था। वर्तमान समय मे यह वसुकुण्ड और वैशाली बनिया बसाढ के नाम से जाने जाते हैं। बचपन मे महावीर का नाम वर्धमान रहा है। भगवान महावीर ने 30 वर्ष की आयु मे श्रमण धर्म को ग्रहण कर लिया। 12 वर्ष की कठोर तपस्या के बाद श्रीम्भीकि ग्राम के बाहर त्रिजुपालिका नदी के उत्तरी तट पर मोक्ष अर्थात् कैवल्य प्राप्त किया। वस्त्रो का पूर्णत परित्याग कर दिया। ईसा से पूर्व 500वे वर्ष मे 72 वर्ष की आयु मे उपदेशो का प्रचार करते हुए शरीर को त्याग दिया। भगवान महावीर ने अहिसा सत्य असग्रह तथा अपरिग्रह को विशेष महत्व दिया है।

हनुमान जयन्ती

कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को हनुमान जयन्ती आयोजित होती है। इसमे मगलवार का व्रत रखा जाता है। सर्व पूज्य हनुमान जी श्री राम और सीता के अनन्य भक्त रहे हैं। इस दिन हनुमान चालीसा का पाठ होता है। समस्त दिन व्रत रखकर हनुमान जी की प्रतिमा की पूजा अर्चना कर केवल सायकाल मे मीठा भोजन करते हैं। इस दिन जयन्ती के उपलक्ष्य मे शोभायात्रा एव झाकिया निकाली जाती हैं।

श्री रामनवमी

चैत्र शुक्ल नवमी को श्री राम जी का इक्ष्वाकु वश मे अयोध्या के राजा दशरथ की रानी कौशल्या ने जन्म दिया था। रामचन्द्र जी ने सीता स्वयवर मे धनुष तोडकर सीता जी से विवाह किया। श्री राम के सिहासनारूढ के समय कैकेयी ने पूर्व मे दिये गये दो वर के अनुसार राम को 14 वर्ष का बनवास और भरत को राजगद्दी मागी। राम वन चले गये। वियोग मे पिता दशरथ स्वर्ग सिधार गये। राम ने वनवास के समय राक्षसो एव सीता जी के अपहरणकर्ता रावण का वध किया। अयोध्या लौटने पर श्री राम का राज्याभिषेक किया गया। उन्ही की स्मृति मे रामनवमी के रूप मे श्री राम की जन्मतिथि उल्लासपूर्वक मनाते हैं। इस अवसर पर शोभायात्रा निकाली जाती है। राम–सीता–लक्ष्मण की मूर्तियो का पूजन होता है। तुलसी कृत रामचरित मानस एव बाल्मीकि कृत रामायण का पाठ किया जाता है।

बुद्ध जयन्ती

बुद्ध के बालक काल का नाम गौतम था। ये सिद्धार्थ के नाम से भी जाने जाते हैं।

16 वर्ष की अवस्था मे इनका विवाह हो गया था। सिद्धार्थ के लिए भव्य महल एव विलासिता के समस्त साधन उपलब्ध कराये गये थे। एक दिन पर्यटन करते हुए उन्हे एक वृद्ध दिखाई दिया फिर एक रोगी व्यक्ति तीसरी बार मृतक को देखा तो बहुत द्रवित हुए। चौथी बार एक सन्यासी को देखा तो उनका ध्यान वैराग्य की ओर हो गया। सिद्धार्थ ने गृह त्यागकर महाभिनिष्क्रमण किया। पहाडी निर्जन वनो मे कठिन तपस्या की। जिस वृक्ष के नीचे उन्हे ज्ञान प्राप्त हुआ वह बोधि वृक्ष के नाम से प्रसिद्ध हुआ। 483 ईसवी पूर्व महापरिनिर्वाण प्राप्त किया। भगवान बुद्ध ने अहिसा सत्य अस्तेय अपरिग्रह एव ब्रह्मचर्य के उपदेश दिये। विश्व मे बौद्ध धर्म के अनुयायिओ की सख्या सबसे अधिक है। प्रतिवर्ष बुद्ध पूर्णिमा को भव्य शोभा यात्राए निकाली जाती हैं और उनके उपदेशो का मनन किया जाता है।

वट सावित्री व्रत

इस व्रत को बढमावस भी कहते हैं। ज्येष्ठ कृष्ण 13 से अमावस्या तक तीन दिन तक इस व्रत को करना चाहिए। वट वृक्ष की जड मे ब्रह्मा धड मे विष्णु तथा ऊपर के भाग मे महेश के निवास की मान्यता है। इसीलिए वट वृक्ष की सुहागिन स्त्रियो द्वारा पूजा की जाती है। इस अवसर पर सत्यवान और सावित्री की कथा सुनने का महात्म्य है। वट वृक्ष पर कच्चे धागे लपेट कर सायकाल मे पूजन किया जाता है।

कथा

अश्वपति नामक निसतान राजा भद्र देश मे रहते थे। पुत्र प्राप्ति हेतु राजा रानी ने सावित्री का जप किया। सावित्री ने कहा तुम्हारे भाग्य मे पुत्र नही है। अत पुत्री का जन्म होगा। जिसका नामकरण मेरे नाम पर ही रखना।

पुत्री सावित्री ने बडी होकर जन्माध द्युमसेन जिसका राज्य रूक्मी ने छीन लिया था के इकलौते पुत्र सर्वगुण सम्पन्न सत्यवान से विवाह करने का निश्चय किया। नारद जी ने कहा कि सत्यवान की उम्र कम है और विवाह के एक वर्ष बाद उसकी मृत्यु हो जायेगी। सावित्री ने कहा कि सत्यवान का पति रूप मे वरण कर चुकी हूँ अब अन्य का विचार धर्म सम्मत नही और सत्यवान से विवाह कर लिया। अन्तत सत्यवान की मृत्यु का समय आ गया। सावित्री ने तीन दिन पूर्व से ही व्रत एव देवताओ का पूजन आरम्भ कर दिया। सावित्री प्रतिक्षण सत्यवान के साथ ही रहती थी। सत्यवान जगल मे लकडी काटते समय असह्य पीडा के कारण वृक्ष से नीचे उतरकर सावित्री की जाघ का सहारा लेकर सो गया। तभी यमराज सत्यवान की आत्मा को लेकर दक्षिण की ओर चल दिये। सावित्री यमराज का पीछा करती रही। यमराज ने द्रवित होकर सत्यवान के जीवन को छोडकर वरदान मागने को कहा। सावित्री ने अपने श्वसुर के लिए नेत्र ज्योति मागी। यमराज ने तथास्तु

कहा। सावित्री फिर यमराज के पीछे–पीछे चल दी। यमराज को पुन दया आई और कहा सत्यवान के जीवन को छोडकर अन्य कोई वरदान मागो। इस बार सावित्री ने अपने श्वसुर का छीना हुआ राज्य सिहासन मागा। यमराज ने तथास्तु कहा। सावित्री फिर यमराज के पीछे–पीछे चलती रही। पुन सावित्री से कहा कि सत्यवान के प्राण के अतिरिक्त वरदान माग लो। इस बार सावित्री ने सत्यवान द्वारा सौ पुत्रो की माग की। यमराज ने तथास्तु कहा और सत्यवान जीवित हो गये। तभी से वट सावित्री व्रत को सौभाग्यवती स्त्रिया रखने लगीं।

परशुराम जयन्ती

अक्षय तृतीया को ही परशुराम जी का जन्म हुआ था। भृगु वश मे यमदग्नि नाम के महान तपस्वी का जन्म हुआ। इनका विवाह रेणुका से हुआ। रेणुका से 5 पुत्र उत्पन्न हुए। परशुराम सबसे छोटे थे। परशुराम जहा धीर वीर पराक्रमी दानी सत्यवादी एव आज्ञाकारी थे वहीं महाक्रोधी भी थे। कहते हैं क्षत्रियो ने ब्राह्मणो पर 21 बार अत्याचार किये थे। इस अत्याचार से कुपित होकर उन्होने प्रतिज्ञा की मैं पृथ्वी को 21 बार क्षत्रिय विहीन करूगा और परोपकार के लिए दान मे दे दूगा। फरसा इनका प्रिय शस्त्र था। ये आजीवन ब्रह्मचारी रहे । राम अवतार के बाद तपस्या मे लीन हो गये। मान सरोवर तक इनका प्रभाव था और मानसरोवर मे ही अपना परशु (फरसा) धोते थे। शोभायात्रा द्वारा प्रतिवर्ष इनकी जयन्ती मनायी जाती है।

गगा–दशहरा

गगा दशहरा का उत्सव ज्येष्ठ शुक्ल दशमी को उल्लासपूर्वक मनाया जाता है। मान्यता है कि इसी दिन गगा अवतरित हुई थी। उत्तर भारत के निवासी इस पर्व को परम निष्ठा पूर्वक मनाते हैं।

कथा

अयोध्या के राजा सगर ने अश्वमेघ यज्ञ के लिए घोडे को छोड दिया। राजा सगर के 10 हजार पुत्र (पुत्र समान नागरिक गण) घोडे की रक्षा के लिए पीछे–पीछे चल रहे थे। इधर इन्द्र को अपने सिहासन का भय हुआ और उन्होने घोडे को चुराकर पाताल मे कपिल मुनि के आश्रम मे छिपा दिया। 10 हजार पुत्र खोजते–खोजते पाताल मे पहुच गये। और कपिल मुनि का अपमान करने लगे। तपस्या मे विघ्न के कारण कपिल मुनि ने नेत्र खोले तो 10 हजार पुत्र भस्म हो गये। राजा सगर ने पुत्रो के जीवन की विनती की। कपिल मुनि ने कहा–कि गगा के पृथ्वी पर अवतरण करने पर ही ये जीवित हो सकते है और इस समय गगा ब्रह्मा जी के कमडल मे हैं।

राजा सगर पृथ्वी पर गगा को लाने के लिए तपस्या करते–करते अतर्ध्यान हो गये। इसके बाद उनके पौत्र भगीरथ ने भगीरथ प्रयत्न से पर्वतो को काटकर गगा को अवतरित किया और 10 हजार पुत्र भी जीवित हो गये। यह स्थान गगा सागर के नाम से और गगा भागीरथी के नाम से प्रसिद्ध हुई। तभी से गगा दशहरा का पर्व मनाया जाने लगा। कृषि प्रधान देश मे गगावतरण से फसले लहलहा उठी जिससे जीवनदान मिला।

गुरू पूर्णिमा

आषाढ शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा गुरू पूर्णिमा कही जाती है। प्राचीन काल मे विद्यार्थी गुरूकुल मे नि शुल्क शिक्षा दीक्षा ग्रहण करते थे और गुरू की सेवा करते थे। प्रति वर्ष इस दिन छात्र अपने गुरू का पूजन कर दान दक्षिणा देते हैं। गुरू पूजन प्रात काल होता है। गुरू को उच्चासन पर बैठाकर माल्यार्पण करना चाहिए।

देवशयनी एकादशी (हरिशयनी)

आषाढ शुक्ल पक्ष मे होने वाली देवशयनी एकादशी मे भगवान विष्णु चार मास तक पाताल मे शयन करते हैं। यह विष्णु जी का 'निद्रा काल होता है। इसलिए इसे चतुर्मास भी कहते हैं। इसे पद्मा एकादशी भी कहते हैं। कार्तिक शुक्ल एकादशी को प्रत्यागमन होता है इसलिए इसे हरिशयनी एकादशी तथा कार्तिक वाली एकादशी को प्रवोधिनी कहा जाता है। इस समय विवाह आदि शुभ कार्य वर्जित हो जाते हैं।

कथा

सतयुग मे मान्धाता नामक चक्रवर्ती सम्राट के राज्यकाल मे 3 वर्ष तक वर्षा नही होने के कारण अकाल पड गया। चारो ओर हाहाकार मच गया। मान्धाता ब्रह्मा जी के पुत्र अगि ऋषि के आश्रम मे जाकर इस दुर्भिक्ष का कारण जानना चाहा। अगि ऋषि ने कहा आपके राज्य मे कोई शूद्र तपस्या कर रहा है। उसका वध करने पर ही यह सकट समाप्त होगा। तब राजा ने उस निरपराध को न मारने का विकल्प ज्ञात किया। तब ऋषि ने पद्मा एकादशी का व्रत रखने को कहा। व्रत रखने पर घनघोर वर्षा हुई और राज्य धन–धान्य से परिपूर्ण हो गया।

रक्षा बन्धन

श्रावणी और रक्षाबधन यह दोनो पर्व श्रावण की पूर्णमासी को साथ–साथ आयोजित होते हैं।

श्रावणी

ब्रह्मचारियो को शिक्षा अध्ययन प्रारम्भ करने के लिए यह शुभ दिन है। पहले ऋषि लोग उपाकर्म कराकर विद्या अध्ययन का श्रीगणेश करते थे। उपाकर्म विधान के अन्तर्गत ब्रह्मचारी स्नान करके शरीर शुद्धि के लिए पाचजन्य का पान करता है। पचगण्य गाय का दूध दही घी गोबर और मूत्र को मिलाकर बनाया जाता है। इसके बाद शुद्ध जल मे खडे होकर भगवान भास्कर की पूजा करनी चाहिए।

उपाकर्म के पश्चात उत्सर्जन किया जाता है। इस विधि मे भगवान भास्कर को जल देने के बाद सप्तर्षियो का पूजन कर दही और सत्तू की आहुतियो देकर अरूधति का पूजन किया जाता है। इस विधि के बाद गायत्री मत्र का जाप कर यज्ञोपवीत्त धारण किया जाता है। इसमे पितरो का भी तर्पण किया जाता है। एक समय का उपवास भी किया जाता है। इस दिन ब्राह्मण ऊनी या सूती पीले वस्त्र मे चावल की पोटली बाधकर हल्दी मे रगकर एक पात्र मे रखता है। घर मे स्वच्छता से चौक पूर कर अन्न से भरे कलश के ऊपर चावल की पोटली रखकर यजमान कलश पूजन करता है। पूजन के पश्चात् ब्राह्मण पीली पोटली को रक्षा सूत्र के रूप मे यजमान के हाथ मे बाधते हुए इस श्लोक का पाठ करे –

येन बद्धो बलि राजा दानवेन्द्रो महाबल ।
तेन त्वा प्रतिबध्नामि रक्षे माचल माचल।।

रक्षाबधन

इस पर्व पर बहने अपने भाई के हाथ मे कलावे का धागा बाधती हैं। वर्तमान समय मे तो एक से एक महगी और कलात्मक राखी का प्रचलन हो गया है। भाई अपनी बहन की रक्षा का व्रत लेता है तथा उपहार आदि देता है। द्वार पर हाथ का छापा ॐ स्वास्तिक के चिन्ह बना कर राखी चिपकाई जाती है। जौ के अकुर कान पर रखे जाते हैं। इस प्रक्रिया से फसल के लिए उपयुक्ता आकी जाती है। इस पर्व को सलूनो भी कहते है। ब्राह्मण यजमान को राखी बाधते हैं। बडे अपने से छोटो को राखी बाधकर उनकी रक्षा का वचन देते है।

कथा

पुराण मे श्री कृष्ण ने युधिष्ठिर से एक कथा का वर्णन किया है। देव और दानवो मे 12 वर्ष से घमासान युद्ध चल रहा है। देवताओ की निरन्तर हार हो रही है। इन्द्र हतोत्साह होकर आत्महत्या करने के लिए उद्यत हैं। ऐसे समय मे इन्द्र की पत्नी शची ने श्रावण पूर्णिमा को कलावे मे पोटली बाध कर ब्राह्मण से इन्द्र के दाहिने हाथ मे बाध दिया। अगले युद्ध मे दानव परास्त हो गये।

मध्यकालीन ऐतिहासिक घटना के अनुसार चित्तौड की हिन्दू रानी कर्मवती ने दिल्ली के मुगल बादशाह को अपना भाई मानकर राखी भेजी थी। हुमायू ने रानी कर्मवती को बहन मानकर गुजरात के राजा बहादुर शाह को युद्ध मे पराजित कर बहन के सम्मान की रक्षा की। एक अन्य कथा मे भगवान श्री कृष्ण के हाथ मे चोट लग जाती है और रक्त बहने लगता है। द्रोपदी ने तुरन्त धोती का किनारा फाडकर भाई के हाथ मे बाध दिया। इसी बधन के ऋणी श्रीकृष्ण ने दु शासन द्वारा चीर हरण करते समय द्रोपदी की लाज बचायी थी।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी

भादो बदी अष्टमी को भगवान श्री कृष्ण का जन्म कस के कारागार मे अर्द्ध रात्रि मे हुआ था। जन्म दिवस प्रत्येक घर मे उल्लास पूर्वक मनाया जाता है। श्रद्धालुजन व्रत रखते हैं और रात्रि मे 12 बजे भगवान कृष्ण के जन्म के बाद दर्शन कर प्रसाद द्वारा फलाहार ग्रहण कर उपवास तोडते हैं। मदिरो मे श्री कृष्ण की भव्य झॉकियॉ सजती है और कीर्तन होते हैं। गीता और भगवान ग्रथ का पाठ किया जाता है।

कथा

मथुरा के अत्याचारी राजा कस को भविष्यवाणी हुई– 'तुम्हारी देवकी का आठवा पुत्र तुम्हारी हत्या कर देगा। कस ने देवकी और उसके पति वासुदेव को कारागार मे डाल दिया। पापी कस ने देवकी के सात पुत्रो का जन्म लेते ही वध कर दिया। आठवे पुत्र श्री कृष्ण का जन्म भादो की अधकार पूर्ण रात मे हुआ। वासुदेव जी ने इस बालक को गोकुल मे नद के यहा पहुचा दिया और उनकी नवजात पुत्री को कृष्ण के स्थान पर ले आये। कस को जैसे ही पता चला तो उसने बच्ची का वध करने के लिए पत्थर पर पटकना चाहा तो कन्या आकाश मे उड गयी और आकाशवाणी की– हे कस तुझे मारने वाला गोकुल मे पैदा हो चुका है। इस प्रकार श्री कृष्ण ने बडे होकर पापी कस और अन्य दुष्टो का सहार कर पृथ्वी को पाप मुक्त किया। तभी से श्री कृष्ण जन्माष्टमी का पर्व मनाया जाता है। भगवान श्री कृष्ण जी ने श्री मद्भागवत गीता मे अर्जुन को उपदेश देते हुए कहा है –

यदा–यदा ही धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानम धर्मस्य तदात्मा सृजाम्हम।।

हरयाली तीज

स्त्रिया तीज का पर्व बडे उल्लास से मनाती हैं। इस दिन स्त्रिया श्रृगार करती हैं और अपने हाथो मे मेहदी लगाती हैं। सामूहिक रूप से झूला झूलती हैं और सावन के गीत गाती हैं। इस दिन हरे रगो के वस्त्र पहनते है।

अनन्त चतुर्दशी

अनन्त चतुर्दशी का व्रत भाद्रपद के शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी तिथि को धन धान्य की वृद्धि के लिए किया जाता है। एक कच्चे सूत या कलावे मे 14 गाठ देकर माला की तरह बनाकर हल्दी मे रगकर पूजन करके दाहिने हाथ मे बाधना चाहिए। कुछ लोग 14 दिन पहनकर गगा मे सिला देते हैं। कुछ वर्ष पर्यन्त पहनते हैं। महिलाए इसे बाये हाथ मे पहनती हैं। यह अनन्त भगवान विष्णु का व्रत है। इस दिन एक ही अन्न का और बिना नमक का जैसे खीर आदि का भोजन करते हैं।

नाग पचमी

श्रावण शुक्ल पचमी के दिन नाग का पूजन होता है। इसलिए इसे नाग पचमी कहते हैं। इस पर्व मे द्वार पर नाग देवता के चित्र अकित करते हैं। इस पर्व का उद्देश्य परिवार की मगल कामना से भी होता है। इसके साथ–साथ वर्षा ऋतु से भी सम्बन्ध है जब साप अधिक होते हैं। हिन्दू सस्कृति मे सर्प देवता का पूजन होता है। उसे दुग्ध पान कराते है और कुशलता की कामना करते हैं। इस पर्व पर नाग के दर्शन करना शुभ होता है। पर्व से पूर्व रात्रि मे सुहागिन स्त्री अपने हाथो को मेहदी से सजाती है।

हरित तालिका व्रत

यह व्रत सुहागिनो द्वारा भाद्र शुक्ल पक्ष तृतीया को किया जाता है। इस व्रत मे शकर पार्वती का पूजन होता है। रात्रि जागरण कर महिलाये मगल गीत गाती हैं। इस पर्व को 'तीज भी कहते है। यह व्रत भाद्रपद द्वितीया को सायकाल भोजन के उपरान्त आरम्भ होता है। तृतीया को निर्जला व्रत रखते है और चतुर्थी के दिन प्रात स्नानादि से निवृत्त होकर चना निगल कर व्रत तोडा जाता है।

करवाचौथ

करवाचौथ का व्रत कार्तिक कृष्ण चतुर्थी को मनाया जाता है। करवाचौथ पर भी भित्ति चित्र अकित किया जाता है। इस चित्र मे एक वर्गाकार के अदर एक स्त्री का चित्र चौथ का चाद और एक करवे का चित्र बनाया जाता है। इस चित्र के चारो ओर फूल पत्तियो की सजावट भी की जाती है। स्त्रिया पूरे दिन उपवास रखकर इस त्यौहार को मनाती है। इसे केवल सुहागिन स्त्रिया ही सुहाग के लिये मनाती है।

अहोई व्रत

यह व्रत कार्तिक कृष्ण पक्ष अष्टमी को मनाया जाता है। इस दिन बच्चो वाली माता पूरे दिन व्रत रखती है। इस दिन तारे निकलने के बाद दीवार पर अहोई का चित्र तथा साथ मे सेही तथा सेही के बच्चो का चित्र बनाकर पूजन करे। चादी की अहोई बनाकर

उसके साथ दो चॉदी के मोती हार रूप मे पिरोकर रोली चावल से पूजन करे। जल के लोटे पर स्वास्तिक बनाकर एक थाली मे साडी रुपये मिष्ठान आदि का बायना निकाले। हाथ मे सात दाने गेहू के लेकर कहानी सुने। फिर अहोई को गले मे पहने और बायने को सास जी की चरण वन्दना कर उन्हे देवे। पुत्रो के जन्म के अनुसार और पुत्रो के विवाह के अनुसार प्रत्येक बार दो–दो दाने अहोई मे डालते जाये। अहोई पूजन करके कहानी सुनते है।

धनतेरस (धन्वन्तरि जयन्ती)

धनतेरस कार्तिक मास कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी की दीपावली से पूर्व होता है। घर की सफाई लिपाई पुताई आदि कार्य आरम्भ हो जाता है। इस दिन आवश्यकतानुसार नये बर्तन वस्त्र आभूषण बाजार से खरीदते हैं। लोक मान्यता के अनुसार इस दिन किसी को कोई वस्तु उधार देना वर्जित है। इस दिन घर मे लक्ष्मी का वास मानते है। इसी दिन धन्वतरि वैद्य समुद्र से कलश लेकर प्रगट हुए थे। इसलिये धनतेरस को धन्वतरि जयन्ती भी कहा जाता है।

शरद पूर्णिमा

आश्विन शुक्ल पूर्णिमा को शरद पूर्णिमा कहते है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से शरद पूर्णिमा की रात्रि स्वास्थ्य लाभ प्रदान करती है। चन्द्रमा की किरणो से शीतल अमृत वर्षा होती हैं। इस तिथि को चन्द्रमा पृथ्वी के अत्यन्त निकट आ जाता है। रात्रि मे दूध मे चौले भिगोकर प्रात सेवन करते है। चादनी रात मे भगवान को स्थापित कर श्वेत वस्त्र पहनकर पूजन किया जाता है।

दीपावली

दीपावली का भारत के चार राष्ट्रव्यापी त्यौहारो मे महत्वपूर्ण स्थान है। कार्तिक कृष्ण पक्ष की अमावस्या पर यह तयौहार मनाया जाता है। इस दिन गहन अधकार होता है। इसलिये दीप प्रज्जवलित किये जाते है। धन सम्पदा ऐश्वर्य एव सुख की देवी लक्ष्मी जी एव गणेश जी का लक्ष्मी स्तोत्र का पाठ होता है। घर की सफाई होती है क्योकि वर्षा ऋतु मे गदगी एव मच्छर आदि व्याप्त हो जाते है।

गोवर्धन व अन्नकूट

दीपावली से अगले दिन कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को अन्नकूट का उत्सव मनाया जाता है। इसी दिन गोवर्धन पूजा भी होती है। इस तिथि को गोबर का अन्नकूट निर्मित किया जाता है और श्रीकृष्ण जी की मूर्ति स्थापित कर आसपास ग्वाल–बाल बनाकर पूजन

किया जाता है। इसी दिन असुरराज बलि की भी पूजा की जाती है। इस पूजन से वर्षा और स्वास्थ्य पर्यावरण के मूल स्रोत गोवर्धन के माध्यम से पर्वत पूजन होता है।

विजयदशमी

यह पर्व आश्विन मास मे शुक्ल की दशमी तिथि को आयोजित होता है। मूल रूप से क्षत्रियो का पर्व है। लेकिन अब सभी जाति के लोग मनाते है।

कथा

श्री रामचन्द्र जी के वनवास काल मे लकापति रावण ने सीता जी का अपहरण कर लिया था। श्री राम ने इसी तिथि को लका पर आक्रमण कर रावण का वध किया था। समाज को दैत्यो के दमन से मुक्ति दिलाने से यह पर्व विजयदशमी अथवा दशहरा के रूप मे आयोजित होता है।

देवोत्थान एकादशी

कार्तिक शुक्ल पक्ष एकादशी को देवोत्थान या देवउठान एकादशी होती है। इस दिन घर की सफाई की जाती है। घर के आगन मे चित्र अकित किया जाता है। पकवान फल सिघाडा गन्ना आदि अर्पित कर डलिया से ढक दिया जाता है। एक दीपक रात्रि पर्यन्त जलाया जाता है। किवदती है कि भाद्रपद की एकादशी को भगवान विष्णु ने शकासुर रासक्ष का वध कर भारी थकावट को सहन कर कार्तिक शुक्ल एकादशी को नयनोन्मीलित किया था। इस तिथि के बाद ही विवाह आदि शुभ कार्य प्रारम्भ होते है।

सन्तोषी माता व्रत

शुक्रवार को मा सन्तोषी का व्रत पूजन किया जाता है। इस व्रत मे गुड और चने का भोग लगता है। इस दिन खटटी वस्तुए खाना नितान्त वर्जित है। इस दिन गुड चना माता का पूजन कर गऊ को खिलाना चाहिए। इस व्रत से स्त्रियो के मनोरथ पूर्ण होते है। 16 शुक्रवार निरन्तर व्रत करने के बाद 'उद्यापन कर कन्याओ को भोजन कराते है।

श्री सत्यनारायण व्रत

यह व्रत किसी भी दिन किया जा सकता है। इस व्रत से मनुष्य धन–धान्य से परिपूर्ण मोक्ष को प्राप्त करता है। इसके पूजन मे केले फल चरणामृत एव कसार का भोग लगता है।



लोक देवता

लोक देवता एक ऐसी पारम्परिक श्रद्धा है जिससे एक विशेष परिवार ग्राम अथवा समाज से जुडा होता है। यह मान्यता राष्ट्रव्यापी नही होती है। लोक देवता की मान्यता किसी व्यक्ति विशेष अथवा परिवार की किसी प्राचीन घटना से भावात्मक सम्बन्ध रखती है जो पीढी दर पीढी चलती रहती है। आने वाली सन्तान भी इस मान्यता को असीम श्रद्धा देती है। कभी–कभी यह घटना या चमत्कार परिवार से आगे बढकर एक बडे समाज का रूप धारण कर लेती है जो रूढिगत लोक परम्परा मे परिवर्तित हो जाता है। लोक देवताओ तथा देवियो के कुछ विशिष्ट दृष्टान्त प्रस्तुत कर रहे हैं –

शीतला माता

ग्रामो मे शीतला माता की मान्यता आज भी एक बहुत बडे समुदाय मे विद्यमान है। चेचक के भीषण रोग से मुक्ति पाने के लिए शीतला देवी की मान्यता आरम्भ हुई थी। भीषण गर्मी के प्रभाव से चेचक रोग का जन्म होता है लेकिन देवी माता का नाम विरोधाभाषी शीतला है। सम्भवत इस प्रकोप की भीषणता को कम करने के लिए नामकरण मे मनोवैज्ञानिक विधि अपनाई गई है। इस रोग मे शरीर मे छोटे–छोटे निशान बन जाते है। शीतला माता को स्नान कराकर भी शान्त किया जाता है।

आज भी आपको ग्रामो के बाहर शीतला माता के छोटे मन्दिर या मठ पर्याप्त सख्या मे देखने को मिलेगे। शीतला माता का पूजन व्रत द्वारा एव फल फूल मिष्ठान आदि से सम्पन्न किया जाता है। ढोल नगाडे भी बजाये जाते हैं। मन्त्र तन्त्र गण्डा ताबीज टोना टोटका भी माता को शान्त करने के लिए किये जाते हैं। बीमारी वाले घर के बाहर नीम की पत्तिया भी बाधी जाती है।

विज्ञान द्वारा गत अनेक वर्षो से चेचक रोग का जड से उन्मूलन हो चुका है लेकिन शीतला माता की मान्यता आज भी यथावत है। यहा तक कि गाव के मुसलमान भी चेचक की देवी शीतला माता व अन्य देवी–देवताओ की मिन्नत मागते हैं। ये वे मुसलमान हैं जो धर्मान्तरण द्वारा मुसलमान बने हैं। वे अपने पुराने रीति–रिवाज नहीं छोड सके। यह रीति रिवाज की व्यापकता का प्रभाव है।

कण्ठी माता

कण्ठी माता भी गले के अन्दर खसरा चेचक या गलफैड रोग को शान्त करती है। नेत्र के रोग भी कण्ठी माता शान्त करती है ऐसी मान्यता है। सोमवार को स्त्रियो द्वारा कण्ठी माता का पूजन किया जाता है। मेरठ मे बच्चा पार्क के पास कण्ठी माता का प्राचीन एव विशाल मदिर स्थापित है। कण्ठी माता पर चादी के नेत्र चढाए जाते हैं। होली से पूर्व माता पर गुलाल का प्रसाद भी चढाया जाता है।

गलफैड गलघोटू (डिपथीरिया) चेचक आदि के टीके बाल्यकाल मे लगाने से इस जानलेवा बीमारी का समाधान भी गत अनेक वर्षो से हो चुका है। लेकिन लोक जीवन मे कष्ठी माता की मान्यता एव श्रद्धा पूर्ववत है।

फूलवती देवी

कण्ठी माता मेरठ के बराबर मे ही फूलवती देवी का मदिर है। देवी को खसरा माता' भी कहा जाता है। शरीर पर गर्मी से खसरा के छोटे–छोटे दाने उभर आते है। यह माता खसरा को शान्त करती है।

नाग देवता

कौरवी क्षेत्र के जनपदो मे लोक मान्यता है कि घर मे जब कोई सर्प दिखाई देता है उसे अपना पूर्वज मानते हैं। कहते हैं कि उनके किसी प्रिय पूर्वज ने स्वर्गवास के बाद नाग की आत्मा धारण कर ली है। घर मे निवास करने वाले सर्प को पारिवारिक जन नाग देवता या सर्प देवता के रूप मे मानते हैं। नाग देवता को दूध पिलाकर हाथ जोडकर नमस्कार करते हैं। प्राय लोगो का कथन है कि घर के नाग देवता किसी को काटते नही है बल्कि परिवार के कष्टो का निवारण करते हैं। इसलिए सर्प को मारते नही बल्कि मागलिक अवसरो पर नाग देवता का पूजन किया जाता है।

सती देवी

प्राचीन काल मे इस क्षेत्र मे भी सती प्रथा का रिवाज था। पति के स्वर्गवास होने पर पत्नी भी सोलह श्रृगार कर पूजन आदि के पश्चात अपने पति के साथ चिता मे बैठकर जीवित ही आत्म बलिदान कर देती है। आज भी ग्रामो के बाहर या खेत के किसी कोने मे सती देवी या सती माता का मठ अनेक स्थानो पर देखने मे आता है। गाव के सभी लोग सती देवी का पूजन कर सम्मान देते हैं। आज भी यदा–कदा समाचार पत्रो मे सती की घटनाए सुनने मे आती हैं। जबकि सरकार ने इस प्रथा पर कानूनी प्रतिबन्ध लागू किया हुआ है।

ललता देवी

कण्ठी माता मदिर के ठीक पीछे ललता माता का मदिर है। इन्हे गुडगावे वाली माता भी कहते हैं। यहा माता के सम्मुख गत सोलह वर्ष से रात–दिन दीपक जल रहा है। यह स्थान मेरठ मे स्थित है।

समाधि

साधु सन्यासी के प्राण त्यागने पर ग्रामीण जन महात्मा की स्मृति मे समाधि का निर्माण कर देते हैं। ग्रामीण जन इस समाधि को श्रद्धापूर्वक नत मस्तक होते है। दिवगत महात्मा को लोक देवता के रूप मे मान्यता देते है।

पारिवारिक जन

परिवार मे जब किसी वृद्ध का स्वर्गवास हो जाता है अथवा किसी युवा व्यक्ति की अकाल मौत होने पर पारिवारिक जन उनकी स्मृति मे एक छोटा सा मठ बना देते हैं। मागलिक अवसरो पर दीपक जलाकर सम्मान देते हैं।

सत्यकथा

जनपद बिजनौर के स्यौहारा कस्बे मे एक ब्राह्मण परिवार बैलगाडी से गगा मेला जा रहा था। रात्रि के समय मार्ग मे उनका गोद का बच्चा गाडी से नीचे गिर गया और उन्हे ज्ञात नही हो सका। गाडियो की लम्बी कतार थी और सब लीक से चल रही थी। अगले दिन तलाश करने पर क्या देखते हैं कि एक उल्लू बच्चे के ऊपर पख फैलाकर उसकी रक्षा कर रहा है और बच्चा जीवित है। तभी से यह परिवार मागलिक कार्य आरम्भ करने से पूर्व उल्लू की पूजा करता है। इस प्रकार उल्लू को परिवार ने अपना लोक देवता मान लिया।

पीर

मुसलमान भी अपने पीर बाबा या मौलवी की मृत्यु के बाद खेत के एक कोने मे या गाव के अन्दर या बाहर कब्र मे दफना देते हैं। उसकी कब्र को सफेदी से पुताई करते रहते हैं और इस प्रकार पीर बाबा के रूप मे मान्यता देते हैं।

मन्सा देवी

मन्सा देवी जो मनसा पूर्ण करे। हमारी इच्छा एव लालसा को मन्सा देवी पूर्ण करती है। मन्सा देवी के प्रति यह लोक मान्यता है। स्नानादि से निवृत्त होकर शुद्ध मन से मन्सा देवी के दर्शन किये जाते हैं। प्रसाद चढाया जाता है। कुछ लोग उपवास भी रखते हैं। मन्सा देवी के दर्शन रविवार को प्रात किये जाते हैं। मन्सा देवी का विशाल मदिर मेरठ एव हरिद्वार मे स्थित है जहा श्रद्धालु बडी सख्या मे दर्शनार्थ जाते हैं और अपनी इच्छाओ की पूर्ति के लिए मनौती मागते है।

वृक्ष पूजा

पीपल बढ या बरगद के वृक्ष की लोग वृक्ष देवता के रूप मे पूजा करते हैं। यह पूजा दो रूपो मे है—एक वृक्ष के प्राकृतिक या पार्थिव रूप मे पूजते हैं। दूसरे रूप मे वृक्ष के प्रतीकात्मक रूप मे पूजना अर्थात् वृक्ष के गुणो की पूजा करना। पीपल का वृक्ष सबसे अधिक पवित्र एव जीवनदाता माना जाता है। प्राय मन्दिरो मे पीपल और बरगदो के वृक्ष पाये जाते है और लोग श्रद्धापूर्वक उनका पूजन करते हैं।

जल पूजा

पर्व एव उत्सव के अवसर पर गगा मे अथवा तीर्थ के सरोवर मे सामूहिक रूप से पवित्र स्नान किया जाता है। गगाजल को लोग बडी पवित्रता से घर मे रखते हैं। मागलिक अवसरो पर गगा जल द्वारा पूजन किया जाता है। गगा जल की विशेषता है कि यह कभी खराब नही होता है। सूर्य भगवान एव चन्द्रमा पर तथा समस्त देवी–देवताओ पर श्रद्धापूर्वक जल चढाया जाता है।

पशु पूजा

नरसिहावतार की तो पूजा होती ही है परन्तु इसके अतिरिक्त अन्य पशुओ को भी पूजते हैं। जैसे शिव के वाहन नादिया गाय को माता के रूप मे गणेश के वाहन मूसक सरस्वती वाहन हस मकर वाहिनी देवी के वाहन मकर तथा दुर्गा के वाहन सिह का भी पूजन किया जाता है।

जाहरवीर

परीक्षितगढ मे अश्वारोही सैनिक के रूप मे मूर्ति सहित मन्दिर स्थित है। इसी स्थान पर घोडे के नीचे उनकी कब्र भी निर्मित है। यह सैनिक सिद्ध माने जाने वाले हिन्दू वीर जाहर वीर उर्फ जाहर दीवान की है। यहा श्रावण मास मे प्रतिवर्ष एक सप्ताह का छडियो का मेला लगता है। दसवी के दिन मन्दिर मे छडी (झण्डी) का तथा इलायची दाने का प्रसाद चढाया जाता है।

सभवत सन्त कबीर के विवादग्रस्त अन्तिम सस्कार के समान हिन्दू और मुसलमानो ने अपनी प्रथा के अनुसार एक ही स्थान पर मदिर और कब्र की स्थापना की है। मदिर गौरखपथी परम्परा का प्रतीक लगता है। जाहरवीर का मेला तहसील सरधना के सताना स्थान पर भी आयोजित होता है। सम्भवत इजहार मिया और जाहर दीवान एक ही दो नामो से प्रसिद्ध है। जनपद मुजफ्फरनगर मे कान्धला के निकट अटटा स्थान पर जाहरवीर इजहार मिया के गुग्गा गौरख और महसू के नाम से विख्यात हैं। सावन के महीने मे यहा औरते पखे से आगे की ओर हवा करती हुई चलती हैं। इसी तिथि को यहा बोल कबूल की जाती है। चने दाल चीनी गुड खजूर और साबुत प्याज को चढाया जाता है। मेरठ के ग्राम रोहटा नामक स्थान पर भी जाहरवीर की घोडे पर मूर्ति स्थापित है। यहा लोग चौदस के दिन प्रसाद चढाते है और मिन्नत मागते हैं।

जहानाबादगज जनपद बिजनौर से एक किलोमीटर दूर गगा के किनारे स्थित है। इस गाव का धार्मिक एव ऐतिहासिक दृष्टि से महत्व है। मुगल साम्राज्य मे यह गाव एक

रियासत था। जिसके अन्तर्गत 101 गाव थे। इसी जहानाबाद के बारे मे एक लोककथा बहुत प्रचलित है जिसके कारण इस गाव का धार्मिक महत्व आज भी बना हुआ है। कथा का सार है कि मुगल शासनकाल मे साधु स्वभाव के जाहर दीवान अपनी निस्वार्थ सेवा सरलता स्नेह प्रेम के कारण दूर–दूर तक विख्यात थे। ये सर्पदश के पीडितो मे नई जान फूकने की अद्भुत क्षमता रखते थे और इसके लिए वे किसी से कोई धन नही लेते थे। जनश्रुति है कि मुगल शासक सम्भवत शाहजहा की बेगम को सर्प ने डस लिया था। जाहर दीवान ने राजा की बेगम की देह मे प्राण फूक दिये थे। इससे राजा बहुत प्रभावित हुए और उसने जाहर दीवान को जहानाबाद की रियासत उपहार मे दे दी। जहानाबाद ग्राम मे जाहर दीवान का मेला आज भी लगता है।

अविन्तका देवी का मदिर

किवदन्ती है कि बुलन्दशहर मे अहार स्थान के निकट गगा के समीप अवन्तिका देवी का मदिर है। इसी स्थान से रूक्मणि का अपहरण करके श्रीकृष्ण भगवान लाये थे। यहा रूक्मणि कुण्ड भी है जहा रूक्मणि स्नान करती थी। अहार को ही महारानी रूक्मणि की जन्मस्थली बताते हैं। यहा प्रतिवर्ष शिवरात्रि को बडा भारी मेला लगता है। हजारो की सख्या मे शिवभक्त यहा जलाभिषेक करते हैं।

लोक कथा

वहलना उर्फ पारस नगरी

जैन धर्म के 23वे तीर्थकर भगवान पार्श्वनाथ का वहलना (पारसनगरी) जनपद मुजफ्फरनगर की लोक कथा है। इस मदिर के विषय मे चमत्कारिक मान्यता प्रसिद्ध है कि एक बार कुछ चोरो ने यात्री के रूप मे घुसकर चोरी करने का प्रयास किया था। भगवान पार्श्वनाथ बाबा के चमत्कार से चोर अन्धे हो गये । चोरो ने मदिर मे ही भगवान की प्रतिमा के सामने प्रायश्चित किया तब चोरो को उसी समय दिखाई देने लगा। यहा के चमत्कार की एक अन्य कथा भी बहुत प्रचलित है। शिखर पर जब निर्माण कार्य चल रहा था तो एक मजदूर सीधे कुए मे गिर गया। सीडी लगाकर उस मजदूर को कुए से बाहर निकाला गया तो ईंट पत्थर व पानी होने के उपरान्त भी मजदूर से शरीर पर कोई खरोच तक नहीं आई।

श्रवण कुमार

कौरवी क्षेत्र मे श्रवण कुमार की कथा बडी प्रसिद्ध है। कहा जाता है कि रटौल जनपद मेरठ जहा के आम विश्व प्रसिद्ध हैं के पास जब श्रवण कुमार अपने अन्धे माता

पिता को लेकर आ रहा था तो उसे मति विभ्रम हो गया था। उसने अपने माता पिता की कावर कन्धे से उतारकर जमीन पर रख दी और कहने लगा कि मै वापिस जा रहा हू। अन्धे माता–पिता बडे दु खी और आश्चर्यचकित हुए। उन्होने कहा कि हमे इक्षुमति (काली नदी) के उस पार पहुचा दो फिर देखा जायेगा। काली नदी पार करते ही श्रवण कुमार की सद्बुद्धि लौट आई और वह अपने माता–पिता के चरणो मे लेटकर क्षमा मागने लगा। माता–पिता ने कहा कि पुत्र इसमे तुम्हारा कोई दोष नही है यह मई दन्त का खेडा (महाराष्ट्र) मेरठ है। इस भूमि के प्रभाव से ही ऐसा हुआ है।

धनुर्धारी एकलव्य

दनकौर (जनपद मेरठ) गाव मे गुरू द्रोणाचार्य का मदिर है। कहा जाता है कि इसी स्थान पर एकलव्य ने एकान्त साधना से विलक्षण धनुर्धारी बनने मे सफलता प्राप्त की थी और गुरू द्रोणाचार्य को अगूठा काटकर दान दिया था।

सुलताना डाकू

सुलताना डाकू का नाम बिजनौर जनपद मे बडे आश्चर्य से सुना जाता है। सुलताना के अनेक किस्से कहानिया प्रचलित हैं। सुलताना बिजनौर निवासी था। उसने अग्रेजी शासन काल मे जमीदारो के जुल्म के विरुद्ध बीडा उठाया था। सुलताना अमीरो से धन दौलत छीनकर निर्धनो मे बाटता था। यहा तक कि निर्धन वर्ग की बेटियो के विवाह के लिए भी धन देकर सहायता करता था। वह दिलेर भी बहुत था और घुडसवारी मे बहुत चतुर था। घोडे पर ही डकैती डालता था। नजीबाबाद स्थित नवाब नजीबुद्दौला के किले को सुलताना ने अपनी शरणस्थली बनाया था। बाद मे यह किला सुलताना डाकू के नाम से प्रसिद्ध हुआ। आचार्य बालभट गालवीय के शब्दो मे –

मिटा दूँगा मै पलभर मे तुम्हारी सारी हस्ती को
करुगा दूर पलभर मे तुम्हारी तुमसे मस्ती को।
मैं बनकर आज एक जल्लाद सब अरमान निकाल लूँगा
बनूगा गगन की बिजली और तुमको फूँक डालूगा।

X X X

अजाम का ख्याल न खौफे दरग है
एक जोश है बगा काए का अरमाने जग है।
कब्जे मे तेग तेग मे दमखम है जोर है
दुश्मन मेरी निगाह मे मानिन्द गौर है।

फलावदा के कुत्बशाह

फलावदा को फल्गु नामक तौमर ने बसाया था। मुसलमानो के आगमन तक उसके वशजो ने इस पर शासन किया। जनश्रुति के अनुसार मजदेरगवासी मीर सुर्ख लुटेरो के साथ आया और उसने चालबाजी से किले को हथिया लिया। उसने एक ब्राह्मण को घूस देकर राजपूतो के रस्म रिवाज की जानकारी ले ली। राजपूत कार्तिक पूर्णिमा को गगा के किनारे बटनौर गाव मे नहाने जाया करते थे। मीर सुर्ख ने अपने सिपाही पालकियो मे छिपा दिये और तोमरो को मारकर किला कब्जे मे ले लिया तभी से यह मीरो के कब्जे मे है।

फलावदा मे कुत्बशाह की दरगाह है। यहा प्रत्येक वर्ष उर्स लगता है। कुत्बशाह आमिल दौलत खा का पुत्र था। जिसे दिल्ली शासन द्वारा तैनात किया गया था। इसका जन्म रमजान के महीने मे हुआ था और उसने दूध पीने से मना कर दिया था। तभी से इसे सॉई मान लिया गया। बडा होकर यह फकीर हो गया और उसने अनेक चमत्कार दिखाये। एक बार पडोसी नगला कटारा के मीरो ने कुत्ब को प्रीतिभोज पर आमत्रित किया और बिल्ली भूनकर थाली मे परोस दी। शाह ने उनकी हरकत पहचान ली और बिल्ली को जीवित कर ग्रामीणो को श्राप दे दिया। यहा महामारी फैल गई और गाव बरबाद हो गया। 1836 मे लगभग दो सौ वर्ष पश्चात् अग्रेजो ने लालच देकर यहा जाटो को बसाया।

शाहपीर का मकबरा

मेरठ मे हापुड मार्ग पर गुलमर्ग सिनेमा के निकट शाहपीर का मकबरा है। किवदन्ती के अनुसार यह किसी हिन्दू मन्दिर (सम्भवत सूर्य मन्दिर जिसके चिन्ह आज भी विद्यमान हैं) का परिवर्तित रूप है। आम लोगो मे कथा मशहूर है कि इसे एक रात मे फरिश्तो ने बनाया था। प्रात काल मे किसी बुढिया की चक्की पीसने की आवाज से कि सुबह हो गई वे इसे अधबना ही छोडकर भाग गये। इसकी छत नही है। फिर भी इसमे बारिश की एक बूद भी नही गिरती। यह भी कहा जाता है कि यह 1628 ई० मे नूरजहा बेगम ने पीर मुरशीद की स्मृति मे निर्माण कराया था। इनका नाम शाह अल्लाह बख्श (शाहपीर) था। राजा अकबर इनसे अत्यधिक प्रभावित था और ये जहागीर–नूरजहा के गुरू थे। ये सत्तारिया फिरके से ताल्लुक रखने वाले फकीर थे और इश्क इलाही मे डूबे रहते थे। यह भवन लाल पत्थर द्वारा सुन्दरता से बना हुआ है। यह भी जनश्रुति है कि यहा जहाआरा बेगम के गुरू की कब्र है। जिसके निर्माण हेतु कटे–कटाये पत्थर आगरा से आये थे और पत्थर कम पड जाने के कारण छत नही पड सकी।

स्वागकार लोककवि श्री सेढ़ू सिह

स्वर्गीय सेढ़ू सिह का जन्म ग्राम मिसरका (निकट माछरा) तहसील मवाना जिला मेरठ के एक त्यागी ब्राह्मण परिवार मे हुआ था। किसी दैवी आपत्ति या अन्य किसी कारणवश उनकी माता रामकौर उन्हे लेकर हापुड उनके मामा के यहा चली आई। सेढ़ू सिह के दूसरे भाई का नाम सीताराम था।

हापुड आकर सेढ़ू सिह हापुड के निकटवर्ती खेतो मे अपने तथा दूसरो के पशु चराने का काम करने लगे। दैवयोग से एक दिन एक महात्मा से उनकी भेट हो गयी। किवदन्ती के अनुसार महात्मा से सेढ़ू सिह से कहा कि– मुझे दूध की आवश्यकता है दूध पिला दे। सेढ़ू सिह ने कहा कि सब गऊए बिना दूध की है। महात्मा ने अपना कमण्डल देकर कहा कि इस गऊ के नीचे बैठकर दूध निकाल यह दूध देगी। यह गऊ अभी ओसर ही थी। खैर श्रद्धालु सेढ़ू सिह ने महात्मा की आज्ञा का पालन किया और वह उस ओसर के नीचे बैठा तो उसने दूध दिया और कमण्डल दूध से भर गया। महात्मा ने उसे आशीर्वाद दिया कि बच्चा 'तू इस लोक मे अमर रहेगा और सरस्वती माता तेरे कण्ठ मे विराजमान हो जावेगी। उन्ही महात्मा के आशीर्वाद से सेढ़ू सिह ने जिन स्वागो की रचना की वह अलौकिक है। मेरठ जनपद क्या दूर–दूर उनके शिष्यो की परम्परा चली आ रही है।

लोकगाथा

लोकगाथा का तात्पर्य उन कथाओ से है जिनका वर्णन गान विधा द्वारा किया जाता है। पौराणिक धार्मिक एव ऐतिहासिक आदि अनेक प्रकार की गाथाए जन सामान्य मे प्रचलित हैं। श्रोता इन गाथाओ को बडे आनन्द और तन्मयता से भाव–विभोर होकर सुनते हैं। प्राय ये गाथाए रात्रि मे होती है। इस समय सभी अपने काम धन्धे से निवृत्त होकर लोकगाथाए सुनकर मनोरजन प्राप्त करते हैं।

श्री सत्यनारायण की कथा

यह धार्मिक लोकगाथा है। घर–घर मे सत्यनारायण की कथा का पाठ लोग श्रद्धापूर्वक सुनते हैं। इस कथा मे परिवार के अतिरिक्त मित्र रिश्तेदार एव पडोसियो को आमन्त्रित करते हैं। सत्य नारायण की कथा के अन्तर्गत अन्य कई उपकथाए भी हैं। कथा के अन्त मे आरती होती है। लोक मान्यता है कि आरती के बाद ही 'प्रसाद ग्रहण कर श्रोताओ को उठना चाहिए। कथा के बीच मे उठना वर्जित है।

नरसी का भात

दक्षिण के झूनागढ मे मगूमल साहूकार थे। मगूमल के सात पुत्र थे। सबसे छोटे सातवे बेटे का नाम नरसी था। एक बार झूनागढ मे सतो का भडारा हुआ। उसी समय से

शिव पार्वती विवाह

कौरवी जनपदो मे शिव पार्वती विवाह की गाथा बडी श्रद्धापूर्वक गाई जाती है। यह पौराणिक गाथा है। भगवान शिव के बाराती नाग किन्नर नान्दी भभूत लपेटे सन्यासी आदि का मनोरम चित्रण किया जाता है।

सज–सज वाहन अगणित आये और सगुन हुए मगलकारी।
दूलहा बना शिव शकर को देवो की वह सुन्दर नारी।
माथे पै मुकुट जटाओ का नागो का मोहर सजाया है।
सर्पो के कुण्डल के ककण बाघम्बर अग लिपटाया है।
अमरनाथ ने अमर कथा जब कही सुने थी पारवती।
उत्तराखण्ड मे लगा आसन बैठे हैं कैलाश पती।।
अविनाशी कैलाशी काशी उत्तराखण्ड मे बसाई।
बैठ गुफा मे गौरि को अमर कथा जब सुनाई।

आल्हा

आल्हा–ऊदल की वीर गाथा भी यहा प्राय लोग सुनते है। एक व्यक्ति उच्च स्वर मे बिना किसी वाद्य के अथवा ढपली के साथ आल्हा सुनाता है और उसके चारो ओर एकत्रित जनसमुदाय बडे ध्यान से आल्हा सुनता है। आल्हा की एक विशेष गीतात्मक वाली स्वतत्र तर्ज होती है। आल्हा खण्ड मे मूलरूप के विषय मे विद्वानो का मत है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इस सम्बन्ध मे दो निर्णय लिये है– (अ) यदि यह ग्रथ साहित्यिक प्रबन्ध पद्धति पर लिखा गया होता तो कही न कही राष्ट्रीय पुस्तकालयो मे इसकी कोई प्रति रक्षित मिलती। पर यह गाने के लिए ही रचा गया था। इससे पडित और विद्वानो के हाथ इसकी रक्षा की ओर नही बढे जनता के ही बीच इसकी गूज बनी रही। पर यह गूज मात्र है मूल शब्द नही। (ब) इन गीतो के समुच्य को ही सर्व साधारण आल्हा खण्ड कहते हैं। जिससे अनुमान होता है कि आल्हा सम्बन्धी ये वीर गीत जागनिक के रचे उस बडे काव्य के एक खण्ड के अन्तर्गत थे। जो चदेलो की वीरता के वर्णन मे लिखा गया होगा।

बुदेलखण्ड की कथा है। यह एक लोक काव्य है जो लोकगाथा के रूप मे प्रसिद्ध हुआ है। मूल आल्हा खण्ड की भाषा बुदेली थी परन्तु यह कौरवी जनपदो मे जन सामान्य द्वारा बडी रूचि से सुना जाता है। आल्हा खण्ड के प्रारम्भिक छद मे उल्लेख है –

श्री गनेस गुरूपद सुमरि इस्ट देव मन लाय।
आल्हा खण्ड बरनन करत आल्हा छद बनाय।।

कौरवी क्षेत्र के मठरूमल अत्तार के शब्दो मे ऊदल और धीर सिह की लडाई का वर्णन –

जो जो वार किये दुश्मन ने वो ऊदल ने दिये बचाये।

फिर ललकारा है ऊदल ने ज ्रा दिल्ली के सरकार।।

पुर्वा जदीद दरी वाली गली शाहपीर गेट मेरठ निवासी रहमु को आल्हा के समस्त 52 खण्ड कण्ठस्थ थे। यद्यपि वे अशिक्षित थे लेकिन आल्हा की पुस्तक सामने रख कर पृष्ठ पलटने का अभिनय करते रहते थे और गाते रहते थे। रात्रि मे सैकडो की सख्या मे लोग आत्मविभोर होकर उनसे आल्हा सुनते थे। उनका स्वर्गवास हो गया है।

रामकथा – मूलत बाल्मीकि कृत रामकथा रामायण को लवकुश ने ही गान किया था। कौरवी क्षेत्र मे रामकथा घर–घर मे गायन होती है।

लोकोक्ति

कह + आवत = कहावत अर्थात जो बाते कहने मे परम्परानुसार जनमानस मे चली आ रही है। कहावत या लोकोक्ति एक प्रकार से दीर्घकालीन कटु सत्य है जो अनुभव के आधार पर शब्दो मे साकार हो जाता है। इस प्रकार की उक्तिया लोकोक्ति कहलाती है। समय के अन्तराल मे इसमे कर्ता अन्तर्ध्यान हो जाता है और मूल रूप से कृति शास्वत हो जाती है।

प्राय मुहावरा और कहावत मे लोग भ्रमित हो जाते हैं। जबकि इन दोनो मे भारी अतर है। मुहावरा एक ऐसा वाक्य खण्ड होता है जो अपने आप मे सम्पूर्ण भाव का परिचायक नही होता। यह अपूर्ण होता है। इसकी पूर्णता के लिए हमे सदर्भ का सहारा लेना पडता है। जबकि कहावत या लोकोक्ति अपने आप मे पूर्ण शास्वत एव सार्वभौमिक होती है। यह सदैव अकाटय रहती है। एक प्रकार से मुहावरा परतत्र होता है तो दूसरी ओर लोकोक्ति पूर्ण रूप से स्वतत्र होती है। मुहावरा अलग–अलग वाक्यो के अनुसार परिवर्तित हो जाता है। जबकि लोकोक्ति सदैव यथावत रहती है। इसमे तोड–मरोड नही की जा सकती है।

लोकोक्ति के सदर्भ मे कुछ विद्वानो के विचार प्रस्तुत हैं –

बेकन– भाषा के वे तीव्र प्रयोग जो व्यापार और व्यवहार की गुत्थियो को काटकर तह तक पहुच जाते हैं।

एग्रीकोला– 'सक्षिप्त और शुद्ध होने के कारण प्राचीन दर्शन के विध्वस और विनाश से बचे हुए अवशेष हैं।

स्वागकार लोककवि श्री सेढू सिह

स्वर्गीय सेढू सिह का जन्म ग्राम मिसरका (निकट माछरा) तहसील मवाना जिला मेरठ के एक त्यागी ब्राह्मण परिवार मे हुआ था। किसी दैवी आपत्ति या अन्य किसी कारणवश उनकी माता रामकौर उन्हे लेकर हापुड उनके मामा के यहा चली आई। सेढू सिह के दूसरे भाई का नाम सीताराम था।

हापुड आकर सेढू सिह हापुड के निकटवर्ती खेतो मे अपने तथा दूसरो के पशु चराने का काम करने लगे। दैवयोग से एक दिन एक महात्मा से उनकी भेट हो गयी। किवदन्ती के अनुसार महात्मा से सेढू सिह से कहा कि– मुझे दूध की आवश्यकता है दूध पिला दे। सेढू सिह ने कहा कि सब गऊए बिना दूध की हैं। महात्मा ने अपना कमण्डल देकर कहा कि इस गऊ के नीचे बैठकर दूध निकाल यह दूध देगी। यह गऊ अभी ओसर ही थी। खैर श्रद्धालु सेढू सिह ने महात्मा की आज्ञा का पालन किया और वह उस ओसर के नीचे बैठा तो उसने दूध दिया और कमण्डल दूध से भर गया। महात्मा ने उसे आशीर्वाद दिया कि बच्चा 'तू इस लोक मे अमर रहेगा और सरस्वती माता तेरे कण्ठ मे विराजमान हो जावेगी। उन्ही महात्मा के आशीर्वाद से सेढू सिह ने जिन स्वागो की रचना की वह अलौकिक है। मेरठ जनपद क्या दूर–दूर उनके शिष्यो की परम्परा चली आ रही है।

लोकगाथा

लोकगाथा का तात्पर्य उन कथाओ से है जिनका वर्णन गान विधा द्वारा किया जाता है। पौराणिक धार्मिक एव ऐतिहासिक आदि अनेक प्रकार की गाथाए जन सामान्य मे प्रचलित हैं। श्रोता इन गाथाओ को बडे आनन्द और तन्मयता से भाव–विभोर होकर सुनते हैं। प्राय ये गाथाए रात्रि मे होती हैं। इस समय सभी अपने काम धन्धे से निवृत्त होकर लोकगाथाए सुनकर मनोरजन प्राप्त करते हैं।

श्री सत्यनारायण की कथा

यह धार्मिक लोकगाथा है। घर–घर मे सत्यनारायण की कथा का पाठ लोग श्रद्धापूर्वक सुनते हैं। इस कथा मे परिवार के अतिरिक्त मित्र रिश्तेदार एव पडोसियो को आमन्त्रित करते है। सत्य नारायण की कथा के अन्तर्गत अन्य कई उपकथाए भी हैं। कथा के अन्त मे आरती होती है। लोक मान्यता है कि आरती के बाद ही प्रसाद' ग्रहण कर श्रोताओ को उठना चाहिए। कथा के बीच मे उठना वर्जित है।

नरसी का भात

दक्षिण के झूनागढ मे मगूमल साहूकार थे। मगूमल के सात पुत्र थे। सबसे छोटे सातवे बेटे का नाम नरसी था। एक बार झूनागढ मे सतो का भडारा हुआ। उसी समय से

सी का मन भगवान की भक्ति मे मगन हो गया। नरसी हर समय भगवान कृष्ण की क्ति मे लीन रहने लगे। भाइयो ने नरसी को अलग कर दिया। उनकी बेटी हरनन्दी वाह योग्य हो गई थी उन्होने नाई भेजकर सरसा ग्राम के मनसा सेठ के पुत्र सूरजमल विवाह कर दिया। इस विवाह के समय नरसी निर्धन हो गया था।

समय के साथ हरनन्दी ने कन्या को जन्म दिया और कन्या बडी हो गई विवाह का समय आ गया। ससुरालियो ने हरनन्दी को विवश का भात नौतने के लिए नरसी के पास भेजना चाहा। पर वह बाप की निर्धनता को देखते हुए नही गई। अत मे उन्होने सेवक द्वारा न्यौता भिजवाया। प रामशरण शर्मा झगपुरहाल हापुड तथा बैचेन हरबश लाल उपदेशक गफ्फार गढी लिखते हैं –

तोड– *आनन्दी रामो लडकी के पीले कराना हात सुना।*
कुछ थोडी सी वस्तु समदी लिखु साथ लेते आना।
चोला बाली छल्ला छल्ली नगरीना आरसी भी लाना।
कौडी जूडा शीश फूल नग बिन्दी ऊपर रखवाना।
काटे पखी कर्णफूल पखरे वाले भी घडवाना।

इस प्रकार ऐसी विकट स्थिति मे नरसी श्रीकृष्ण को याद करते हैं। फूल सिह ने नरसी के अन्तर्द्वन्द को इस तरह व्यक्त किया है –

नरसी मन ध्यान धरे हैं श्रीपत् कुज बिहारी का
धक–धक–धक्का लगे बदन मे
भारी सोच नरसी के मन मे
धीरे–धीरे ना अपने मन मे ढबका भाई चारी का।
सावरे घनश्याम तुम तो प्रेम के अवतार हो।
थाम लो पतवार गिरधर जिससे बेडा पार हो।।

अत मे श्रीकृष्ण भात का सामान लेकर उपस्थित होकर नरसी से बोले–मनमोहन लाल जी सीस झुकाऊ मैं–

सामान भात का देखो जल्दी हो कभी तो फिर कै जॉऊ मैं।
दिया सीस फूल बिन्दी बैना जेवर की पिटारी है।
नथ गूफ दई नल क सग मे सोरन की पक्की सारी है।

इस प्रकार इस गाथा को समस्त कुरू प्रदेश मे लोग बडे श्रद्धा भाव से सुनते है।

शिव पार्वती विवाह

कौरवी जनपदो मे शिव पार्वती विवाह की गाथा बडी श्रद्धापूर्वक गाई जाती है। यह पौराणिक गाथा है। भगवान शिव के बाराती नाग किन्नर नान्दी भभूत लपेटे सन्यासी आदि का मनोरम चित्रण किया जाता है।

सज–सज वाहन अगणित आये और सगुन हुए मगलकारी।
दूलहा बना शिव शकर को देवो की वह सुन्दर नारी।
माथे पै मुकुट जटाओ का नागो का मोहर सजाया है।
सर्पो के कुण्डल के ककण बाघम्बर अग लिपटाया है।
अमरनाथ ने अमर कथा जब कही सुने थी पारवती।
उत्तराखण्ड मे लगा आसन बैठे है कैलाश पती।।
अविनाशी कैलाशी काशी उत्तराखण्ड मे बसाई।
बैठ गुफा मे गौरि को अमर कथा जब सुनाई।

आल्हा

आल्हा–ऊदल की वीर गाथा भी यहा प्राय लोग सुनते हैं। एक व्यक्ति उच्च स्वर मे बिना किसी वाद्य के अथवा ढपली के साथ आल्हा सुनाता है और उसके चारो ओर एकत्रित जनसमुदाय बडे ध्यान से आल्हा सुनता है। आल्हा की एक विशेष गीतात्मक वाली स्वतत्र तर्ज होती है। आल्हा खण्ड मे मूलरूप के विषय मे विद्वानो का मत है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इस सम्बन्ध मे दो निर्णय लिये है– (अ) यदि यह ग्रथ साहित्यिक प्रबन्ध पद्धति पर लिखा गया होता तो कही न कही राष्ट्रीय पुस्तकालयो मे इसकी कोई प्रति रक्षित मिलती। पर यह गाने के लिए ही रचा गया था। इससे पडित और विद्वानो के हाथ इसकी रक्षा की ओर नही बढे जनता के ही बीच इसकी गूज बनी रही। पर यह गूज मात्र है मूल शब्द नही। (ब) इन गीतो के समुच्च्य को ही सर्व साधारण आल्हा खण्ड कहते हैं। जिससे अनुमान होता है कि आल्हा सम्बन्धी ये वीर गीत जागनिक के रचे उस बडे काव्य के एक खण्ड के अन्तर्गत थे। जो चदेलो की वीरता के वर्णन मे लिखा गया होगा।

बुदेलखण्ड की कथा है। यह एक लोक काव्य है जो लोकगाथा के रूप मे प्रसिद्ध हुआ है। मूल आल्हा खण्ड की भाषा बुदेली थी परन्तु यह कौरवी जनपदो मे जन सामान्य द्वारा बडी रूचि से सुना जाता है। आल्हा खण्ड के प्रारम्भिक छद मे उल्लेख है –

श्री गनेस गुरूपद सुमरि इस्ट देव मन लाय।
आल्हा खण्ड बरनन करत आल्हा छद बनाय।।

कौरवी क्षेत्र के मठरूमल अत्तार के शब्दो मे ऊदल और धीर सिह की लड़ाई का वर्णन –

जो जो वार किये दुश्मन ने वो ऊदल ने दिये बचाये।
फिर ललकारा है ऊदल ने ज द्रा दिल्ली के सरकार।।

पुर्वा जदीद दरी वाली गली शाहपीर गेट मेरठ निवासी रहमु को आल्हा के समस्त 52 खण्ड कण्ठस्थ थे। यद्यपि वे अशिक्षित थे लेकिन आल्हा की पुस्तक सामने रख कर पृष्ठ पलटने का अभिनय करते रहते थे और गाते रहते थे। रात्रि मे सैकडो की सख्या मे लोग आत्मविभोर होकर उनसे आल्हा सुनते थे। उनका स्वर्गवास हो गया है।

रामकथा – मूलत बाल्मीकि कृत रामकथा रामायण को लवकुश ने ही गान किया था। कौरवी क्षेत्र मे रामकथा घर–घर मे गायन होती है।

लोकोक्ति

कह + आवत = कहावत अर्थात जो बाते कहने मे परम्परानुसार जनमानस मे चली आ रही है। कहावत या लोकोक्ति एक प्रकार से दीर्घकालीन कटु सत्य है जो अनुभव के आधार पर शब्दो मे साकार हो जाता है। इस प्रकार की उक्तिया लोकोक्ति कहलाती है। समय के अन्तराल मे इसमे कर्ता अन्तर्ध्यान हो जाता है और मूल रूप से कृति शास्वत हो जाती है।

प्राय मुहावरा और कहावत मे लोग भ्रमित हो जाते हैं। जबकि इन दोनो मे भारी अतर है। मुहावरा एक ऐसा वाक्य खण्ड होता है जो अपने आप मे सम्पूर्ण भाव का परिचायक नही होता। यह अपूर्ण होता है। इसकी पूर्णता के लिए हमे सदर्भ का सहारा लेना पडता है। जबकि कहावत या लोकोक्ति अपने आप मे पूर्ण शास्वत एव सार्वभौमिक होती है। यह सदैव अकाटय रहती है। एक प्रकार से मुहावरा परतत्र होता है तो दूसरी ओर लोकोक्ति पूर्ण रूप से स्वतत्र होती है। मुहावरा अलग–अलग वाक्यो के अनुसार परिवर्तित हो जाता है। जबकि लोकोक्ति सदैव यथावत रहती है। इसमे तोड–मरोड नही की जा सकती है।

लोकोक्ति के सदर्भ मे कुछ विद्वानो के विचार प्रस्तुत हैं –

बेकन– भाषा के वे तीव्र प्रयोग जो व्यापार और व्यवहार की गुत्थियो को काटकर तह तक पहुच जाते हैं।

एग्रीकोला– 'सक्षिप्त और शुद्ध होने के कारण प्राचीन दर्शन के विध्वस और विनाश से बचे हुए अवशेष है।

- थाली खीवे घडे मे ढूढता फिरे।
- सात पाच की लाकडी एक जनै का बोझ।
- पूस मे दिन पुस्स माघ मे दिन बाघ।
- मौलवी साहब की दाडी वाह वाह मे गई।
- गाय ना बच्छी नीद आवे अच्छी।
- घर यार के पूत भतार के।
- जाय लाख रहे साख।
- बेस्वा की कमाई साडी मे या गाडी मे।
- अटका बनिया देय उधार।
- बूढे का पूत तरुण की नारी बालक की मा तीन दुख भारी।
- गया मरद जो खाय खटाई गयी नार जो खाय मिठाई।
- जबान झूठ तो करार क्या पिया परदेस तो सिगार क्या।
- जोगी किसके यार बेस्वा किसकी नार।
- एक नार जब दो से फसी जैसे सत्तर वैसे अस्सी।
- जो काम ना करै भैया सो काम करै रुपैया।
- अजब तेरी कुदरत अजब तेरा खेल छछूँदर के सिर मे चमेली का तेल।
- तेली के बैल को घर मे ही पचास कोस।
- तू भी रानी मैं भी रानी कौन भरेगी घर का पाणी।
- ओछी पूजी खसम को खावै।
- घर द्वार तेरा कोठी कुठले कै हाथ न लगाइयो।
- घी बणावै बैंगणा नाम बहू का होय।
- तुरुक तोता और खरगोश ये तीनो ना माने पालपोस।
- डायन भी एक घर छोड दे है।
- देखा देखी साधे जोग छीजे काया बाढे रोग।
- देह डोरा पेट बोरा।
- सदा निरोगी चगा रहे जो प्रात उठ धाय।
- न आगे नाथ न पीखे पगहा।
- नया नौ दिन पुराना सौ दिन।
- थूक चाटने से कही प्यास बुझे हैं।

हर्बट– बुद्धिमानो के कटाक्ष।

डिजरेली– पाण्डित्य के चिन्ह।

सरवेण्टस– वे छोटे वाक्य जिनमे लम्बे अनुभव का सार हो।

डॉ० जानसन– वे सक्षिप्त वाक्य जिनको लोग प्राय दोहराया करते है।

हॉवेल– जनता की आवाज या जनवाणी।

टुपर– केन्द्रित विचारो की तीव्र अभिव्यक्ति।

अर्ल रसल– एक की उक्ति अनेक का ज्ञान।

जॉन बीम्स– कहावतो मे किसी युग अथवा राष्ट्र का प्रचलित और व्यावहारिक ज्ञान रहता है।

लोकोक्ति

- घर से बैर गैर से नाता। ऐसी मति मत देय विधाता।
- खेती जोरू जोर के। जोर घटे तो और के।
- नाई दाई वैद्य कसाई इनका सूतक कभी न जाई।
- खासी हिचकी जम्हाई तीनो रोग के भाई।
- छीक पाद डकार। तीनो की रोग से तकरार।
- खडे खूटी बैठे कोस खाते पीते तीन कोस।
- अपनी तो कानी भली करै झडाक्यो बात।
- सुघड भलाई सुसरा ले बलद खोल बहू का दे।
- जिसकी बेटी घर के अन्दर उसका भाग सिकन्दर।
- रेशम की अगिया पै मूज की बखिया।
- जलेबियो की रखवाली कुतिया।
- ऊचे पै खेती करे तो पैदा होवै भाड।
- तीन बाम्हन जहा बजर पडे वहा।
- तिलक कण्ठी मीठी बानी दगाबाज की तीन निशानी।
- टूटे दॉत बुढापा आवे टूटी खाट दरिदर लावे।
- धी मरी जमैया चोर।
- नग बडे परमेसर ते।
- बासी बचे न कुत्ता खाय।

– पाप छिपाये न छिपै ज्यौ लहसुन की गध।
– पेट मे आत न मुह मे दॉत।
– नरो मे नौआ पछी मे कौआ।
– मेरे मिया के सत्तर यार धुणे जुलाहे और मयार।
– घटे के बहनोई नही बढे के सब साले।
– बेटी आई गया सिगार सौकिण आई बढा सिगार।
– बेसवा घटाके जोगी बढा के उम्र बतावे।
– जिये बाप से दगमदगा मरे बाप पहुचाए गगा।
– खाय चना रहे बना।
– छोटा नौकर टटुआ घोड खाये ज्यादा कारज थोड।
– चोरी का माल मोरी मै जा है।

लोक मान्यता

– मृत्यु के बाद अस्थिया प्रयाग मे त्रिवेणी मे अथवा काशी या हरिद्वार मे गगा मे प्रवाहित करने की मान्यता।
– माता पिता या कन्या पक्ष वाले कन्या की ससुराल मे भोजन अथवा पानी ग्रहण नही करने की मान्यता है।
– श्राद्ध या कनागतो मे ब्राह्मणो को भोजन कराने की मान्यता है।
– घर की बहु जब सम्मानित अथवा रिश्तेदार महिला के आगमन पर पैर छूती है तब उसी क्रम मे अन्य उपस्थित सम्मानित महिलाओ के चरण स्पर्श करने की भी मान्यता है।
– शाम ढले मर्द मानस घर भले–ऐसी मान्यता है।
– घर की दीवार पर कौआ द्वारा काव–काव करना किसी मेहमान के आमगन की मान्यता है।
– शाम का पाहुना अगले दिन ही जायेगा ऐसी मान्यता है।
– शाम के मेह (वर्षा) सारी रात बरसे हैं।
– अफसर के अगाडी व घोडे के पिछाडी नही जाना चाहिए।
– हिन्दुओ मे पुनर्जन्म विश्वास की मान्यता है।

- शुभ कार्य के आरम्भ मे गणेश पूजन कर नारियल फोडने की मान्यता है।
- मरीज की दवा बिखरना या दवा की शीशी गिरकर टूटना मरीज स्वस्थ होने का सूचक है।
- प्रात मुर्गे द्वारा बाग देने का अर्थ दिन निकलने की मान्यता है।
- भगवान का प्रसाद ग्रहणकर माथे लगाना तथा चरणामृत पीकर हाथो को सर के बालो मे लगाना मान्यता है।
- कन्या अथवा दामाद को दान–दक्षिणा देने की मान्यता है।
- बच्चे के जन्म के अवसर पर थाली अथवा तवा बजाने की मान्यता है इससे बच्चे के कानो का परीक्षण हो जाता है कि उसे सुनाई देता है या नही दूसरे आसपास के लोगो को शिशु जन्म की सूचना मिल जाती है।
- लेटे हुए अथवा सोते हुए व्यक्ति का चरण स्पर्श नही करना चाहिए।
- कम आयु वाले व्यक्ति अपने से बडी उम्र वाले के सराहने नहीं बैठते।
- जिस परिवार मे बच्चे जीवित नही रहते है उस परिवार मे बच्चे को 'गगा चढाया' जाता है अथवा छाज मे बैठाकर सात बार खींचते हैं।
- बच्चो को नजर का टीका लगाने की मान्यता है।
- मागलिक अवसरो पर गऊ दान की मान्यता है।
- मार्ग मे मन्दिर मिलने पर नत–मस्तक होने की मान्यता है।
- स्त्रियो द्वारा पुरुषो के बाद भोजन करने की मान्यता है।
- ससुराल मे बहू द्वारा घूघट करने की मान्यता है।
- विशेष कार्य हेतु दही पेडा खाकर जाना शुभ सूचक मान्यता है।
- कमर के दर्द के लिए छगे से ठोकर लगवाने की मान्यता है।
- माता या पिता के स्वर्गवास पर सस्कार करने वाले पुत्र द्वारा सिर और मूछो के बाल मुडवाना मान्यता है।
- शोक अथवा मृत्यु के अवसर पर मुसलमानो मे काले और हिन्दुओ मे श्वेत वस्त्र पहनकर जाने की मान्यता है।
- दूध बाहर से अन्दर से लाने अथवा ले जाने के समय दूध मे एक छोटे आकार का कोयला डालने की मान्यता है।

- पारिवारिक जन की मृत्यु के अवसर पर घर के द्वार पर उल्टी खाट खडी करने की मान्यता है।
- रात्रि मे कुत्तो द्वारा रोना अशुभ मान्यता है।
- एक गुरशल चिडिया का दिखना अशुभ और दो दिखना शुभ मान्यता है।
- कपडे जमीन पर डालना अशुभ मान्यता है।
- बृहस्पतिवार को पीले वस्त्र पहनना शुभ सूचक मान्यता है।
- शनिवार को पडितो को सरसो का तेल और सतनजा दान करने की मान्यता है।
- मकान का दरवाजा दक्षिण दिशा की तरफ नही होना चाहिए।
- सोते समय व्यक्ति के पैर दक्षिण की तरफ नही होने चाहिए ऐसी मान्यता है।

लोक वर्जना

- मागलिक अवसरो पर काले वस्त्र धारण करना वर्जित है।
- मगलवार बृहस्पतिवार एव शनिवार को स्त्रियो द्वारा केश धोना वर्जित है।
- बृहस्पतिवार को कपडे धोना।
- कनागतो मे नये वस्त्र खरीदना व पहनना।
- मगलवार को अथवा कनागतो मे दाढी बनाना।
- सूर्यास्त के समय लेटना।
- सायकाल को घर मे झाडू लगाना।
- विधवा स्त्री की मागलिक अवसरो पर उपस्थिति।
- बच्चो के मागलिक अवसर पर बाझ स्त्री की उपस्थिति।
- श्मशान अथवा कब्रिस्तान मे इत्र आदि लगा कर जाना।
- गर्भवती स्त्री का सूर्य ग्रहण व चन्द्र ग्रहण देखना।
- चौखट पर अथवा नगी धरती पर बैठना।
- छीकते समय घर से बाहर निकलना।
- शनिवार के दिन लोहे की वस्तु खरीदना।

- मगलवार को यात्रा आरम्भ करना।
- नागफनी गऊ मुखि जमीन पर गृह निर्माण।
- बुधवार को नवविवाहिता को ससुराल या मायका भेजना।
- सीताफल काटना स्त्रियो को वर्जित है केवल पुरुष काट सकते हैं।
- प्रतिपदा या पडवा के दिन यात्रा करना।
- चीटी मारना वर्जित है।
- भोजन करते समय वार्ता करना वर्जित है।
- रविवार को तुलसी जी के पौधे मे जल देना वर्जित है।
- किसी व्यक्ति को लाघ कर जाना।
- अर्थी के सामने दामाद का आना।
- बैठे हुए पैर हिलाना वर्जित है।
- शनिवार को तेल खरीदना।
- जिस स्थान पर खाना बनाया जाये उस स्थान पर खाना–खाना वर्जित है।
- शुभ कार्य के लिए तीन ब्राह्मणो का एक साथ जाना वर्जित है।
- 13 का अक अशुभ होने के कारण वर्जित है।
- मन्दिर मे देवी–देवता के सामने कमर करना वर्जित है।
- महिलाओ द्वारा रात्रि मे केश सवारना वर्जित है।
- बिना झाडू बुहारी के बासी घर मे खाना वर्जित है।
- घर पर उल्लू का बैठना वर्जित है।



सदर्भ ग्रन्थ सूची

1	मयराष्ट्र मानस	कृष्ण चन्द्र शर्मा
2	शतपथ ब्राह्मण	–
3	वायु पुराण	–
4	मत्स्य पुराण	–
5	भागवत पुराण	–
6	बाल्मीकि रामायण	–
7	महाभारत	–
8	जैन–धर्म–ग्रथ	–
9	इलियट–डाउसन का इतिहास	–
10	जीवनी समर्थ रामदास	–
11	मेरठ गजेटियर	नेविल एच आर
12	मेरठ गाजियाबाद मुजफ्फरनगर बुलन्दशहर बिजनौर सहारनपुर हरिद्वार के गजेटियर।	
13	एन्शियण्ट इण्डियन हिस्टोरिकल	ट्रेडीसन
14	प्राचीन भारतीय सस्कृति	बी एन लुणिया
15	जनपद कल्याणी	डा वासुदेव शरण अग्रवाल
16	फोक लोर आफ नार्दर्न इण्डिया	डब्ल्यू क्रुक
17	हिसा का वृहद इतिहास	राहुल सास्कृत्यायन
18	फोक लोर एण्ड डिस्ट्रब्युशन ऑफ दी रेसेज आफ इण्डिया	एन डब्ल्यु पी तथा एच एम इलियट
19	भारतीय चित्रकला	असित कुमार हल्दर
20	प्रागैतिहासिक भारतीय चित्रकला	जगदीश गुप्त
21	प्रतीक शास्त्र	परिपूर्णानन्द वर्मा
22	भारत मे समाज और सस्कृति	महाजन शर्मा महाजन
23	भारतीय जीवन और सस्कृति	शम्भु नाथ पाण्डेय
24	राजर्षि टण्डन जन्मशती ग्रन्थ	धर्मवीर प्रेमी रा प्र राकेश शिव कुमार गोयल
25	हिन्दुओ के व्रत और त्यौहार	सुदर्शन शास्त्री
26	कुरू–भारती	कृष्ण चन्द्र शर्मा
27	कुम्भ दर्शन 1995	जगदीश गुप्त
28	दैनिक जागरण अमर उजाला समाचार पत्र मे प्रकाशित लेख	शिव प्रसाद भारती राजपाल सिह बृजेश चौहान
29	रग भारती 1994	डा शरद नागर
30	रगमच पत्रिका 1991	दीपा निगम का लेख
31	छायानट	केशव चन्द्र वर्मा
32	हिन्दी साहित्य का इतिहास	रामचन्द्र शुक्ल
33	रग भारती 1979	डा अज्ञात
34	हमारे पर्व और त्यौहार	हरिदत्त सिह